नौर्वे की लोक कथाऐं

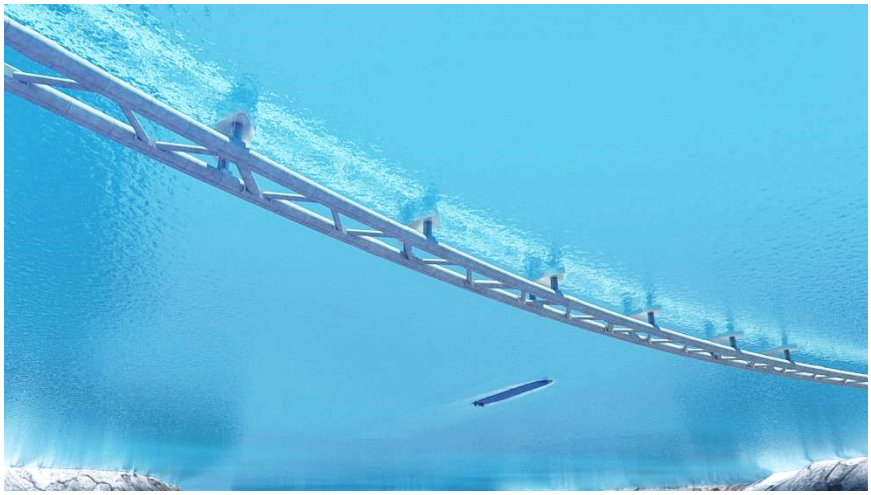

चयन और अनुवाद
सुषमा गुप्ता

2022

Cover Title : Norway Ki Lok Kathayen (Folktales of Norway)
Cover Page picture: Norway's Floating Tunnel, Norway
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: http://sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of Norse Countries

Norse, or Nordic, or Scandinavian countries include 5 countries –
Denmark, Finland, Iceland, Norway, and Sweden

विंडसर, कैनेडा
2022

Contents

देश विदेश की लोक कथाऐं 5

नौर्वे की लोक कथाऐं 7

1 केटी वुडिनक्लोक 9

2 भालू ने अपनी पूँछ कैसे खोयी 39

3 एक लड़का और उत्तरी हवा 45

4 काली कठफोड़वा 52

5 गरट्रूड की चिड़िया 59

6 बागीचे में बकरियॉ 62

7 तीन बिल्ली बकरे ग्रफ़ 68

8 बारह जंगली बतखें 76

9 दो सौतेली बहिनें 91

10 मास्टर चोर 112

11 समुद्र खारा क्यों 151

12 जंगली दुलहिन 163

13 भेड़ा और सूअर 176

देश विदेश की लोक कथाऐं

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **550** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

नौर्वे की लोक कथाऐं

संसार में सात महाद्वीप हैं – एशिया, अफ्रीका, उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका, अन्टार्कटिका, यूरोप और आस्ट्रेलिया – सबसे पहले सबसे बड़ा और सबसे बाद में सबसे छोटा। साइज़ में यूरोप आस्ट्रेलिया से पहले आता है। यूरोप की बहुत सारी लोक कथाऐं अंग्रेजी भाषा में भी मिल जाती हैं।

इस महाद्वीप का अपना लिखा साहित्य और इसके बारे में लिखा साहित्य और दूसरे महाद्वीपों की तुलना में काफी मिलता है और इसी वजह से हमने इस महाद्वीप की केवल कुछ लोक कथाऐं ही हिन्दी भाषा में प्रस्तुत करने का विचार किया है क्योंकि इनके बिना दुनियॉ का लोक कथा साहित्य अधूरा लगता है। इस महाद्वीप में कुल मिला कर पचास से ज़्यादा देश है पर इतने सारे देशों में से केवल कुछ ही देशों की ही लोक कथाऐं ज़्यादा मिलती हैं जैसे ब्रिटेन, जर्मनी, फ्रांस, इटली आदि। इसलिये इन देशों की लोक कथाऐं इन देशों के नाम से ही दी गयीं हैं।

इस महाद्वीप के सुदूर उत्तर में स्थित पॉच देशों को स्कैन्डेनैवियन या नौर्स या नौरडिक देशों[1] के नाम से पुकारा जाता है। इन पॉच देशों के नाम हैं – डेनमार्क, फ़िनलैंड, आइसलैंड, नौर्वे और स्वीडन। इन देशों की संस्कृति यूरोप के दूसरे देशों की संस्कृति से बिल्कुल अलग है।

इस पुस्तक में हम इन्हीं पॉच देशों में से एक देश नौर्वे की लोक कथाऐं दे रहे हैं। क्योंकि इन देशों की लोक कथाऐं भी काफी हैं इसलिये इन देशों की लोक कथाओं को हम इन देशों के नाम से हीं प्रकाशित कर रहे हैं। इन देशों की लोक कथाओं के दो संग्रह "डेनमार्क की लोक कथाऐं" और "स्वीडन की लोक कथाऐं" प्रकाशित हो चुके हैं। उनमें हमने केवल डेनमार्क और स्वीडन देशों की लोक कथाऐं प्रकाशित की थीं। नौर्स देशों की लोक कथाओं का यह तीसरा संग्रह अब प्रस्तुत है "नौर्वे की लोक कथाऐं"। इसमें फिनलैंड और नौर्वे देशों की लोक कथाऐं हैं। अन्त में इस संग्रह में कुछ लोक कथाऐं ऐसी दी गयी हैं जिनके देशों के नाम का पता नहीं हैं।

यहॉ के देशों की लोक कथाओं में "उत्तरी हवा" भी एक मुख्य चरित्र है। इन देशों में इसकी कई कथाऐं प्रचलित हैं।

आशा है यह लोक कथा संग्रह भी तुम लोगों को इनके पहले संग्रहों की तरह से पसन्द आयेगा और इस लोक कथा संग्रह का भी हिन्दी साहित्य जगत में भव्य स्वागत होगा।

---

[1] The Scandinavian or Nordic or Norse countries are a geographical and cultural region of five countries – Denmmark, Finland, Iceland, Norway and Sweden in the far Northern Europe and North Atlantic. Politically they do not form a separate entity.

संसार के सात महाद्वीप

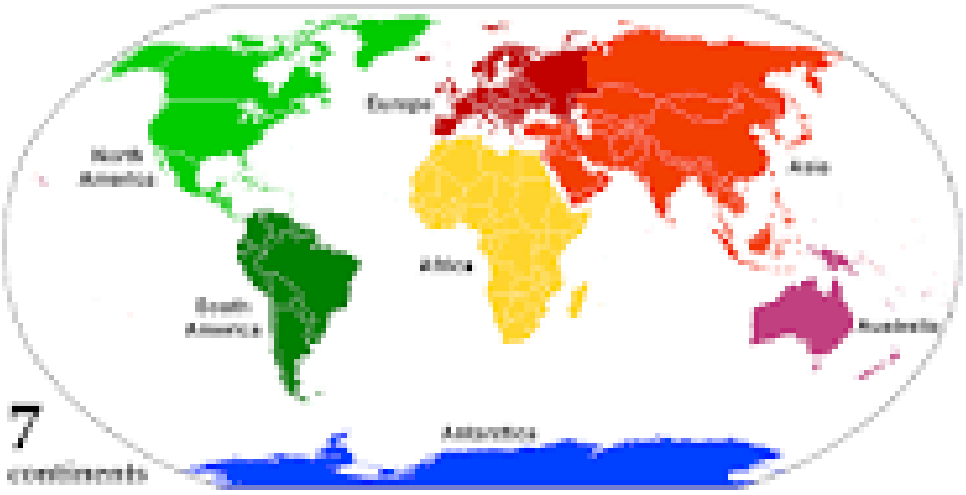

1 केटी वुडिनक्लोक[2]

यह लोक कथा नौर्स देशों के नौर्वे देश की लोक कथाओं से ली गयी है। यह सिन्डरैला की कहानी जैसी है।

एक बार नौर्वे देश में एक राजा था जिसकी रानी मर गयी थी। उसकी इस रानी से एक बेटी थी। उसकी यह बेटी इतनी चतुर और प्यारी थी कि उसके जैसा चतुर और प्यारा दुनियॉ में और कोई नहीं था।

राजा अपनी पत्नी को बहुत प्यार करता था। वह उसके मरने का काफी दिन तक गम मनाता रहा पर फिर अकेले रहते रहते थक गया और उसने दूसरी शादी कर ली।

उसकी यह नयी रानी एक विधवा थी और इसके भी एक बेटी थी पर इसकी यह बेटी उतनी ही बुरी और बदसूरत थी जितनी राजा की बेटी प्यारी, दयावान और चतुर थी।

सौतेली मॉ और उसकी बेटी दोनों राजा की बेटी से बहुत जलती थीं क्योंकि वह बहुत ही प्यारी थी। जब तक राजा घर में रहता था वे दोनों राजा की बेटी को कुछ भी नहीं कह सकती थीं क्योंकि राजा उसको बहुत प्यार करता था।

---

[2] Katie Woodencloak – a falktale from Norway, Europe. Taken from the Book : "Popular Tales from the Norse", by Peter Christen Asbjornsen and Jorgen Moe. Translated and edited by DL Ashliman.
This story can be read in English at http://www.pitt.edu/~dash/type0510a.html#perrault

कुछ समय बाद उस राजा को किसी दूसरे राजा के साथ लड़ाई के लिये जाना पड़ा तो राजकुमारी की सौतेली मॉ ने सोचा कि यह मौका अच्छा है अब वह उस लड़की के साथ जैसा चाहे वैसा बर्ताव कर सकती है।

सो उन दोनों मॉ बेटी ने उस लड़की को भूखा रखना और पीटना शुरू कर दिया। वे दोनों जहॉ भी वह जाती सारे घर में उसके पीछे पड़ी रहतीं।

आखिर उसकी सौतेली मॉ ने सोचा कि यह सब तो उसके लिये कुछ ज़रा ज़्यादा ही अच्छा है सो उसने उसे जानवर चराने के लिये भेजना शुरू दिया।

अब वह बेचारी जानवर चराने के लिये जंगल और घास के मैदानों में चली जाती। जहॉ तक खाने का सवाल था कभी उसको कुछ थोड़ा सा खाना मिल जाता और कभी बिल्कुल नहीं। इससे वह बहुत ही दुबली होती चली गयी और हमेशा दुखी रहती और रोती रहती।

उसके जानवरों में कत्थई रंग का एक बैल था जो हमेशा अपने आपको बहुत साफ और सुन्दर रखता था। वह अक्सर ही राजकुमारी के पास आ जाता था और जब राजकुमारी उसको थपथपाती तो वह उसको थपथपाने देता।

एक दिन वह दुखी बैठी हुई थी और सुबक रही थी कि वह बैल उसके पास आया और सीधे सीधे उससे पूछा कि वह इतनी

दुखी क्यों थी। लड़की ने कोई जवाब नहीं दिया और बस रोती ही रही।

बैल एक लम्बी सी सॉस ले कर बोला — "आह, हालॉकि तुम मुझे बताओगी नहीं पर मैं सब जानता हूँ। तुम इसी लिये रोती रहती हो न क्योंकि रानी तुमको ठीक से नहीं रखती। वह तुमको भूखा मारना चाहती है।

पर देखो खाने के लिये तुमको कोई चिन्ता करने की कोई जरूरत नहीं है क्योंकि मेरे बॉये कान में एक कपड़ा है। जब तुमको खाना खाने की इच्छा हो तो उस कपड़े को मेरे कान में से निकाल लो और घास पर फैला दो। बस तुमको जो खाना चाहिये वही मिल जायेगा।"

राजकुमारी को उस समय बहुत भूख लगी थी सो उसने उस बैल के बॉये कान में रखा कपड़ा निकाल लिया और उसे घास पर बिछा दिया। उसको उस कपड़े से खाने के लिये फिर बहुत सारी चीज़ें मिल गयीं। उस खाने में शराब भी थी, मॉस भी था और केक भी थी।

अब जब भी उसको भूख लगती तो वह बैल के कान में से कपड़ा निकालती उसको घास पर बिछाती और जो उसको खाने की इच्छा होती वह खाती। कुछ ही दिनों में उसके शरीर का मॉस और रंगत दोनों वापस आने लगीं।

जल्दी ही वह थोड़ी मोटी और गोरी गुलाबी हो गयी यह देख कर उसकी सौतेली मॉ और उसकी बेटी गुस्से से लाल पीली होने लगीं। उस सौतेली मॉ की समझ में यही नहीं आया कि उसकी वह सौतेली बेटी जो इतनी बुरी हालत में थी अब ऐसी तन्दुरुस्त कैसे हो गयी।

उसने अपनी एक नौकरानी को बुलाया और उसको राजकुमारी के पीछे पीछे जंगल जाने के लिये कहा और कहा कि वह जा कर वहॉ देखे कि वहॉ सब ठीक चल रहा है या नहीं क्योंकि उसका ख्याल था कि घर का कोई नौकर राजकुमारी को खाना दे रहा होगा।

वह नौकरानी राजकुमारी के पीछे पीछे जंगल तक गयी। वहॉ जा कर उसने देखा कि किस तरह से उस सौतेली बेटी ने बैल के कान में से एक कपड़ा निकाला, उसे घास पर बिछाया और फिर किस तरह से उस कपड़े ने उस राजकुमारी को खाना दिया। सौतेली बेटी ने उसे खाया और वह खाना खा कर वह बहुत खुश हुई।

जो कुछ भी उस नौकरानी ने जंगल में देखा वह सब उसने जा कर रानी को बताया

उधर राजा भी लड़ाई से वापस आ गया था। क्योंकि वह दूसरे राजा को जीत कर आया था इसलिये सारे राज्य में खूब खुशियॉ मनायी जा रही थीं। पर सबसे ज़्यादा खुश थी राजा की अपनी बेटी।

राजा के आते ही रानी ने बीमार पड़ने का बहाना किया और बिस्तर पर जा कर लेट गयी। उसने डाक्टर को यह कहने के लिये बहुत पैसे दिये कि "रानी तब तक ठीक नहीं हो सकती जब तक उसको कत्थई रंग के बैल का मॉस खाने को न मिल जाये।"

राजा और महल के नौकर आदि सबने डाक्टर से पूछा कि रानी की बीमारी की क्या कोई और दवा नहीं थी पर डाक्टर ने कहा "नहीं।" सबने उस कत्थई रंग के बैल की ज़िन्दगी के लिये प्रार्थना की क्योंकि वह बैल सभी को बहुत प्यारा था।

लोगों ने कोई दूसरा कत्थई बैल ढूँढने की कोशिश भी की पर सबने यह भी कहा कि उस बैल के जैसा और कोई बैल नहीं था। उसी बैल को मारा जाना चाहिये और किसी बैल के मॉस के बिना रानी ठीक नहीं हो सकती।

जब राजकुमारी ने यह सुना तो वह बहुत दुखी हुई और जानवरों के बाड़े में बैल के पास गयी। वहॉ भी वह बैल अपना सिर लटकाये हुए नीची नजर किये इस तरह दुखी खड़ा था कि राजकुमारी उसके ऊपर अपना सिर रख कर रोने लगी।

बैल ने पूछा — "तुम क्यों रो रही हो राजकुमारी?"

तब राजकुमारी ने उसे बताया कि राजा लड़ाई पर से वापस आ गया था और रानी बहाना बना कर बीमार पड़ गयी है। उसने डाक्टर को यह कहने पर मजबूर कर दिया है कि रानी तब तक

ठीक नहीं हो सकती जब तक उसको कत्थई रंग के बैल का मॉस खाने को नहीं मिलता। और अब उसको मारा जायेगा।

बैल बोला — "अगर वे लोग पहले मुझे मारेंगे तो जल्दी ही वे तुमको भी मार देंगे। तो अगर तुम मेरी बात मानो तो हम दोनों यहॉ से आज रात को ही भाग चलते हैं।"

राजकुमारी को यह अच्छा नहीं लगा कि वह अपने पिता को यहॉ अकेली छोड़ कर चली जाये पर रानी के साथ उसी घर में रहना तो उससे भी ज़्यादा खराब था। इसलिये उसने बैल से वायदा किया कि वह वहॉ से भाग जाने के लिये रात को उसके पास आयेगी।

रात को जब सब सोने चले गये तो राजकुमारी जानवरों के बाड़े में आयी। बैल ने उसको अपनी पीठ पर बिठाया और वहॉ से उसको ले कर बहुत तेज़ी से भाग चला।

अगले दिन सुबह सवेरे जब लोग उस बैल को मारने के लिये उठे तो उन्होंने देखा कि बैल तो जा चुका है। जब राजा उठा और उसने अपनी बेटी को बुलाया तो वह भी उसको कहीं नहीं मिली। वह भी जा चुकी थी।

राजा ने चारों तरफ अपने आदमी उन दोनों को ढूँढने के लिये भेजे। उनको उसने चर्च में भी भेजा पर दोनों का कहीं पता नहीं था। किसी ने भी उनको कहीं भी नहीं देखा था।

इस बीच वह बैल राजकुमारी को अपनी पीठ पर बिठाये बहुत सी जगहें पार कर एक ऐसे जंगल में आ पहुँचा था जहाँ हर चीज़ ताँबे[3] की थी – पेड़, शाखाऐं, पत्ते, फूल, हर चीज़।

पर इससे पहले कि वे इस जंगल में घुसते बैल ने राजकुमारी से कहा — "जब हम इस जंगल में घुस जायेंगे तो ध्यान रखना कि तुम इस जंगल की एक पत्ती भी नहीं तोड़ना। नहीं तो यह सब मेरे और तुम्हारे ऊपर भी आ जायेगा। क्योंकि यहाँ एक ट्रौल[4] रहता है जिसके तीन सिर हैं और वही इस जंगल का मालिक भी है।"

"नहीं नहीं। भगवान मेरी रक्षा करे।" उसने कहा कि वह वहाँ से कुछ भी नहीं तोड़ेगी।

वे दोनों उस जंगल में घुसे। राजकुमारी किसी भी चीज़ को छूने तक के लिये बहुत सावधान थी। वह जान गयी थी कि किसी भी शाख को छूने से कैसे बचना था। पर वह बहुत घना जंगल था और उसमें से तो हो कर जाना ही बहुत मुश्किल था।

बचते बचते भी उससे उस जंगल के एक पेड़ की एक पत्ती टूट ही गयी और वह उसने अपने हाथ में पकड़ ली।

[3] Translated for the word "Copper"

[4] Troll – a troll is a supernatural being in Norse mythology and Scandinavian folklore. In origin, troll may have been a negative being in Norse mythology. Beings described as trolls dwell in isolated rocks, mountains, or caves, live together in small family units, and are rarely helpful to human beings. See its sketch above.

बैल बोला — "अरे यह तुमने क्या किया। अब तो ज़िन्दगी और मौत के लिये लड़ने के अलावा हमारे पास और कोई चारा नहीं है। पर ध्यान रखना वह पत्ती तुम्हारे हाथ में सुरक्षित रहे उसे फेंकना नहीं।"

जल्दी ही वे जंगल के आखीर तक पहुँच गये और जैसे ही वे वहाँ पहुँचे कि एक तीन सिर वाला ट्रौल वहाँ आ गया।

उसने पूछा — "किसने मेरा जंगल छुआ?"

बैल बोला — "यह जंगल तो जितना तुम्हारा है उतना ही मेरा भी है।"

ट्रौल चीखा — "वह तो हम लड़ाई से तय करेंगे।"

बैल बोला — "जैसा तुम चाहो।"

सो दोनों एक दूसरे की तरफ दौड़ पड़े और एक दूसरे से गुँथ गये। ट्रौल बैल को खूब मार रहा था पर बैल भी अपनी पूरी ताकत से ट्रौल को मार रहा था।

यह लड़ाई सारा दिन चली। आखीर में बैल जीत गया। पर उसके शरीर पर बहुत सारे घाव थे और वह इतना थक गया था कि उससे तो उसकी एक टाँग भी नहीं उठ पा रही थी सो उन दोनों को वहाँ एक दिन के लिये आराम करने के लिये रुकना पड़ा।

बैल ने राजकुमारी से कहा कि वह ट्रौल की कमर की पेटी से लटका हुआ मरहम का एक सींग ले ले और वह मरहम उसके शरीर

पर मल दे। राजकुमारी ने ऐसा ही किया तब कहीं जा कर बैल कुछ ठीक हुआ। तीसरे दिन वे फिर अपनी यात्रा पर चल दिये।

वे फिर कई दिनों तक चलते रहे। कई दिनों की यात्रा के बाद वे एक चॉदी के जंगल में आये। यहॉ हर चीज़ चॉदी की थी – पेड़, शाखाऐं, पत्ते, फूल, हर चीज़।

पर इससे पहले कि वे इस जंगल में घुसते पहले की तरह से बैल ने इस बार भी राजकुमारी से कहा — "जब हम इस जंगल में घुस जायेंगे तो ध्यान रखना कि तुम इस जंगल की एक पत्ती भी नहीं नहीं तोड़ोगी नहीं तो यह सब मेरे और तुम्हारे ऊपर भी आ जायेगा।

क्योंकि यहॉ एक छह सिर वाला ट्रौल रहता है जो इस जंगल का मालिक है और मुझे नहीं लगता कि मैं उसको किसी भी तरह जीत पाऊॅगा।"

राजकुमारी बोली — "नहीं नहीं। मैं ख्याल रखूॅगी कि मैं यहॉ से कुछ न तोड़ूॅ और तुम भी मेरे लिये यह दुआ करते रहना कि यहॉ से मुझसे कुछ टूट न जाये।"

पर जब वे उस जंगल में घुसे तो वह भी इतना ज़्यादा घना था कि वे दोनों उसमें से बड़ी मुश्किल से जा पा रहे थे। राजकुमारी बहुत सावधान थी कि वह वहॉ की कोई भी चीज़ छूने से पहले ही दूसरी तरफ को झुक जाती थी पर हर मिनट पर शाखें उसकी ऑखों के सामने आ जातीं।

बचते बचते भी ऐसा हुआ कि उससे एक पेड़ की एक पत्ती टूट ही गयी।

बैल फिर चिल्लाया — "उफ़। यह तुमने क्या किया राजकुमारी? अब हम अपनी ज़िन्दगी और मौत के लिये लड़ने के सिवा और कुछ नहीं कर सकते। पर ध्यान रहे इस पत्ती को भी खोना नहीं। सॅभाल कर रखना।"

जैसे ही वह यह कह कर चुका कि वह छह सिर वाला ट्रौल वहॉ आ गया और उसने पूछा — "वह कौन है जिसने मेरा यह जंगल छुआ?"

बैल ने फिर वही जवाब दिया — "यह जंगल जितना तुम्हारा है उतना ही मेरा भी है।"

ट्रौल बोला — "यह तो हम लड़ कर देखेंगे।"

बैल ने फिर वही जवाब दिया — "जैसे तुम्हारी मर्जी।"

कह कर वे दोनों एक दूसरे की तरफ दौड़ पड़े। बैल ने ट्रौल की ऑखें निकाल लीं और उसके सींग उसके शरीर में घुसा दिये। इससे उसके शरीर में से उसकी ऑतें निकल कर बाहर आ गयीं।

पर वह ट्रौल क्योंकि उस बैल के मुकाबले का था सो बैल को उस ट्रौल को मारने में तीन दिन लग गये सो वे तीन दिन तक लड़ते ही रहे।

पर इस ट्रौल को मारने के बाद बैल भी इतना कमजोर हो गया और थक गया कि वह हिल भी नहीं सका। उसके घाव भी ऐसे थे कि उनसे खून की धार बह रही थी।

इस ट्रौल की कमर की पेटी से भी एक मरहम वाला सींग लटक रहा था सो बैल ने राजकुमारी से कहा कि वह उस ट्रौल की कमर से वह सींग निकाल ले और उसका मरहम उसके घावों पर लगा दे।

राजकुमारी ने वैसा ही किया तब जा कर वह कुछ ठीक हुआ। इस बार बैल को ठीक होने में एक हफ्ता लग गया तभी वे आगे बढ़ सके।

आखिर वे आगे चले पर बैल अभी भी बिल्कुल ठीक नहीं था सो वह बहुत धीरे चल रहा था।

राजकुमारी को लगा कि बैल को चलने में समय ज़्यादा लग रहा था सो समय बचाने के लिये उसने बैल से कहा कि क्योंकि वह छोटी थी और उसके अन्दर ज़्यादा ताकत थी वह जल्दी चल सकती थी वह उसको पैदल चलने की इजाज़त दे दे पर बैल ने उसको इस बात की इजाज़त नहीं दी। उसने कहा कि उसको अभी उसकी पीठ पर बैठ कर ही चलना चाहिये।

इस तरह से वे काफी दिनों तक चलते हुए बहुत जगह होते हुए फिर एक जंगल में आ पहुँचे। यह जंगल सारा सोने का था। उस जंगल के हर पेड़, शाख, डंडी, फूल, पत्ते सभी कुछ सोने के थे।

इस जंगल में भी वही हुआ जो तॉबे और चॉदी के जंगलों में हुआ था।

बैल ने राजकुमारी से कहा कि वह उस जंगल में से भी कुछ न तोड़े क्योंकि इस जंगल का राजा एक नौ सिर वाला ट्रौल था और यह ट्रौल पिछले दोनों ट्रौल को मिला कर उनसे भी ज़्यादा बड़ा और ताकतवर था। बैल तो इसको किसी हालत में जीत ही नहीं सकता था।

बैल जानता था कि राजकुमारी इस बात का पूरा ध्यान रखेगी कि वह उस जंगल की कोई चीज़ न तोड़े पर फिर भी वही हुआ। जब वे जंगल में घुसे तो यह जंगल तॉबे और चॉदी के जंगलों से भी कहीं ज़्यादा घना था।

इसके अलावा वे लोग जितना उस जंगल के अन्दर चलते जाते थे वह जंगल और ज़्यादा घना होता जाता था। आखिर वह इतना ज़्यादा घना हो गया कि राजकुमारी को लगा कि अब वह उस जंगल में से बिना किसी चीज़ को छुए निकल ही नहीं सकती।

उसको पल पल पर यही लग रहा था कि किसी भी समय पर उससे वहॉ कोई भी चीज़ टूट जायेगी।

इस डर से वह कभी बैठ जाती, कभी अपने आपको किसी तरफ झुका लेती, कभी मुड़ जाती पर फिर भी उन पेड़ों की शाखाऐं हर पल उसकी ऑखों के सामने आ रही थीं।

इसका नतीजा यह हुआ कि उसको पता ही नहीं चला कि वह उन सोने की शाखाओं, फूलों, पत्तों से बचने के लिये कर क्या रही है। और इससे पहले कि उसको यह पता चलता कि क्या हुआ उसके हाथ में एक सोने का सेब आ गया।

उसको देख कर तो उसको इस बात का इतना ज़्यादा दुख हुआ कि वह बहुत ज़ोर से रो पड़ी और उसको फेंकना चाहती थी कि बैल बीच में ही बोल पड़ा — "अरे इसको फेंकना नहीं। इसे सँभाल कर रख लो और इसका ध्यान रखना।" पर राजकुमारी का तो रोना ही नहीं रुक रहा था।

बैल ने उसको जितनी भी तसल्ली वह दे सकता था दी पर उसको लग रहा था कि अबकी बार उस बैल को केवल उसकी वजह से बहुत भारी मुश्किल का सामना करना पड़ेगा और उसको यह भी शक था कि यह सब कैसे होगा क्योंकि इस जंगल का मालिक ट्रौल बहुत बड़ा और ताकतवर था।

तभी उस जंगल का मालिक वह नौ सिर वाला ट्रौल वहाँ आ गया। वह इतना बदसूरत था कि राजकुमारी तो उसकी तरफ देखने की भी हिम्मत नहीं कर सकी।

वहाँ आ कर वह गरजा — "यह किसने मेरा जंगल छुआ?"

बैल ने फिर वही जवाब दिया — "यह जंगल जितना तुम्हारा है उतना ही मेरा भी है।"

ट्रौल बोला — "यह तो हम लड़ कर देखेंगे।"

बैल ने फिर वही जवाब दिया — "जैसे तुम्हारी मर्जी।"

कह कर वे दोनों एक दूसरे की तरफ दौड़ पड़े। बहुत ही भयानक दृश्य था। राजकुमारी तो उसको देख कर ही बेहोश होते होते बची।

इस बार भी बैल ने ट्रौल की ऑखें निकाल लीं और उसके सींग उसके पेट में घुसा दिये जिससे उसकी ऑतें उसके पेट से बाहर निकल आयीं। फिर भी ट्रौल बहुत बहादुरी से लड़ता रहा।

जब बैल ने ट्रौल का एक सिर मार दिया तो उसके दूसरे सिरों से उस मरे हुए सिर को ज़िन्दगी मिलने लगी। इस तरह वह लड़ाई एक हफ्ता चली क्योंकि जब भी बैल उस ट्रौल के एक सिर को मारता तो उसके दूसरे सिर उसके मरे हुए सिर को जिला देते थे।

उसके सारे सिरों को मारने में उस बैल को पूरा एक हफ्ता लग गया तभी वह उस ट्रौल को मार सका।

अबकी बार तो बैल इतना घायल हो गया था और इतना थक गया था कि वह अपना पैर भी नहीं हिला सका। वह तो राजकुमारी से इतना भी नहीं कह सका कि वह ट्रौल की कमर की पेटी में लगे मरहम के सींग में से मरहम निकाल कर उसके घावों पर लगा दे।

पर राजकुमारी को तो यह मालूम था सो उसने ट्रौल की कमर की पेटी से मरहम का सींग निकाला और उसमें से मरहम निकाल कर

बैल के घावों पर लगा दिया। इससे बैल के घावों को काफी आराम मिला और वह धीरे धीरे ठीक होने लगा।

इस बार बैल को आगे जाने के लिये तीन हफ्ते तक आराम करना पड़ा। इतने आराम के बाद भी बैल घोंघे[5] की चाल से ही चल पा रहा था।

बैल ने राजकुमारी को बताया कि इस बार उनको काफी दूर जाना है। उन्होंने कई ऊँची ऊँची पहाड़ियाँ पार कीं, कई घने जंगल पार किये और फिर एक मैदान में आ निकले।

बैल ने राजकुमारी से पूछा — "क्या तुमको यहाँ कुछ दिखायी दे रहा है?"

राजकुमारी ने जवाब दिया — "नहीं, मुझे तो यहाँ कुछ दिखायी नहीं दे रहा सिवाय आसमान के और जंगली मैदान के।"

वे कुछ और आगे बढ़े तो वह मैदान कुछ और एकसार हो गया और वे कुछ और आगे का देख पाने के लायक हो गये।

बैल ने फिर पूछा — "क्या तुमको अब कुछ दिखायी दे रहा है?"

राजकुमारी बोली — "हाँ अब मुझे दूर एक छोटा सा किला दिखायी दे रहा है।"

[5] Translated for the word "Snail". See its picture above. Snail and Tortoise are famous for their slowest speed.

बैल बोला — "अब वह छोटा किला इतना छोटा भी नहीं है राजकुमारी जी।"

काफी देर तक चलने के बाद वे एक पत्थरों के ढेर के पास आये जहॉ लोहे का एक खम्भा सड़क के आर पार पड़ा हुआ था।

बैल ने फिर पूछा — "क्या तुमको अब कुछ दिखायी दे रहा है?"

राजकुमारी बोली — "हॉ अब मुझे किला साफ साफ दिखायी दे रहा है और अब वह बहुत बड़ा भी है।"

बैल बोला — "तुमको वहॉ जाना है और तुमको वहीं रहना है। किले के ठीक नीचे एक जगह है जहॉ सूअर रहते हैं तुम वहॉ चली जाना।

वहॉ पहुँचने पर तुमको लकड़ी का एक क्लोक[6] मिलेगा जो लकड़ी के पतले तख्तों से बना हुआ होगा। तुम उसको पहन लेना। उस क्लोक को पहन कर तुम उस किले में जाना और अपना नाम केटी वुडिनक्लोक[7] बताना और उनसे अपने रहने के लिये जगह मॉगना।

पर इससे पहले कि तुम वहॉ जाओ तुम अपना छोटा वाला चाकू लो और मेरा गला काट दो। फिर मेरी खाल निकाल कर लपेट कर पास की एक चट्टान के नीचे छिपा दो।

---

[6] Cloak – a loose wrapping worn on a dress to cover oneself or to keep one warm. See its picture above.

[7] Katie Woodencloak

उस खाल के नीचे वह तॉबे और चॉदी की दोनों पत्तियॉ और सोने का सेब रख देना। और फिर उस चट्टान के सहारे एक डंडी खड़ी कर देना।

उसके बाद जब भी तुम कोई चीज़ चाहो तो उस चट्टान की दीवार पर वह डंडी मार देना। तुमको वह चीज़ मिल जायेगी।"

पहले तो राजकुमारी ऐसा कुछ भी करने को तैयार नहीं हुई पर जब बैल ने उससे कहा कि उसने जो कुछ भी राजकुमारी के लिये किया उस सबको करने के लिये धन्यवाद देने का यही एक तरीका था तो राजकुमारी के पास यह करने के अलावा और कोई चारा न रहा।

उसने अपना छोटा वाला चाकू निकाला और उससे उस बैल का गला काट दिया। फिर उसने बैल की खाल निकाल कर लपेट कर पास में पड़ी एक चट्टान के नीचे रख दी।

खाल के नीचे उसने वे तॉबे और चॉदी की दोनों पत्तियॉ और सोने का सेब रख दिया। और उसके बाद में उसने उस चट्टान के सहारे एक डंडी खड़ी कर दी।

वहॉ से वह किले के नीचे सूअरों के रहने की जगह गयी जहॉ उसको वह लकड़ी के पतले तख्तों से बना हुआ क्लोक मिल गया। उसने उस क्लोक को पहना और ऊपर किले में आयी। यह सब करते हुए वह बैल को याद कर कर के रोती और सुबकती रही।

फिर वह सीधी शाही रसोईघर में गयी और वहॉ जा कर उसने अपना नाम केटी वुडिनक्लोक बताया और रहने के लिये जगह मॉगी।

रसोइया बोला कि हॉ उसको वहॉ रहने की जगह मिल सकती थी। रसोईघर के पीछे वाले छोटे कमरे में वह रह सकती थी और उसके बर्तन धो सकती थी क्योंकि उसकी बर्तन धोने वाली अभी अभी काम छोड़ कर चली गयी थी।

रसोइया बोला — "पर जैसे ही तुम यहॉ रहते रहते थक जाओगी तो तुम यहॉ से चली जाओगी।"

राजकुमारी बोली — "नहीं, मैं ऐसा नहीं करूॅगी।"

और वह वहॉ रहने लगी। वह बहुत अच्छे से रहती और बर्तन भी बहुत ही आसानी से साफ करती रहती।

रविवार के बाद वहॉ कुछ अजीब से मेहमान आये तो केटी ने रसोइये से पूछा कि क्या वह राजकुमार के नहाने का पानी ऊपर ले जा सकती थी।

यह सुन कर वहॉ खड़े सब लोग हॅस पड़े और बोले — "पर तुम वहॉ क्या करोगी? तुम्हें क्या लगता है कि क्या राजकुमार तुम्हारी तरफ देखेगा भी? तुम तो बहुत ही डरावनी दिखायी देती हो।"

पर उसने अपनी कोशिश नहीं छोड़ी और उनसे प्रार्थना करती रही और बार बार राजकुमार के लिये नहाने का पानी ले जाने के

लिये कहती रही। आखिर उसको वहॉ उसके नहाने का पानी ले जाने की इजाज़त मिल ही गयी।

जब वह ऊपर गयी तो उसके लकड़ी के क्लोक ने आवाज की तो राजकुमार अन्दर से निकल कर आया और उससे पूछा — "तुम कौन हो?"

राजकुमारी बोली — "मैं राजकुमार के लिये नहाने का पानी ले कर आ रही थी।"

"तुम क्या समझती हो कि इस समय तुम्हारे लाये पानी से मैं कुछ करूॅगा?" और यह कर उसने वह पानी राजकुमारी के ऊपर ही फेंक दिया।

वह वहॉ से चली आयी और फिर उसने रसोइये से चर्च जाने की इजाज़त मॉगी। चर्च पास में ही था सो उसको वह इजाज़त भी मिल गयी।

पर सबसे पहले वह उस चट्टान के पास गयी और जैसा कि बैल ने उससे कहा था उसने डंडी से चट्टान को मारा। तुरन्त ही उसमें से एक आदमी निकला और उसने पूछा — "तुम्हारी क्या इच्छा है?"

राजकुमारी बोली कि उसने चर्च जाने की और पादरी का भाषण सुनने के लिये छुट्टी ले रखी है पर उसके पास चर्च जाने लायक कपड़े नहीं हैं।

उस आदमी ने एक गाउन निकाला जो तॉबे जैसा चमकदार था। उसने उसको वह दिया और उसके साथ ही उसको एक घोड़ा

भी दिया जिस पर उस घोड़े का साज भी सजा था। वह साज भी तॉबे के रंग का था और खूब चमक रहा था।

उसने तुरन्त अपना वह गाउन पहना और घोड़े पर चढ़ कर चर्च चल दी। जब वह चर्च पहुॅची तो वह बहुत ही प्यारी और शानदार लग रही थी।

सब लोग उसको देख कर सोच रहे थे कि यह कौन है। उन सबमें से शायद ही कोई ऐसा होगा जिसने उस दिन पादरी का भाषण सुना होगा क्योंकि वे सब उसी को देखते रहे।

वहॉ राजकुमार भी आया था। वह तो उसके प्यार में बिल्कुल पागल सा ही हो गया था। उसकी तो उस लड़की के ऊपर से ऑख ही नहीं हट रही थी।

जैसे ही राजकुमारी चर्च से बाहर निकली तो राजकुमार उसके पीछे भागा। राजकुमारी तो दरवाजे से बाहर चली गयी पर उसका एक दस्ताना दरवाजे में अटक गया। राजकुमार ने उसका वह दस्ताना वहॉ से निकाल लिया।

जब वह घोड़े पर चढ़ गयी तो राजकुमार फिर उसके पास गया और उससे पूछा कि वह कहॉ से आयी थी तो केटी बोली — "मैं बैथ[8] से आयी हूॅ।"

[8] Bath – a place in England, but here she meant "bath" because she took water for the Prince to take bath so she told him that she came from "bath".

और जब राजकुमार ने उसको देने के लिये उसका दस्ताना निकाला तो वह बोली —

रोशनी आगे और अँधेरा पीछे, बादल आओ हवा पर
ताकि यह राजकुमार कभी न देख सके जहाँ मेरा यह अच्छा घोड़ा मेरे साथ जाये

राजकुमार ने वैसा दस्ताना पहले कभी नहीं देखा था। वह उस शानदार लड़की को ढूँढने के लिये चारों तरफ घूमा जो बिना दस्ताने पहने ही वहाँ से घोड़े पर चढ़ कर चली गयी थी। उसने उसे बताया भी था कि वह बैथ से आयी थी पर वहाँ यह कोई नहीं बता सका कि बैथ कहाँ है।

अगले रविवार को किसी को राजकुमार के लिये उसका तौलिया ले कर जाना था। तो केटी ने फिर कहा — "क्या मैं राजकुमार का तौलिया ले कर जा सकती हूँ?"

दूसरे लोग बोले — "तुम्हारे जाने से क्या होगा। तुमको तो पता ही है कि पिछली बार तुम्हारे साथ क्या हुआ था।"

फिर भी केटी ने अपनी कोशिश नहीं छोड़ी और उसको राजकुमार का तौलिया ले जाने की इजाज़त मिल गयी। बस वह तौलिया ले कर सीढ़ियों से ऊपर भाग गयी।

इस भागने से उसके लकड़ी के पतले तख्ते का बने क्लोक ने फिर से आवाज की तो राजकुमार फिर से अन्दर से निकल कर आया और जब उसने देखा कि वह तो केटी थी तो उसने उसके

हाथ से उस तौलिये को ले कर फाड़ दिया और उसके मुँह पर फेंक दिया।

वह बोला — "तुम यहाँ से चली जाओ ओ बदसूरत ट्रौल। तुम क्या सोचती हो कि मैं वह तौलिया इस्तेमाल करूँगा जिसको तुम्हारी गन्दी उँगलियों ने छू लिया हो?" और उसके बाद वह चर्च चला गया।

जब राजकुमार चर्च चला गया तो केटी ने भी चर्च जाने की छुट्टी माँगी। पर सबने उससे पूछा कि वह चर्च में क्या करने जाना चाहती थी।

उसके पास तो चर्च में पहनने के लिये उस लकड़ी के क्लोक के अलावा और कुछ था ही नहीं। और वह क्लोक भी बहुत ही भद्दा और काला था।

पर केटी बोली कि चर्च का पादरी बहुत ही अच्छा भाषण देता है। और जो कुछ भी उसने पिछले हफ्ते कहा था उसने केटी का काफी भला किया था। इस बात पर उसको चर्च जाने की छुट्टी मिल गयी।

वह फिर से दौड़ी हुई उसी चट्टान के पास गयी और जा कर उसके पास रखी डंडी से उसे मारा। उस चट्टान में से फिर वही आदमी निकला और अबकी बार उसने उसको पिछले गाउन से भी कहीं ज़्यादा अच्छा गाउन दिया।

वह सारा गाउन चॉदी के काम से ढका हुआ था और चॉदी की तरह से ही चमक रहा था। साथ में एक बहुत बढ़िया घोड़ा भी दिया जिसके साज पर चॉदी का काम था। और उसको चॉदी का एक टुकड़ा भी दिया।

उस सबको पहन कर जब वह राजकुमारी चर्च पहुॅची तो बहुत सारे लोग चर्च के ऑगन में ही खड़े हुए थे। उसको आते देख कर सब फिर सोचने लगे कि यह लड़की कौन हो सकती है।

राजकुमार तो तुरन्त ही वहॉ आ गया कि जब वह उस घोड़े पर से उतरेगी तो वह उसका घोड़ा पकड़ेगा। पर वह तो उस पर से कूद गयी और बोली कि उसका घोड़ा पकड़ने की उसको कोई जरूरत नहीं है क्योंकि उसका घोड़ा बहुत सधा हुआ था।

वह घोड़ा वहीं खड़ा रहा जहॉ वह उसको छोड़ कर गयी थी। जब वह वहॉ वापस आयी और जब उसने उसे बुलाया तो वह उसके पास आ गया।

सब लोग चर्च के अन्दर चले गये पर पिछली बार की तरह से शायद ही कोई आदमी होगा जिसने उस दिन भी उस पादरी का भाषण सुना होगा क्योंकि उस दिन भी वे सब उसी की तरफ देखते रहे।

और राजकुमार तो उससे पहले से भी ज़्यादा प्यार करने लगा था।

जब पादरी का भाषण खत्म हो गया तो वह चर्च से बाहर चली गयी। वह अपने घोड़े पर बैठने ही वाली थी कि राजकुमार फिर वहॉ आया और उससे पूछा कि वह कहॉ से आयी है।

इस बार उसने जवाब दिया — "मैं टौविललैंड[9] से आयी हूँ।" यह कह कर उसने अपना कोड़ा गिरा दिया। यह देख कर राजकुमार उसको उठाने के लिये झुका तो इस बीच राजकुमारी ने कहा —

रोशनी आगे और अँधेरा पीछे, बादल आओ हवा पर
ताकि यह राजकुमार कभी न देख सके जहॉ मेरा यह अच्छा घोड़ा मेरे साथ जाये

और वह वहॉ से भाग गयी। राजकुमार यह भी न बता सका कि उसका हुआ क्या। वह फिर से यह जानने के लिये चारों तरफ घूमा फिरा कि टौविललैंड कहॉ है पर कोई उसको यह नहीं बता सका कि वह जगह कहॉ है। इसलिये अब राजकुमार को केवल उसी से काम चलाना था जो उसके पास था।

अगले रविवार को किसी को राजकुमार को कंघा देने के लिये जाना था। केटी ने फिर कहा कि क्या वह राजकुमार को कंघा देने जा सकती है। पर दूसरे लोगों ने फिर से उसका मजाक बनाया और कहा कि उसको पिछले दो रविवारों की घटनाऐं तो याद होंगी ही।

[9] Towelland – she said this because the same morning she took the towel to him.

और साथ में उसको डॉटा कि वह किस तरह अपने उस भद्दे काले लकड़ी के क्लोक में राजकुमार के सामने जाने की हिम्मत करती है। पर वह फिर उन लोगों के पीछे पड़ी रही जब तक कि उन लोगों ने उसको हॉ नहीं कर दी।

वह फिर से कंघा ले कर ऊपर दौड़ी गयी। उसके लकड़ी के क्लोक की आवाज सुन कर राजकुमार फिर बाहर निकल कर आया और केटी को फिर से वहॉ देख कर उसने उससे कंघा छीन कर उसके मुँह पर मारा और बिना कुछ कहे सुने वहॉ से चर्च चला गया।

जब राजकुमार चर्च चला गया तो केटी ने भी चर्च जाने की इजाज़त मॉगी। उन लोगों ने उससे फिर पूछा कि वहॉ उसका काम ही क्या था – उसमें से बदबू आती थी, वह काली थी, उसके पास वहॉ पहनने के लिये ठीक से कपड़े भी नहीं थे। हो सकता है कि राजकुमार या कोई और उसको वहॉ देख ले तो उसकी वहॉ बदनामी होगी।

पर केटी बोली कि लोगों के पास उसकी तरफ देखने की फुरसत ही कहॉ थी उनके पास तो और बहुत सारे काम थे। और वह उनसे चर्च जाने की इजाज़त मॉगती ही रही। आखिर उन्होंने उसको वहॉ जाने की इजाज़त फिर से दे दी।

इस बार भी वही हुआ जो दो बार पहले हो चुका था। वह फिर से दौड़ी हुई उसी चट्टान के पास गयी और जा कर उसके पास

रखी डंडी से उसे मारा। उस चट्टान में से फिर वही आदमी निकला और अबकी बार उसने उसको पिछले दोनों गाउन से भी ज़्यादा अच्छा गाउन दिया।

इस बार वह सारा गाउन सुनहरी था और उसमें हीरे जड़े हुए थे। साथ में एक बहुत बढ़िया घोड़ा भी दिया जिसके साज पर सोने का काम था। उसने उसको एक सोने का टुकड़ा भी दिया।

जब राजकुमारी चर्च पहुँची तो वहाँ के आँगन में पादरी और चर्च में आये सारे लोग उसके इन्तजार में खड़े थे।

राजकुमार वहाँ भागता हुआ आया और उसने उसका घोड़ा पकड़ना चाहा पर राजकुमारी पहले की तरह ही उस पर से कूद कर उतर गयी और बोली — "मेरे घोड़े को पकड़ने की जरूरत नहीं है। वह बहुत सधा हुआ है जहाँ मैं इसको खड़े होने को कहती हूँ यह वहीं खड़ा रहता है।"

फिर सब चर्च के अन्दर चले गये। पादरी भी अपनी जगह चला गया। उस दिन भी किसी ने उसके भाषण का एक शब्द भी नहीं सुना क्योंकि पहले की तरह से सभी लोग केवल उसी लड़की को देखते रहे और सोचते रहे कि वह कहाँ से आती है और कहाँ चली जाती है।

और राजकुमार तो उसको पहले से भी ज़्यादा प्यार करने लगा। उसकी तो कोई इन्द्रिय काम ही नहीं कर रही थी वह तो बस उसको घूरे ही जा रहा था।

जब पादरी का भाषण खत्म हुआ तो राजकुमारी चर्च से बाहर निकली। अबकी बार राजकुमार ने चर्च के बाहर कुछ चिपकने वाली चीज़ डाल दी ताकि वह उसको वहॉ से जाने से रोक सके।

पर राजकुमारी ने उसकी कोई चिन्ता नहीं की और उसने अपना पैर उस चिपकने वाली चीज़ के ठीक बीच में रख दिया और उसके उस पार कूद गयी। पर इस कूदने में उसका एक सुनहरी जूता उस जगह पर चिपक गया।

जैसे ही वह अपने घोड़े पर चढ़ी राजकुमार चर्च में से बाहर आ कर उसके पास आया और उससे पूछा कि वह कहॉ से आयी है। इस बार वह बोली मैं कौम्बलैंड[10] से आयी हूँ।

इस पर राजकुमार उसको उसका सुनहरा जूता देना चाहता था कि राजकुमारी बोली —

रोशनी आगे और अँधेरा पीछे, बादल आओ हवा पर
ताकि यह राजकुमार कभी न देख सके जहॉ मेरा यह अच्छा घोड़ा मेरे साथ जाये

और वह तो राजकुमार की ऑखों के सामने सामने गायब हो गयी और राजकुमार उसे ढूँढता रहा पर कोई उसको कोई यह न बता सका कि कौम्बलैंड कहॉ है।

फिर उसने दूसरी तरकीब इस्तेमाल की। उसके पास उसका एक सुनहरी जूता रह गया था सो उसने सब जगह यह घोषणा करवा

[10] Combland – by saying this she meant that since she went to him to give a comb that is why she came from the Combland.

दी कि वह उसी लड़की से शादी करेगा जिसके पैर में यह सुनहरी जूता आ जायेगा।

बहुत सारी लड़कियॉ बहुत सारी जगहों से उस जूते को पहनने के लिये वहॉ आयीं पर किसी का पैर इतना छोटा नहीं था जिसके पैर में वह जूता आ जाता।

काफी दिनों बाद सोचो ज़रा कौन आया? केटी की सौतेली बहिन और सौतेली मॉ। आश्चर्य उस लड़की के पैर में वह जूता आ गया। पर वह तो बहुत ही बदसूरत थी।

पर राजकुमार ने अपनी इच्छा के खिलाफ अपनी जबान रखी। उसने शादी की दावत रखी और वह सौतेली बहिन दुलहिन की तरह सज कर चर्च चली तो चर्च के पास वाले एक पेड़ पर बैठी एक चिड़िया ने गाया —

उसकी एड़ी एक टुकड़ा और उसकी उँगलियों का एक टुकड़ा
केटी वुडिनक्लोक का छोटा जूता खून से भरा है, मैं बस इतना जानती हूँ

यह सुन कर उस लड़की का जूता देखा गया तो उनको पता चला कि वह चिड़िया तो सच ही बोल ही रही थी। जूता निकालते ही उसमें से खून की धार निकल पड़ी।

फिर महल में जितनी भी नौकरानियॉ और लड़कियॉ थीं सभी वहॉ जूता पहन कर देखने के लिये आयीं पर वह जूता किसी के पैर में भी नहीं आया।

जब उस जूते को सबने पहन कर देख लिया तो राजकुमार ने पूछा — "पर वह केटी वुडिनक्लोक कहाँ है?" क्योंकि राजकुमार ने चिड़िया के गाने को ठीक से समझ लिया था कि वह क्या गा रही थी।

वहाँ खड़े लोगों ने कहा — "अरे वह? उसका यहाँ आना ठीक नहीं है।"

"क्यों?"

"उसकी टाँगें तो घोड़े की टाँगों के जैसी हैं।"

राजकुमार बोला — "आप लोग सच कहते हैं। मुझे मालूम है पर जब सबने यहाँ इस जूते को पहन कर देखा है तो उसको भी इसे पहन कर देखना चाहिये।"

उसने दरवाजे के बाहर झाँक कर आवाज लगायी — "केटी।" और केटी धम धम करती हुई ऊपर आयी। उसका लकड़ी का क्लोक ऐसे शोर मचा रहा था जैसे किसी फौज के घुड़सवार चले आ रहे हों।

वहाँ खड़ी दूसरी नौकरानियों ने उससे हँस कर उसका मजाक बनाते हुए कहा — "जाओ जाओ। तुम भी वह जूता पहन कर देखो और तुम भी राजकुमारी बन जाओ।"

केटी वहाँ गयी और उसने वह जूता ऐसे पहन लिया जैसे कोई खास बात ही न हो और अपना लकड़ी का क्लोक उतार कर फेंक दिया।

लकड़ी का क्लोक उतारते ही वह वहॉ अपने सुनहरे गाउन में खड़ी थी। उसमें से सुनहरी रोशनी ऐसे निकल रही थी जैसे सूरज की किरनें फूट रही हों। और लो, उसके दूसरे पैर में भी वैसा ही सुनहरा जूता आ गया।

अब राजकुमार उसको पहचान गया कि यह तो वही चर्च वाली लड़की थी। वह तो इतना खुश हुआ कि वह उसकी तरफ दौड़ गया और उसके गले में बॉहें डाल दीं।

तब राजकुमारी ने उसको बताया कि वह भी एक राजा की बेटी थी। दोनों की शादी हो गयी और फिर उनकी शादी की एक बहुत बड़ी दावत का इन्तजाम हुआ।

2 भालू ने अपनी पूँछ कैसे खोयी[11]

बच्चो, क्या तुम जानते हो कि भालू करीब करीब हर जानवर पर जो भी उसको जंगल में मिलता है क्यों गुर्राता है? वह ऐसा हमेशा से नहीं था।

पहले जब भी कोई उसके पास आता था तो उसको देख कर वह बड़े दोस्ताना अन्दाज़ में अपनी लम्बी पूँछ हिलाता था जैसे कि कुत्ते हिलाते हैं और बहुत प्यार से बात करता था।

पर आजकल? आजकल ऐसा नहीं है। तो फिर वह ऐसा कैसे हुआ?

तो हुआ यों कि एक बार जाड़े के एक दिन में एक मछियारे ने बहुत सारी मछलियाँ पकड़ीं और उन सबको एक रस्सी में बाँध कर पानी में वहीं छोड़ दिया ताकि वे ताजा रहें।

चालाक लोमड़े ने यह देख लिया कि मछियारे ने मछलियाँ पकड़ीं और उनको पकड़ कर पानी में ही छोड़ दीं और वह चला गया। सो जब वह मछियारा उधर नहीं देख रहा था तो उसने उसकी उन मछलियों को चुरा लिया और उनको ले कर घर चल दिया।

---

[11] How Bear Lost His Tail? – a folktale from Norway, Europe. Translated from the Web Site http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=63
Retold and written by Mike Lockett.
[A similar story is told by Americans also. Read it in published in the Book “America Ki Lok Kathayen-1” and “Aisa Kyon” by Sushma Gupta in Hindi language under the title “Bhaaloo Ne Apni Poonchh Kaise Khoyi”.]

घर जाते समय उसको रास्ते में बैठा एक भालू दिखायी दे गया। भालू ने लोमड़े को बहुत सारी मछलियॉ ले जाते देखा तो उसको देख कर उसने अपने दोस्ताना अन्दाज में उसकी तरफ अपनी पूँछ हिलायी।

उसको वे मछलियॉ देखने और खुशबू में बहुत ही अच्छी लग रहीं थीं सो भालू ने लोमड़े से पूछा — "लोमड़े भाई, ये मछलियॉ तुमको कहॉ से मिलीं?"

लोमड़े ने झूठ बोला — "मिलेंगी कहॉ से? मैंने इनको पकड़ा है।"

असल में लोमड़े को बहुत शर्म आ रही थी क्योंकि उसको लगा कि भालू ने उसको वे मछलियॉ चुराते हुए देख लिया था। पर ऐसा कुछ नहीं था। भालू को तो यह पता ही नहीं था कि लोमड़े ने ये मछलियॉ चुरायी थीं।

भालू ने फिर पूछा — "लेकिन तुमने इनको पकड़ा कैसे लोमड़े भाई, झील तो सारी जमी पड़ी है?"

लोमड़े ने फिर झूठ बोला — "मेरे पास इनको पकड़ने का एक खास तरीका है।"

भालू बोला — "ये मछलियॉ तो दिखायी भी बहुत अच्छी दे रही हैं लोमड़े भाई और खुशबूदार भी बहुत लग रही हैं। क्या तुम इनमें से थोड़ी सी मुझे भी दोगे?"

लोमड़ा बोला — "नहीं भाई। तुम अपनी मछलियॉ अपने आप पकड़ो।"

भालू बड़ी नम्रता से बोला — "मैं भी ऐसी मछली पकड़ना चाहता हूॅ। क्या तुम मुझको मछली पकड़ने का अपना वह खास तरीका बताओगे जिससे मैं भी इस जमी हुई बर्फ में से ऐसी ही मछलियॉ पकड़ सकूॅ?" और ऐसा कह कर उसने अपनी पूॅछ फिर से हिलायी।

लोमड़ा भालू के साथ उस झील पर फिर से जाना नहीं चाहता था क्योंकि उसको डर था कि वह मछियारा कहीं उसको पकड़ न ले जिसकी मछलियॉ उसने चुरायी थीं।

पर उसको भालू का उसकी तरफ देख कर बार बार पूॅछ हिलाना भी अच्छा नहीं लग रहा था सो उसने भालू से एक और झूठ बोलने का निश्चय किया।

लोमड़े ने भालू से कहा — "मछलियॉ पकड़ना बहुत आसान है भालू भाई। मैं तुम्हें बताता हूॅ। पहले तुम बर्फ में एक छेद करो फिर तुम उस छेद पर ऐसे बैठ जाओ जिससे तुम्हारी पूॅछ उस छेद में नीचे गिर जाये। पर तुमको अपनी पूॅछ पानी में काफी देर तक लटकानी पड़ेगी।

सो अगर तुम्हारी पूॅछ को थोड़ी तकलीफ भी हो तो चिन्ता मत करना क्योंकि उस तकलीफ का मतलब होगा कि मछलियॉ तुम्हारी

पूँछ को काट रही हैं। जितनी ज़्यादा देर तक तुम अपनी पूँछ पानी में रखोगे उतनी ही ज़्यादा मछलियाँ तुम पकड़ पाओगे।

जब तुम देखो कि अब तुम अपनी पूँछ हिला भी नहीं पा रहे हो तो समझना कि अब तुम अपनी पूँछ बाहर निकालने के लिये तैयार हो। बस फिर तुम एक दम से उठ कर खड़े हो जाना और जितनी जल्दी से अपनी पूँछ बाहर निकाल सको निकाल लेना।"

उफ़, यह चालाक लोमड़ा भालू से कितना झूठ बोला?

भालू ने उसको बड़ी नर्मी से धन्यवाद दिया और एक बार फिर से अपनी लम्बी पूँछ हिलाता हुआ उस जमी हुई झील की तरफ चल दिया।

रास्ते में भालू ने एक मछियारे से बर्फ खोदने वाला औजार और एक आरी उधार माँगी और उनसे उसने जमी हुई झील की बर्फ में एक छेद किया।

जैसे लोमड़े ने उस मछियारे की बिना इजाज़त के उसकी मछलियाँ चुरा ली थीं भालू ने ऐसा नहीं किया।

जब भालू का छेद तैयार हो गया तो उसने उस मछियारे के औजार वापस किये और उससे इजाज़त ले कर वह उस छेद पर आ कर बैठ गया। उसने अपनी लम्बी पूँछ उस छेद में अन्दर डाल दी।

उतनी कड़ी सर्दी में उस ठंडे पानी में अपनी पूँछ डाल कर बैठना उसको बिल्कुल अच्छा नहीं लग रहा था पर वैसी ही सुन्दर,

ताजा और खुशबूदार मछलियॉ पकड़ने के लिये वह यह भी करने को तैयार था।

वह बेचारा वहॉ तब तक बैठा रहा जब तक पानी ने उसकी पूँछ के चारों तरफ जमना नहीं शुरू किया।

पानी जमने की वजह से अब उसकी पूँछ में दर्द होना शुरू हो गया था तो उसको लोमड़े की बात याद आयी कि "अगर तुम्हारी पूँछ में थोड़ा बहुत दर्द भी हो तो चिन्ता मत करना, यह समझना कि मछलियॉ तुम्हारी पूँछ को काट रही हैं।"

इसलिये वह वहॉ खुशी खुशी बैठा रहा और तब तक बैठा रहा जब तक उसकी पूँछ के चारों तरफ का पानी ठोस तरीके से जम नहीं गया।

जब भालू को लगा कि अब वह अपनी पूँछ बिल्कुल भी नहीं हिला पा रहा है तो उसने सोचा कि लगता है कि अब उसकी पूँछ से बहुत सारी मछलियॉ चिपक गयी हैं इसलिये अब खड़े होने का समय आ गया है। वह खड़ा हो गया और एक झटके से उसने अपनी पूँछ पानी में से बाहर खींच ली।

भालू तो बहुत ताकतवर जानवर होता है सो जैसे ही उसने अपनी पूँछ बाहर खींची वह बाहर तो निकल आयी। पर यह क्या?

उसकी पूँछ तो अभी भी पानी में रह गयी थी। वह इसलिये कि पानी में जमी रहने की वजह से उसकी पूरी पूँछ निकल ही नहीं पायी और झटके से खींचने की वजह से टूट गयी।

जो पूँछ उसकी बाहर थी उसमें कोई मछली नहीं थी और बाकी की पूँछा उसकी पानी के अन्दर ही रह गयी थी। बस अब तो वह एक बहुत ही छोटी सी पूँछ वाला जानवर रह गया था।

भालू को लोमड़े पर बहुत गुस्सा आया कि लोमड़े ने उसके साथ इतने नीच किस्म की यह चालाकी खेली।

उस दिन के बाद से भालू की पूँछ बढ़ी ही नहीं, वह उतनी की उतनी ही है। और तभी से वह जंगल में जब किसी से भी मिलता है तो उससे वह प्रेम का बर्ताव नहीं करता और हर एक पर गुर्राता ही रहता है।

3 एक लड़का और उत्तरी हवा[12]

एक बार की बात है कि नौर्वे देश में एक गरीब विधवा अपने बेटे के साथ रहती थी। एक दिन वह अपने बेटे से बोली — "बेटे, नीचे वाले कमरे[13] से ज़रा आखिरी आटा उठा लाओ ताकि मैं डबल रोटी बना दूँ।"

लड़का एक कटोरा ले कर आटा लाने के लिये नीचे वाले कमरे में गया। जैसे ही वह लड़का आटा ले कर उस कमरे से बाहर निकला तो उत्तरी हवा ने उसके साथ एक नीच चाल खेलने का निश्चय किया।

वह ज़ोर से बही, एक ज़ोर का हवा का झोंका आया और उसने वह आटा उड़ा कर उस लड़के के चेहरे पर और घर के बाहर बिखेर दिया।

वह लड़का बेचारा ऊपर आया और सब कुछ अपनी मॉ को बताया। उसने केवल उसको गले लगाया और बोली — "बेटे, मुझे नहीं मालूम अब मैं क्या करूँ क्योंकि अब तो हमारे पास खाने के लिये कुछ भी नहीं है।"

---

[12] The Boy and the North Wind – a folktale from Norway, Europe. Translated from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=118
Retold and written by Mike Lockett.

[13] Translated for the word "Cellar". Cellar is a room in the basement where normally liquor is kept. It is used as store room also in western houses.

उस लड़के की मॉ ने उसको इस तरह से बता कर बड़ा किया गया था कि अगर कभी किसी से कोई बुरा काम हो जाये तो उसको ठीक कर लेना चाहिये सो उसने सोचा कि उत्तरी हवा का यह बुरा काम ठीक करना चाहिये।

ऐसा सोच कर उसने तुरन्त ही घर छोड़ दिया और उत्तरी हवा ने जो आटा फैलाया था उसके पीछे पीछे चल दिया। वह लड़का चलता रहा, चलता रहा, चलता रहा जब तक कि वह उत्तरी हवा के घर तक नहीं पहुॅच गया।

लड़के ने उत्तरी हवा को नमस्ते की और उससे बोला — "मुझे मालूम है कि तुमने मेरे साथ अभी अभी एक चाल खेली है पर देखो, मैं और मेरी मॉ बहुत गरीब हैं।

तुमने हमारा आखिरी आटा उड़ा दिया है और अब हम लोग भूखे हैं। तुमको अपने इस काम को ठीक करना चाहिये और हमारा आटा हमें वापस दे देना चाहिये।"

उत्तरी हवा को यह सब सुन कर बहुत बुरा लगा कि उसने एक गरीब मॉ और बेटे को तंग किया।

वह बोला — "बच्चे, मुझे अपने इस काम का बहुत अफसोस है। मैं तुम्हारा आटा तो तुमको वापस नहीं दे सकता पर इसके बजाय मैं तुमको एक और अच्छी चीज़ देता हूॅ।"

सो उसने एक कपड़ा निकाला और उस लड़के को देते हुए कहा — "लो यह लो। यह एक खास कपड़ा है। इसको किसी मेज पर बिछाना और इससे कहना "बिछ जा ओ कपड़े बिछ जा।" बस तुमको खाने की कभी कमी नहीं रहेगी।"

लड़के ने उत्तरी हवा को धन्यवाद दिया और उस कपड़े को अपनी बगल में दबा कर घर वापस चल दिया। वह बहुत देर तक चलता रहा पर फिर रात हो गयी तो वह रात को सोने के लिये एक सराय में रुक गया।

सराय के मालिक ने पूछा — "तुम इस सराय का किराया कैसे दोगे जबकि तुम कहते हो कि तुम्हारे पास न खाने के लिये पैसे हैं और न सोने के लिये?"

लड़के ने उत्तरी हवा का दिया हुआ कपड़ा मेज पर बिछाया और बोला — "बिछ जा ओ कपड़े बिछ जा।"

और देखते ही देखते वह मेज बहुत ही स्वादिष्ट खाने और पीने के सामान से भर गयी। उस समय उस मेज पर उस सराय में हर रहने वाले के लिये काफी खाना था।

यह देख कर सराय के मालिक ने उसे सोने के लिये अपना कमरा दे दिया। रात को वह उस लड़के के कमरे में चुपके से घुसा और उसका वह जादुई मेजपोश उठा कर उसकी जगह ठीक वैसा ही एक मेजपोश रख दिया और कमरे में से निकल आया।

सुबह उठ कर लड़का अपने घर चला आया। घर आ कर उसने वह मेजपोश अपनी मॉ को दिखाया और अपनी मॉ को अपनी अच्छी किस्मत के बारे में बताया।

फिर वह मेजपोश मेज पर फैला कर बोला — "बिछ जा ओ कपड़े बिछ जा।" पर वहॉ तो कुछ भी नहीं हुआ।

मॉ बोली — "बेटा, तुमको धोखा दिया गया है।"

उस लड़के को इस तरह से बता कर बड़ा किया गया था कि अगर किसी से कभी कोई बुरा काम हो जाये तो उसको ठीक कर लेना चाहिये सो उसने सोचा कि उस उत्तरी हवा को एक मौका और देना चाहिये कि वह अपना बुरा काम ठीक कर ले।

सो वह फिर उत्तरी हवा के पास चल दिया। वहॉ जा कर वह बोला — "वह कपड़ा जो तुमने मुझे दिया है वह तो काम नहीं करता। मैं जानता हूॅ कि तुम मुझे और मेरी मॉ को भूखा नहीं देख सकते पर तुमको अपना काम भी ठीक से करना चाहिये इसलिये तुम हमारा आटा वापस कर दो।"

उत्तरी हवा बोला — "मैं तुम्हारा आटा तो वापस नहीं कर सकता पर मैं तुमको एक और अच्छी चीज़ देता हूॅ।"

कह कर उत्तरी हवा ने उस लड़के को एक खास बकरी दी और कहा — "देखो यह बकरी पैसे देती है। बस तुमको इतना कहना है कि "बकरी, बकरी, पैसे दो।" और तुम्हारे पास तुम्हारी जरूरतों को पूरा करने के लिये काफी पैसा आ जायेगा।"

लड़के ने उत्तरी हवा को धन्यवाद दिया और उस बकरी को ले कर घर चल दिया। रात को आराम करने के लिये वह फिर उसी सराय में ठहरा।

सराय के मालिक ने पूछा कि तुम इस सराय के पैसे कैसे दोगे? तुम्हारे पास तो न खाने के लिये पैसे हैं और न सराय में ठहरने के लिये।

लड़का सराय के बाहर गया जहॉ उसकी बकरी बॅधी हुई थी। उसने उससे कहा — "बकरी, बकरी, पैसे दो।"

बकरी ने एक डकार ली और उसके मुॅह से बहुत सारे सिक्के गिर पड़े। सराय के मालिक ने जब यह सब देखा तो रात को उस लड़के के सो जाने के बाद उसकी बकरी को चुरा लिया और उसकी जगह दूसरी वैसी ही एक बकरी रख दी।

सुबह वह लड़का उठा और अपनी बकरी ले कर अपने घर चला गया। वहॉ जा कर उसने उस बकरी को अपनी मॉ को दिखाया और बोला — "बकरी, बकरी, पैसे दो।"

पर वहॉ तो कुछ भी नहीं हुआ। उसकी मॉ फिर बोली — "मुझे अफसोस है बेटा कि तुमको फिर से धोखा दिया गया है।"

उस लड़के की मॉ ने उसको इस तरह से बता कर बड़ा किया गया था कि अगर कभी किसी से कोई बुरा काम हो जाये तो उसको ठीक कर लेना चाहिये सो उसने सोचा कि उस उत्तरी हवा को एक मौका और देना चाहिये ताकि वह अपना बुरा काम ठीक कर ले।

सो वह फिर एक बार उत्तरी हवा के पास चल दिया। वहॉ जा कर उसने उत्तरी हवा से कहा — "तुम्हारी बकरी पैसे नहीं देती। मुझे मालूम है कि तुम मुझे और मेरी मॉ को भूखा नहीं देखना चाहते इसलिये तुमको अपना काम तो कम से कम ठीक से करना चाहिये और हमारा आटा वापस कर देना चाहिये।"

उत्तरी हवा फिर बोला — "मैं तुम्हारा आटा तो वापस नहीं कर सकता पर मैं तुमको एक और अच्छी चीज़ देता हूॅ।"

अबकी बार उत्तरी हवा ने लड़के को एक डंडा दिया और बोला — "यह डंडा तुम्हारी हर परेशानी को हमेशा के लिये दूर कर देगा। जब तुम यह कहोगे "मारो डंडे मारो।" तो यह वही करेगा जो इसको करना है। जब तुम इसको रोकना चाहो तो इसको बोलना — "रुक जाओ ओ डंडे, रुक जाओ।"

लड़के ने उत्तरी हवा को धन्यवाद दिया और वह डंडा ले कर अपने घर चल दिया। वह आराम करने के लिये फिर उसी सराय में रुका।

इस बार सराय के मालिक ने उस लड़के से यह नहीं पूछा कि वह उसको पैसे कैसे देगा। उसने लड़के को ठीक से खिलाया पिलाया और अपने कमरे में सुला दिया।

काफी रात गये वह उस लड़के के कमरे में आया और उसकी जादू की डंडी से अपनी डंडी बदलने लगा पर इस बार वह लड़का जाग गया और उस डंडी से बोला — "मारो डंडे मारो।"

वह डंडी हवा में उड़ी और सराय के मालिक को मारने लगी। वह तब तक उसको मारती रही जब तक उसने यह नहीं कह दिया कि उसी ने उसके मेजपोश और बकरी चुराये थे और अब वह उनको वापस कर देगा।

तब लड़का बोला — "रुक जाओ ओ डंडे, रुक जाओ।"

उसके ऐसा कहते ही वह डंडा रुक गया और फिर वह सराय का मालिक वह मेजपोश और बकरी लाने चला गया। वे दोनों चीज़ें ला कर उसने उस लड़के को दे दीं।

लड़के ने अपना जादुई मेजपोश, बकरी और डंडा लिया और अपने घर चला गया।

अब उसके और उसकी मॉ के पास कभी खाने की कमी नहीं रही, कभी पैसे की कमी नहीं रही और जब भी कोई उनके साथ खराब काम करता तो उसके लिये उनके पास उसको सजा देने के लिये डंडा था।

4 काली कठफोड़वा[14]

एक बार की बात है कि एक काली कठफोड़वा चिड़िया[15] नौर्वे के एक गॉव में अकेली रहती थी। उसको अकेले रहने की जरूरत तो नहीं थी पर वह अकेली ही रहती थी और यह उसकी अपनी गलती थी।

उस छोटे से गॉव में बहुत सारे परिवार रहते थे। इसके अलावा और भी बहुत सारे लोग रोज उस गॉव से गुजरते थे पर जब भी कोई उस चिड़िया से कोई मीठी बात करने की कोशिश करता तो वह छोटी बूढ़ी चिड़िया अपना सफेद ऐप्रन हिला हिला कर उनको भगा देती।

और अगर उसकी यह तरकीब काम नहीं करती तो वह अपनी खिड़की पर चम्मच या डंडी से मार मार कर टप टप कर के इतना शोर मचाती कि वे उस शोर के डर से वहॉ से अपने आप ही भाग जाते।

---

[14] The Gertrude Bird – a folktale from Norway, Europe. Translated from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=118
Retold and written by Mike Lockett.
This story fits story where an unkind person is turned into an animal. One of its other versions is told in England as “Baker’s Daughter”.
[“Baker’s daughter” or “Baker Ki Betee” in Hindi, has been published in the book “Britain Ki Lok Kathayen-2” by Sushma Gupta in Hindi Language.
Besides “Gertrude Bird” tale has been given on the web page of the same author Mike Lockett http://www.mikelockett.com/popstory.php?id=170 too.

[15] Translated for the word “Gertrude” bird. It is like woodpecker bird. See its picture above.

जब बच्चे उसके घर खेलने के लिये आते तो वह एक डंडी उठाती अपने घर के एक तरफ ज़ोर ज़ोर से मारती – टप टप टप टप, और कहती कि "जाओ भाग जाओ यहॉ से। काली कठफोड़वा कहती है कि मेरे घर से भाग जाओ।"

और बच्चे बेचारे वहॉ से चले जाते।

यह बहुत बुरी बात थी पर सच्ची बात तो यह थी कि वह काली कठफोड़वा केक बहुत ही अच्छे बेक[16] करती थी। वह खाने के लिये बहुत छोटे छोटे स्वदिष्ट केक बनाती थी।

उन केक को बना बना कर वह अपने घर की खिड़की पर ठंडा होने के लिये रख देती थी। जो भी उधर से गुजरता उसको उन केक की बहुत अच्छी खुशबू आती सो वह उस खिड़की के पास ही उनकी खुशबू सूँघने के लिये वहॉ रुक जाता।

पर वह चिड़िया अपनी चम्मच उस खिड़की पर मारती – टप टप टप टप और बोलती — "भाग जाओ यहॉ से। ये केक मेरे लिये हैं।"

एक दिन उस काली कठफोड़वा ने अपनी काली पोशाक पहनी और उसके ऊपर अपना सफेद ऐप्रन[17] लगाया। फिर उसने अपनी रसोई में जा कर बहुत अच्छी केक बनाने के लिये आटा लगाया और उसको उसने केक बनाने के लिये ओवन में रखा।

---

[16] Baking is different from frying, roasting etc processes of cooking food. Baking is done in oven. Baking is very common and normal practice in western countries.

[17] Apron – a piece of cloth worn over the dress to save one's dress from being spoiled while cooking.

जब केक बन गया तो उसने उसको निकाला और रोज की तरह उसको ठंडा करने के लिये खिड़की पर रख दिया। और रोज की तरह लोग उस केक की खुशबू सूँघने के लिये वहाँ रुक गये।

चिड़िया ने फिर अपनी खिड़की पर टप टप टप टप किया और उन लोगों से कहा — "जाओ जाओ, यहाँ से जाओ। यह केक मेरे लिये है।" तो उनमें से जो बड़े और समझदार लोग थे वे वहाँ से पहले ही चले गये।

उसने फिर घर के बाहर टप टप टप टप की और अबकी बार बच्चों को वहाँ से भाग जाने को कहा। बच्चे भी बेचारे वहाँ से दुखी हो कर चले गये।

वह चिड़िया फिर वहाँ अकेली रह गयी सिवाय एक बूढ़े आदमी के। यह बूढ़ा आदमी कोई अजनबी था। उस बूढ़े को उसने पहले कभी नहीं देखा था।

उसने अपनी चम्मच से अपनी बेकिंग तश्तरी पर फिर से टप टप टप टप की और उस बूढे से बोली — "जाओ यहाँ से। तुमने सुना नहीं क्या? यह केक केवल मेरे लिये है।"

वह बूढ़ा बोला — "ओ मेहरबान बूढ़ी स्त्री।" बूढ़े ने उसको नर्मी से पुकारा क्योंकि वह तो बिल्कुल भी मेहरबान नहीं थी।

वह बोला — "तुम्हारी केक की खुशबू सूँघ कर तो मैं यहाँ खड़े बिना नहीं रह सका। अगर तुम अपनी केक में से थोड़ा सा केक मेरी भूख मिटाने के लिये मुझे दे दोगी तो मैं यहाँ से चला जाऊँगा।"

वह बूढ़ी चिड़िया बोली — "यह केक केवल मेरे लिये है ओ बूढ़े। इसको मैं किसी को नहीं दे सकती। चले जाओ यहॉ से।"

बूढ़ा बोला — "किसी अजनबी को भूखे वापस भेज देना बहुत अपशकुन होता है। मैं जरूर चला जाऊँगा पर पहले तुम मुझे एक टुकड़ा केक का दे दो।"

यह सुन कर बूढ़ी चिड़िया बोली — "ठीक है पर यह केक तुम्हारे लिये बहुत बड़ा है। मैं तुम्हारे लिये दूसरा छोटा केक बनाती हूँ। तब तक तुम अन्दर आ जाओ और आ कर यहॉ आग के पास बैठो।" सो वह बूढ़ा अन्दर आ गया और अन्दर आ कर आग के पास बैठ गया।

तब तक उस चिड़िया ने एक छोटा से केक का आटा बनाया और उसको बेक होने के लिये ओवन में रख दिया। पर जब वह केक बन गया तो उसने देखा कि वह केक तो उस पहले वाले केक से भी बड़ा था जो उसने अपने लिये बनाया था।

वह बोली — "अरे यह केक तो तुम्हारे लिये बहुत ही बड़ा है सो यह केक भी मेरा ही है। मैं तुम्हारे लिये और दूसरा छोटा केक बनाती हूँ।" यह कह कर वह उस बूढ़े के लिये एक और छोटा केक बनाने में लग गयी।

वह बूढ़ा वहीं आग के पास बैठा इन्तजार करता रहा। इस बार उसने पहले से भी बहुत थोड़ा आटा लिया और उसका केक बनाया। पर इस बार भी जब उसका यह केक बन गया तो उसने

देखा कि वह केक तो उसके पहले और दूसरे केक से भी बहुत बड़ा था।

बूढ़ी चिड़िया को यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ। वह उस केक को देखते हुए बोली — "यह केक तो तुम्हारे लिये बहुत ही बड़ा है। तुम अभी और इन्तजार करो, मैं तुम्हारे लिये एक छोटा केक बनाती हूँ।"

यह कह कर उसने अपना सबसे छोटा कटोरा लिया, और उसमें सबसे कम आटा बनाया, और उसको अपने सबसे छोटे केक बनाने के बर्तन में रख कर ओवन में रख दिया।

पर जब वह केक बन गया तो उस बूढ़ी चिड़िया ने देखा तो वह तो उसका सबसे बड़ा केक था।

उसने अपने केक बनाने वाले बर्तन पर अपनी चम्मच मारी – टप टप टप टप, और बोली — "मैंने तुमसे कहा था न कि तुम चले जाओ यहाँ से। यह केक भी मेरा है। तुम्हारे लिये यहाँ कोइ केक वेक नहीं है।"

वह अजनबी उठ कर जाने लगा और बोला — "मैंने भी कहा था न कि अजनबी को भूखे जाने देना अपशकुन होता है। मैं बूढ़े के रूप में एक परी हूँ। मुझे वे दयावान लोग पसन्द हैं जो एक दूसरे के साथ अच्छा बर्ताव करते हैं। मुझे मतलबी लोग अच्छे नहीं लगते।

मैं इस उम्मीद में था कि एक दिन तुम अपने केक दूसरों के साथ बॉटोगी, तुम्हारे केक को इतना स्वादिष्ट बनाने के लिये मैं बहुत दिनों तक अपना जादू इस्तेमाल करता रहा पर तुमने तो किसी को एक छोटा सा केक भी नहीं दिया। अब तुम अपने केक अपने आप खाओ और आगे से अब तुम कोई केक नहीं बना पाओगी।"

यह कह कर वह अजनबी गायब हो गया।

वह काली कठफोड़वा अपने केक खाने के लिये मेज पर बैठी तो जैसे ही उसने केक उठाने के लिये अपने हाथ बढ़ाये तो उसने देखा कि खाने के लिये तो उसके हाथ ही नहीं थे।

उसने शीशे में देखा तो उसको तो लाल सिर वाला एक कठफोड़वा[18] दिखायी दिया। उसका लाल सिर था, काला शरीर था और उसके शरीर का आगे का हिस्सा सफेद था। लगता था जैसे कि उसने ऐप्रन पहन रखा हो।

अब जब भी कभी तुम लाल सिर वाला कठफोड़वा देखो तो तुम सोच सकते हो कि वह काली कठफोड़वा सफेद ऐप्रन पहने कैसी लगती थी।

इसके अलावा तुम आज भी सब कठफोड़वाओं को टप टप टप टप की आवाज करते पाओगे। ये आवाजें उसके लकड़ी पर अपनी चोंच मारने से आती हैं जब वह खाने के लिये उनमें से कीड़े ढूँढने की कोशिश करते हैं।

[18] Translated for the word "Woodpecker".

क्योंकि अब उसके लिये कोई केक तो है नहीं क्योंकि अब उसके हाथ नहीं हैं और हाथ न होने की वजह से वह न तो अब केक बना सकती है और न ही खा सकती है।

5 गरट्रूड की चिड़िया[19]

नौर्वे देश की यह लोक कथा इससे पहले वाली लोक कथा "काली कठफोड़वा" जैसी ही है।

यह उन दिनों की बात है जब अपने मालिक[20] और सेन्ट पीटर धरती पर घूमा करते थे। घूमते घूमते वे एक दिन एक बुढ़िया के घर आये जिसके सिर के बाल लाल थे। उस बुढ़िया का नाम गरट्रूड था।

वे बहुत देर से घूम रहे थे सो वे बहुत थके हुए थे और भूखे भी थे। उन्होंने उससे अपनी भूख मिटाने के लिये उस बुढ़िया से बैनौक[21] माँगा तो उसने थोड़ा सा आटा लिया और उसको मल कर बेला तो वह तो बढ़ता ही बढ़ता ही गया और बहुत बढ़ गया।

उसने सोचा कि वह तो उन दोनों के लिये बहुत बड़ा बैनौक था इतना बड़ा बैनौक तो उनको उसे देना नहीं चाहिये सो उसने फिर और बहुत ही थोड़ा सा आटा लिया और जब उसको बेला तो वह भी उतना ही बड़ा हो गया।

---

[19] Gertrude's Bird – a folktale from Norway, Europe. Translated from the Web Site : http://www.surlalunefairytales.com/oldsite/authors/asbjornsenmoe/gertrudesbird.html by Peter Christen Asbornsen and Jorgrn Moe.
[Its similar folktale is "The Baker's daughter" (Baker Ki Beti) told and heard in England. It is given in the book "Britain Ki Lok Kathayen-2" by Sushma Gupta in Hindi language. And "Gertrude Bird" – another folktale is given here as its previous folktale.]

[20] Translated for the words "Our Lord"

[21] Bannock - Bannock is a variety of flat quick bread or any large, round article baked or cooked from grain. When a round bannock is cut into wedges, the wedges are often called scones.

उसने सोचा कि यह बैनौक भी वह उनको नहीं देगी क्योंकि यह भी इनके लिये बहुत बड़ा है।

उसने फिर तीसरी बार आटा लिया। अबकी बार वह आटा इतना कम था कि कोई दूसरा उसको देख भी नहीं सकता था। पर इसके साथ भी वही हुआ जो पहले दो आटों के साथ हुआ था। यह भी बढ़ कर बहुत बड़ा हो गया।

आखिर थक हार कर गरट्रूड बोली — "अफसोस मैं तुमको कुछ नहीं दे सकती। तुमको बिना बैनौक के ही जाना पड़ेगा क्योंकि ये सारे बैनौक बहुत बड़े बड़े हैं।"

यह सुन कर मालिक का गुस्सा बढ़ गया। वह बोले — "क्योंकि तुम मुझे प्यार नहीं करती, तुम मेरे एक एक कौर पर लालच करती हो, तुमको इसकी सजा जरूर मिलेगी।

तुम एक चिड़िया बन जाओगी और अपना खाना पेड़ की छाल और उसके तने के बीच में ढूँढोगी। और तुमको सिवाय बारिश के और कभी पानी नहीं मिलेगा।"

उन्होंने अपना आखिरी शब्द कहा ही था कि वह बुढ़िया एक काली कठफोड़वा में बदल गयी और अपनी रसोईघर की चिमनी से बाहर की तरफ उड़ गयी।

तुम उसे आज तक उड़ता हुआ देख सकते हो। उसके सिर पर अभी भी लाल बाल हैं और उसका सारा

शरीर काला है। क्योंकि वह चिमनी से हो कर उड़ी थी इसलिये उसके सारे शरीर पर चिमनी की कालिख लग गयी है।

मालिक के कहे अनुसार अब वह अपना खाना पेड़ की छाल और उसके तने के बीच में से ढूँढती रहती है। इसके लिये वह हमेशा वहाँ अपनी चोंच से टप टप करती रहती है।

जब बारिश आती है तो वह सीटी बजाती है क्योंकि वह हमेशा प्यासी रहती है और अपनी प्यास बुझाने के लिये पानी की एक एक बूँद का इन्तजार करती रहती है।

6 बागीचे में बकरियॉ[22]

एक बार नौर्वे में एक परिवार रहता था। उनके एक बेटा था जिसका नाम था जौनी[23]। परिवार की बकरियों की देखभाल करना जौनी का खास काम था। उनके पास तीन बकरियॉ थीं।

वह रोज सुबह उन बकरियों को दुह कर उनका दूध निकालता था और फिर उनको पहाड़ों की तरफ हॉक कर ले जाता था जहॉ वे सारा दिन घास चरती रहतीं। शाम को वह उनको वापस घर ले आता और फिर उनका दूध निकालता था।

वैसे तो वे बकरियॉ ठीक से ही रहती थीं पर एक दिन एक दादी के बागीचे का दरवाजा खुला था सो उसकी तीनों बकरियॉ उस दादी के बागीचे में घुस गयीं और उन्होंने दादी के शलगमों[24] के सारे पत्ते खाने शुरू कर दिये।

"ओह यह नहीं हो सकता।" कहते हुए जौनी ने एक डंडी उठायी और उससे उनको दादी के बागीचे से बाहर निकालना शुरू कर दिया। पर बकरियॉ तो वहॉ से बाहर निकलने का नाम ही नहीं

[22] The Goats in the Garden – a folktale from Norway, Europe. Translated from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=231
Retold and written by Mike Lockett.

[23] Johnny – name of the boy

[24] Translated for the word "Turnips". See its picture above.

ले रही थीं वे तो बस चारों तरफ घूम घूम कर उसके बागीचे में लगी शलगमों की पत्तियॉ ही खाये जा रही थीं।

जब जौनी कुछ नहीं कर सका तो वह रुक गया और थक हार कर बैठ गया। बकरियॉ वे पत्ते खाती रहीं और जौनी ने वहॉ बैठे बैठे रोना शुरू कर दिया।

तभी सड़क पर एक लोमड़ी आयी। उसने जौनी से पूछा — "तुम क्यों रो रहे हो जौनी भाई?"

जौनी बोला — "मैं इसलिये रो रहा हूॅ क्योंकि मेरी ये बकरियॉ दादी के बागीचे में घुस कर उनके पत्ते खा रही हैं और मैं उनको उसके बागीचे से बाहर नहीं निकाल पा रहा हूॅ।"

लोमड़ी बोली — "अच्छा, तुम यहीं बैठो, मैं उनको बागीचे में से बाहर निकालने की कोशिश करती हूॅ।" यह कह कर वह लोमड़ी बागीचे के अन्दर घुस गयी औ उन बकरियों को बाहर की ओर निकालने की कोशिश करने लगी।

पर वे बकरियॉ तो बागीचे के बाहर निकल ही नहीं रही थीं। वे चारों तरफ भागती रहीं पर बाहर नहीं निकलीं। आखिर लोमड़ी भी थक कर बैठ गयी। जब लोमड़ी बैठ गयी तो बकरियों ने दादी के पौधे फिर से खाने शुरू कर दिये।

इधर लोमड़ी भी जौनी के पास बैठ गयी और रोने लगी। तभी सड़क पर एक कुत्ता आया। उसने उन दोनों से पूछा — "तुम लोग क्यों रो रहे हो जौनी भाई और लोमड़ी बहिन?"

लोमड़ी बोली — "मैं इसलिये रो रही हूँ क्योंकि जौनी रो रहा है, और जौनी इसलिये रो रहा है क्योंकि उसकी बकरियाँ दादी के बागीचे में घुस गयीं हैं और हम उनको बाहर नहीं निकाल पा रहे हैं।"

कुत्ता बोला — "अच्छा, तो तुम लोग यहीं बैठो, मैं उनको बागीचे में से निकालने की कोशिश करता हूँ।"

यह कह कर वह कुत्ता बागीचे के अन्दर घुस गया और उन बकरियों को बाहर की ओर निकालने की कोशिश करने लगा।

पर वे बकरियाँ तो बागीचे के बाहर निकल ही नहीं रही थीं। वे फिर चारों तरफ भागती रहीं और दादी के बागीचे में लगी शलगमों की पत्तियाँ खाती रहीं।

कुत्ता भी आखिर थक कर बैठ गया। जब कुत्ता बैठ गया तो बकरियों ने दादी के पौधे फिर से खाने शुरू कर दिये।

सो कुत्ता भी लोमड़ी और जौनी के पास बैठ गया और उसने भी रोना शुरू कर दिया। तभी सड़क पर एक खरगोश आता दिखायी दिया। उसने जब तीनों को रोता देखा तो उनसे पूछा — "तुम सब क्यों रो रहे हो जौनी भाई, लोमड़ी बहिन और कुत्ते भाई?"

कुत्ता बोला — "मैं इसलिये रो रहा हूँ क्योंकि लोमड़ी रो रही है, और लोमड़ी इसलिये रो रही है क्योंकि जौनी रो रहा है और

जौनी इसलिये रो रहा है क्योंकि उसकी बकरियॉ दादी के बागीचे में घुस गयीं हैं और हम उनको बाहर नहीं निकाल पारहे हैं।"

खरगोश बोला — "अच्छा, तो तुम लोग यहीं बैठो, मैं उनको बागीचे में से बाहर निकालने की कोशिश करता हूॅ।"

यह कह कर वह खरगोश बागीचे के अन्दर घुस गया और उन बकरियों को बाहर की ओर निकालने की कोशिश करने लगा।

पर बकरियॉ थीं कि बागीचे के बाहर निकलने का नाम ही नहीं ले रहीं थीं। वे चारों तरफ भागती रहीं पर बागीचे के बाहर नहीं निकलीं।

आखिर खरगोश भी थक कर बैठ गया। जब खरगोश बाहर आ कर बैठ गया तो बकरियों ने दादी के पौधे फिर से खाने शुरू कर दिये।

खरगोश भी कुत्ता, लोमड़ी और जौनी के पास आ कर बैठ गया और उसने भी रोना शुरू कर दिया। तभी एक मधुमक्खी उधर से गुजरी तो उसने जब इन चारों को रोते देखा तो पूछा — "तुम सब क्यों रो रहे हो?"

खरगोश बोला — "मैं इसलिये रो रहा हूॅ क्योंकि कुत्ता रो रहा है। कुत्ता इसलिये रो रहा है क्योंकि लोमड़ी रो रही है, और लोमड़ी इसलिये रो रही है क्योंकि जौनी रो रहा है और जौनी इसलिये रो रहा है क्योंकि उसकी बकरियॉ दादी के बागीचे में घुस गयीं हैं और हम सब उनको बाहर नहीं निकाल पा रहे हैं।"

मधुमक्खी हॅसी और बोली — "अच्छा, तुम सब यहीं बैठो, मैं उनको बागीचे में से बाहर निकालने की कोशिश करती हूॅ।"

यह सुन कर खरगोश बोला — "तुम? इतनी छोटी सी इन बकरियों को बाहर निकालोगी? जब हम सब यानी मैं, कुत्ता, लोमड़ी और जौनी मिल कर भी इनको बाहर नहीं निकाल सके तो तुम इतनी छोटी सी इनको बाहर कैसे निकालोगी?"

मधुमक्खी बोली — "तुम बस देखते जाओ।" यह कह कर वह मक्खी उस बागीचे में उड़ी और उन बकरियों में से सबसे बड़ी बकरी के कान में जा कर घुस गयी।

उस बकरी ने अपना सिर ज़ोर ज़ोर से हिलाया ताकि वह उस मक्खी को अपने कान के बाहर निकाल सके तब तक वह मक्खी उस बकरी के दूसरे कान में जा कर घुस गयी। आखिर वह बकरी तंग हो कर बागीचे के दरवाजे से बाहर की तरफ भागने लगी।

वह मक्खी फिर दूसरी बकरी के एक कान में घुस गयी और फिर उसके दूसरे कान में घुस गयी और उसको वह जब तक तंग करती रही जब तक कि वह भी बागीचे के दरवाजे के बाहर की ओर नहीं भाग गयी।

यही उसने तीसरी बकरी के साथ भी किया और इस तरह उस ने तीनों बकरियों को दादी के बागीचे से बाहर निकाल दिया।

जौनी बोला — "बहुत बहुत धन्यवाद तुम्हारा ओ छोटी मक्खी।" और वह पहाड़ों की तरफ अपनी बकरियों की देखभाल करने के लिये दौड़ गया जैसे वह रोज करता था।

इस कथा से हमें यह सीख मिलती है कि कोई काम करने के लिये किसी आदमी या जानवर का साइज़ मायने नहीं रखता उसकी अक्ल मायने रखती है। अक्लमन्द की हमेशा जीत होती है।

7 तीन बिल्ली बकरे ग्रफ़[25]

यह कहानी एक पहाड़ी के ऊपर से शुरू होती है। वहाँ हवा बहुत तीखी और ठंडी थी। आसमान बिल्कुल साफ और नीला था। हरे हरे घास के मैदानों में हवा के चलने से घास इधर उधर हिल रही थी।

उस पहाड़ी के ऊपर तीन बिल्ली बकरे रहते थे – एक सबसे बड़ा, एक बीच का और एक सबसे छोटा।

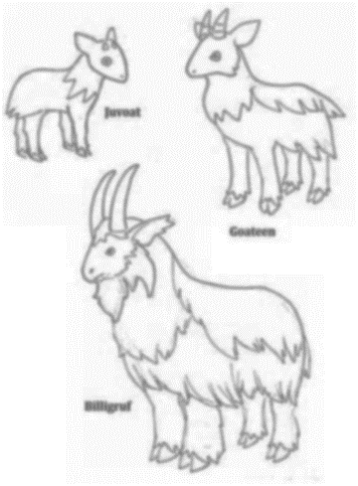

उस दिन बड़े वाले बिल्ली बकरे का मन नहीं लग रहा था तो वह अपने दोनों छोटे भाइयों से बोला — "मैं रोज रोज उसी मैदान में से खाना खाते खाते थक गया हूँ। मैं उस नदी के उस पार वाले मैदान में से खाना खाना चाहता हूँ।"

छोटा भाई बोला — "नहीं बड़े बिल्ली भाई, हम लोग उस नदी को पार नहीं कर सकते। वह नदी तो बहुत गहरी है और उसका बहाव भी बहुत ज़्यादा है। हम लोग तो उसमें बह जायेंगे।"

बीच वाला भाई बोला — "इसके अलावा हम लोग पुल पर से भी नहीं जा सकते बड़े भाई। क्योंकि उस पुल के नीचे एक बहुत

[25] Three Billy Goats Gruff – a folktale from Norway, Europe. Translated from the Web Site : http://americanfolklore.net/folklore/2010/10/three_billy_goats_gruff.html
retold by SE Schlosser.

बड़ा ट्रौल[26] रहता है। अगर हम लोग उस पुल के ऊपर से जायेंगे तो वह हमको खा जायेगा।"

बड़े बिल्ली बकरे ग्रफ़ ने अपने बड़े बड़े गोल सींगों वाला सिर इधर उधर हिलाते हुए कहा — "मैं उस ट्रौल से नहीं डरता।" कह कर उसने जमीन पर अपना बड़े खुर वाला पैर पटका – एक बार, दो बार, तीन बार।

वह फिर बोला — "उसको मुझे खाने के लिये आने तो दो फिर हम देखते हैं कि कौन जीतता है।"

बीच वाला बकरा बोला — "पर जब वह तुमको खाने के लिये वहॉ आयेगा तो हम लोग तो उसको देखने के लिये वहॉ होंगे नहीं क्योंकि वह हम दोनों को तो पहले ही खा चुका होगा।"

बड़ा बकरा घास के मैदान में चारों तरफ नाचता हुआ चिल्लाया — "नहीं, ऐसा नहीं होगा छोटे भाई। तुम देखना ऐसा नहीं होगा।"

उसके बड़े बड़े खुरों ने उस घास के मैदान में नाचने से बड़े बड़े गड्ढे बना दिये थे। वह बोला — "मेरे दिमाग में एक प्लान है।"

सो तीनों बकरों ने अपने सिर एक साथ मिलाये और आपस में एक दूसरे से बहुत देर तक फुसफुसा कर बात करते रहे फिर उठे

[26] A troll is a supernatural being in Norse mythology and Scandinavian folklore. In origin, troll may have been a negative being in Norse mythology. In Old Norse sources, beings described as trolls dwell in isolated rocks, mountains, or caves, live together in small family units, and are rarely helpful to human beings. See its picture above.

और उस चौड़े घास के मैदान को पार कर के पुल की तरफ चल दिये।

यह पुल उस तेज़ बहने वाली नदी के ऊपर बना हुआ था जो उस घास के मैदान को दो हिस्सों में बॉटती थी – एक घास का मैदान उस पुल के इस तरफ था और दूसरा घास का मैदान उस पुल के दूसरी तरफ था।

छोटे बकरे ने हिम्मत के साथ एक लम्बी सॉस भरी और लकड़ी के उस ऊबड़ खाबड़ पुल पर अपना पैर रखा। जैसे जैसे वह उस पुल पर आगे की तरफ चलने लगा उसके छोटे छोटे खुर उस पुल को इधर उधर हिलाने लगे।

एक बड़ी गोल ऑखों के जोड़े ने पुल के नीचे से अँधेरे में से झॉका। वे ट्रौल की ऑखें थीं। ट्रौल बोला — "यह कौन है जो मेरे पुल पर से जा रहा है?"

और इसके बाद ही एक बालों वाली बॉह पुल के नीचे अँधेरे में से बाहर निकली और उसने पुल की रेलिंग पकड़ ली जो उस छोटे बकरे के पास ही थी।

वह छोटा बकरा अपनी छोटी सी आवाज में बोला — "यह मैं हूँ ट्रौल दादा, सबसे छोटा बिल्ली बकरा जिसमें केवल हड्डियॉ और खाल ही है। मैं मोटा होने के लिये उस पार वाले घास के मैदान में घास खाने जा रहा हूँ।"

तभी ट्रौल के दूसरे हाथ ने भी उस रेलिंग को पकड़ा और वह अपनी इतनी गहरी आवाज में बोला कि सारा का सारा पुल हिल गया — "मैं तुमको खाने आ रहा हूँ।"

छोटा बिल्ली बकरा यह सुन कर सिर से पैर तक कॉप गया पर फिर भी हिम्मत कर के बोला — "तुम मुझे खाने आ रहे हो? पर मैं तो बहुत छोटा हूँ। मैं तो तुम्हारे जितने बड़े ट्रौल के मुँह के लिये एक कौर के बराबर भी नहीं हूँ। तुम मेरे बड़े भाई के आने का इन्तजार करो। वह मेरे पीछे ही आ रहा है। वह मुझसे बहुत बड़ा है तुम उसको खा लेना।"

ट्रौल को यह बात कुछ ठीक सी लगी। इस छोटे से बकरे के पीछे क्यों लगना जबकि इससे बड़ा बकरा इसके पीछे आ रहा है।

सो ट्रौल चिल्लाया — "तो मेरे पुल से हट जाओ और यहॉ तब तक नहीं आना जब तक तुम बड़े और मोटे न हो जाओ।" और यह कह कर वह पुल के नीचे अँधेरे में खिसक गया।

छोटा बिल्ली बकरा बोला — "ठीक है जनाब। धन्यवाद।"

और अपनी जीत की खुशी मनाता हुआ पुल के पार दूसरे घास के मैदान में चला गया। वह खुश था कि उनका प्लान काम कर रहा था।

जब छोटा बिल्ली बकरा दूसरी तरफ पहाड़ी की चोटी पर पहुँच गया तब उनके बीच वाले भाई ने उस पुल पर अपना कदम रखा। उसके बीच के साइज के खुर उस पुल पर ट्रप ट्रप कर के आवाज

कर रहे थे और उसके कदमों से वह पुल इधर उधर हिल भी रहा था।

उसके खुरों की आवाज़ सुन कर एक बार फिर एक बड़ी गोल ऑखों के जोड़े ने पुल के नीचे के अँधेरे में से झॉका। वे ट्रौल की ऑखें थीं। ट्रौल बोला — "यह कौन है जो मेरे पुल पर से जा रहा है?"

और इसके बाद ही एक बालों वाली बॉह पुल के नीचे से अँधेरे में से बाहर निकली और उसने पुल की रेलिंग पकड़ ली जो उस बीच वाले बकरे के पास ही थी।

वह बीच वाला बकरा अपनी छोटी सी आवाज में बोला — "यह मैं हूँ बीच वाला बिल्ली बकरा ट्रौल दादा, जिसकी जाड़े की वजह से केवल हड्डियॉ और खाल ही रह गयी हैं। मैं मोटा होने के लिये पुल के उस पार वाले घास के मैदान में घास खाने जा रहा हूँ।"

ट्रौल की टेढ़ी मेढ़ी लम्बी नाक के दोनों तरफ दो जलती हुई अंगारे जैसी ऑखों ने पुल की रेलिंग के बीच से झॉका और वह बोला — "मैं तुमको खाने आ रहा हूँ ओ बिल्ली बकरे।" उसकी आवाज इतनी मोटी और भारी थी कि उससे सारा पुल हिल गया।

बीच वाला बकरा हँसा और बोला — "तुम मुझे खाने आ रहे हो? पर तुम मुझे क्यों खाना चाहते हो? मैं तो जाड़े की वजह से वैसे ही बहुत पतला हो रहा हूँ।

मैं तो तुम जैसे बड़े ट्रौल का केवल एक या दो कौर जितना बड़ा हूँ। तुमको मेरे बड़े भाई का इन्तजार करना चाहिये। वह मुझ से बहुत बहुत बड़ा है। उसको खा कर तुम्हारा पेट भर जायेगा।"

ट्रौल को यह बात कुछ ठीक सी लगी। उसने सोचा इस बीच वाले बकरे के पीछे भी क्यों लगना जबकि इससे बड़ा बकरा इसके पीछे आ रहा है।

सो ट्रौल चिल्लाया — "तो मेरे पुल से हट जाओ और यहाँ तब तक मत आना जब तक तुम बड़े और मोटे न हो जाओ।" और यह कह कर वह पुल से नीचे अँधेरे में खिसक गया।

छोटा बिल्ली बकरा बोला — "ठीक है जनाब मैं जा रहा हूँ।" और अपनी जीत की खुशी मनाता हुआ वह भी पुल के पार दूसरे घास के मैदान में चला गया।

वहाँ जा कर वह अपने छोटे भाई के पास पहुँच गया। वह भी खुश था कि उनका प्लान काम कर रहा था। वहाँ पहुँच कर दोनों पुल की तरफ यह देखने लगे कि देखें अब बड़े वाले बिल्ली बकरे पर क्या बीतती है।

अब बड़े बिल्ली बकरे ने लकड़ी के उस ऊबड़ खाबड़ पुल पर कदम रखा – टौम्प टौम्प। उसके बड़े बड़े खुरों ने उस पुल के तख्तों को झुकाना शुरू कर दिया और जैसे जैसे वह आगे बढ़ता गया उसके बोझ तले वह पुल चरचराने लगा।

एक बड़ी गोल ऑखों के जोड़े ने पुल के नीचे से अँधेरे में से झॉका। वे ट्रौल की ऑखें थीं। ट्रौल गरजा — "यह कौन है जो मेरे पुल पर से टौम्प टौम्प करता जा रहा है?"

यह कह कर वह एक ही कूद में उस पुल के ऊपर आ गया। उस बड़े और बालों वाले ट्रौल को देख कर बड़े बिल्ली बकरे ने अपनी ऑखें सिकोड़ी और बड़े आदर से अपना बड़ा सिर झुका कर बोला — "यह मैं हूँ ट्रौल जी।"

ऐसा करने से उसके दोनों बड़े सींग उस ट्रौल की तरफ हो गये और यह कह कर वह ट्रौल की तरफ दौड़ पड़ा। वह जा कर ट्रौल से टकरा गया। बड़े बकरे ने ट्रौल को अपने सींगों पर उठा लिया था। सीगों पर उठा कर उसने ट्रौल को ज़ोर से ऊपर उछाल दिया।

"आह।" ट्रौल चिल्लाया। उसके पुल पर से पैर उखड़ चुके थे और वह हवा में बहुत दूर ऊपर तक उछल चुका था।

वहॉ से वह सिर के बल पुल के ऊपर गिर पड़ा। इससे वह पुल ऊपर से ले कर नीचे तक ज़ोर की आवाज के साथ ज़ोर से हिल गया।

फिर बड़े बिल्ली बकरे ने ट्रौल के ऊपर अपने बड़े खुर ज़ोर ज़ोर से रखे जिससे ट्रौल पुल के लकड़ी के तख्तों पर कुचल गया। उसके बाद उसने उसको फिर अपने बड़े बड़े सींगों के ऊपर उठाया और अबकी बार उसने उसको उठा कर नीचे नदी में फेंक दिया।

पानी का बहाव तेज़ था। ट्रौल उस पानी में बहता हुआ दूर चला गया और फिर वहॉ कभी नहीं देखा गया। बड़ा बिल्ली बकरा भी पुल के पार उस घास के मैदान में जा कर अपने दोनों भाइयों से मिल गया।

अब वे तीनों भाई उस पुल पर से कभी भी आ जा सकते थे सो सारी गर्मियॉ तीनों भाइयों ने दोनों घास के मैदानों की घास खूब प्रेम से खायी।

इतनी बढ़िया और मुलायम घास खा खा कर तीनों भाई खूब मोटे हो गये और आराम से रहने लगे।

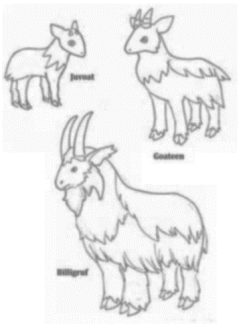

8 बारह जंगली बतखें[27]

एक बार की बात है कि नौर्वे देश की एक रानी अपनी स्ले[28] में बाहर घूम रही थी। उस दिन मौसम की पहली पहली बर्फ पड़ी थी। वह बर्फ उसको बहुत अच्छी लगी तो वह कुछ और आगे चली गयी।

आगे जा कर उसकी नाक से खून निकलने लगा सो उसको अपनी स्ले से बाहर निकलना पड़ा। जैसे ही वह बाहर निकली और अपनी स्ले के सहारे खड़ी हुई तो उसकी नाक से निकले खून की कुछ बूँदें बर्फ पर गिर पड़ीं।

उसको देखते ही रानी के मन में एक ख्याल आया कि काश मेरे एक बेटी होती जो बर्फ जैसी सफेद और खून जैसी लाल होती तो मैं अपने बेटों की भी चिन्ता नहीं करती।

इत्तफाक की बात कि ये शब्द उसके मुँह से अभी निकले भी नहीं थे कि एक बूढ़ी जादूगरनी उसके सामने आ कर खड़ी हो गयी

---

[27] The Twelve Wild Ducks – a fairytale from Norway, Europe. Taken from the Web Site : http://www.surlalunefairytales.com/oldsite/sixswans/stories/twelvewilducks.html
Collected by Christen Asbornson and Jorgen Moe in their "Norske Folkeeventyr" (Popular Tales from the Norse).
Translated by George Webbe Dasent. "East o' the Sun and the West o' the Moon". NY, Dover, 1970.
[It is like "Six Swans" story. Read this and other stories like this in the Book "Chhah Hans Jaisi Kahaniyan" written by Sushma Gupta in Hindi language.]

[28] Sleigh – a kind of light vehicle on runners, usually open and generally horse-drawn or very big dogs-drawn used especially for transporting persons over snow or ice. See its picture above

और बोली — "बेटी, तुम्हारे ऐसी एक बेटी जरूर होगी जैसी तुम चाह रही हो। वह बर्फ जैसी सफेद और खून जैसी लाल होगी।

लेकिन उसको बैप्टाइज़[29] करने के बाद तुम्हारे वे बेटे मेरे हो जायेंगे। सो तुम्हारे बेटे केवल तब तक ही तुम्हारे पास रहेंगे जब तक तुम अपनी बेटी को बैप्टाइज़ नहीं करतीं।"

कुछ समय बाद ही रानी के एक बेटी हुई। अब जैसा कि उस जादूगरनी ने कहा था वह बर्फ जैसी सफेद थी और खून जैसी लाल थी तो उसने उसका नाम "बर्फ जैसी सफेद और गुलाब जैसी लाल"[30] रख दिया।

बेटी के जन्म पर राजा के घर में बहुत खुशियॉ मनायी गयीं और रानी तो उसको देख कर बहुत ही खुश थी। पर जब उसको जादूगरनी की बात याद आयी कि "उसको बैप्टाइज़ कराने के बाद तुम्हारे वे बेटे मेरे हो जायेंगे।" तो उसने एक चॉदी का सामान बनाने वाले[31] को बुला भेजा।

रानी ने उस चॉदी का सामान बनाने वाले से कहा कि वह उस के बारह बेटों के लिये चॉदी की एक सी बारह चम्मच बना दे। फिर उसने वैसी ही एक और चम्मच भी बनवायी जो उसने अपनी बर्फ जैसी सफेद और गुलाब जैसी लाल राजकुमारी को दे दी।

[29] Baptization is a religious ceremony for Christians by which they make their children Christian.
[30] Snow-white and Rosy-red
[31] Translated for "Silversmith"

पर फिर हुआ वैसा ही जैसा कि जादूगरनी ने कहा था। जैसे ही राजकुमारी का बैप्टाइज़ेशन हुआ रानी के बारहों बेटे जंगली बतख बन कर उड़ गये। फिर राजा और रानी ने उनको कभी नहीं देखा। वे दूर चले गये और दूर ही रहे।

राजकुमारी धीरे धीरे बड़ी होने लगी। जब वह कुछ बड़ी हुई तो वह अक्सर उदास रहने लगी। किसी को यह पता नहीं चल सका कि वह उदास क्यों रहती है।

एक दिन रानी भी बहुत उदास हो गयी। जब भी वह अपने बेटों के बारे में सोचती तो अक्सर उदास हो जाती। एक दिन रानी ने अपनी बेटी से पूछा — "बेटी, तुम अक्सर उदास क्यों रहती हो? अगर तुम्हें कुछ चाहिये तो बताओ हम तुमको अभी ला देते हैं।"

बेटी बोली — "मॉ, यहॉ मुझे बहुत अकेला लगता है। सबके भाई बहिन हैं पर मेरे नहीं हैं। मैं बिल्कुल अकेली हूॅ इसी लिये मैं उदास रहती हूॅ।"

तब उसकी मॉ ने उसको उसके भाइयों के बारे में बताया — "बेटी, तुम्हारे भाई थे। और एक नहीं बारह भाई थे। मेरे बारह बेटे थे पर तुमको पाने के लिये मैंने उन सबको दे दिया।" और फिर उसने उसको सारी कहानी सुना दी।

कहानी सुनने के बाद तो राजकुमारी को बिल्कुल ही चैन नहीं था। रानी ने उसको तसल्ली देने के लिये बहुत कुछ समझाया पर वह तो रोती रही और भगवान से प्रार्थना करती रही।

कुछ देर बाद उसने मॉ से कहा कि वह अपने भाइयों को जरूर ढूँढेगी क्योंकि उसको लग रहा था कि उसी की वजह से उसके भाई घर से गये थे। और यह कह कर वह महल से निकल गयी।

वह चलती रही, चलती रही और इतना चली कि तुम लोग सोच भी नहीं सकते कि इतनी छोटी लड़की इतनी दूर चल सकती है।

एक बार वह एक बड़े से जंगल से गुजर रही थी कि उसको बहुत थकान लगी। वह वहीं घास पर बैठ गयी और सो गयी। उसने सपने में देखा कि वह जंगल में बहुत दूर तक चली गयी है। वहॉ उसने लकड़ी का एक मकान देखा और उसमें देखे अपने भाई। बस तभी उसकी ऑख खुल गयी।

ऑख खुलने पर उसने देखा कि घास में से हो कर एक बहुत ही कटा फटा रास्ता जंगल की तरफ चला जा रहा है। सपने को याद कर के वह उसी रास्ते पर चल दी। काफी दूर चलने पर वह वैसे ही लकड़ी के मकान तक आ पहुँची जैसा उसने सपने में देखा था।

वह उस घर के अन्दर घुस गयी पर वहॉ तो कोई था नहीं। हॉ वहॉ बारह पलंग बिछे थे, बारह कुर्सियॉ थीं, बारह चम्मचें थीं। यानी हर चीज़ दर्जन में थी।

यह देख कर वह बहुत खुश हुई। इतनी खुश तो वह पहले कभी नहीं हुई थी। उसको यकीन हो गया कि यही वह जगह थी

जहॉ उसके भाई थे और वे पलंग, कुर्सियॉ और चम्मच भी उन्हीं के थे।

वहॉ पहुॅच कर उसने आग जलायी, सब बिस्तर ठीक किये, शाम का खाना तैयार किया और जितना साफ वह कर सकती थी उस घर को उतना साफ किया।

खाना बनाने के बाद उसने अपना खाना खाया और अपने सबसे छोटे भाई के पलंग के नीचे जा कर सो गयी। पर खाना खाते समय वह अपनी चम्मच वहीं मेज पर भूल गयी।

वह अभी लेटी ही थी कि उसने हवा में पंख फड़फड़ाने की आवाज सुनी। उसने देखा कि बारह बतख उसी घर की तरफ उड़े चले आ रहे हैं। जैसे ही वे अन्दर घुसे वे राजकुमार बन गये।

घुसते ही उनके मुॅह से निकला — "अरे यहॉ तो बड़ा गरम हो रहा है। भगवान उसका भला करे जिसने हमारे लिये यह घर गरम कर के रखा है। और जिसने हमारे लिये यह खाना बनाया है।"

कह कर वे अपनी अपनी चॉदी की चम्मच से खाना खाने के लिये मेज पर बैठे। सबने अपनी अपनी चम्मच उठा ली पर फिर भी वहॉ एक चम्मच रखी रह गयी।

पर वह चम्मच उनकी चम्मच से इतनी मिलती थी कि उनमें से यह कोई नहीं बता सका कि वह चम्मच वहॉ किसकी रह गयी थी।

फिर वे बोले — "अरे यह तो हमारी बहिन की चम्मच है। पर अगर यह उसकी चम्मच है तो वह भी यहॉ से कहीं बहुत दूर नहीं होगी।"

सबसे बड़ा भाई बोला — "अगर यह उसकी चम्मच है तो वह यहीं है। उसको तो हमें मार देना चाहिये। क्योंकि वही हमारी सब मुसीबतों की जड़ है।" यह सब उस लड़की ने पलंग के नीचे लेटे लेटे सुना।

पर सबसे छोटा भाई बोला — "यह तो हमारे लिये बड़े शर्म की बात होगी अगर हम उसको इस छोटी सी बात पर मार देंगे। क्योंकि इसमें उसकी कोई गलती नहीं है। अगर किसी की गलती है तो वह हमारी अपनी मॉ की गलती है।"

उसके बड़े भाइयों की भी यह बात समझ में आ गयी सो फिर उन्होंने उसको ढूँढना शुरू किया। उन्होंने इधर देखा उधर देखा। फिर उन्होंने उसको पलंगों के नीचे देखना शुरू किया तो वह उनको सबसे छोटे भाई के पलंग के नीचे लेटी मिली।

उन्होंने उसको वहॉ से खींच लिया। उसका सबसे बड़ा भाई अभी भी उसको मारना चाहता था पर राजकुमारी ने उससे अपनी ज़िन्दगी की भीख मॉगी और प्रार्थना की कि वह उसको छोड़ दे।

वह बोली — "ओ मेरे अच्छे भाइयो, मेहरबानी कर के मुझे मत मारो। मैं तो तुम लोगों को तीन साल से ढूँढ रही हूँ और अगर

मैं तुम लोगों को इस ज़िन्दगी से अपनी जान दे कर भी आजाद कर पाऊँ तो मैं अपनी जान भी देने को तैयार हूँ।"

यह सुन कर उसके भाई बोले — "ठीक है। अगर तुम हमको इस ज़िन्दगी से छुटकारा दिला पाओ तो हम तुम्हारी ज़िन्दगी बख्शते हैं। क्योंकि अगर तुम चाहो तो तुम ही हमको इस ज़िन्दगी से छुटकारा दिला सकती हो।"

राजकुमारी बोली — "बस तुम मुझे यह बता दो कि यह सब कैसे होगा। मैं उसे कर दूँगी वह काम चाहे कुछ भी हो।"

फिर उसके भाइयों ने उसको बताया — "हम अपनी इस ज़िन्दगी से तभी आजाद हो सकते हैं जब तुम थिसिल[32] के फूलों के बालों को चुनो, उन्हें कातो और उसका धागा बनाओ।

फिर उस धागे से कपड़ा बुन कर हमारे लिये बारह कोट, बारह कमीज और बारह मफलर बनाओ।

और जब तुम यह कर रही हो तो न बात करो, ना रोओ और ना हँसो। अगर तुम ऐसा कर सकती हो तभी हम अपनी इस ज़िन्दगी से आजाद हो सकते हैं।"

राजकुमारी बोली — "पर इतने सारे थिसिल के फूल मैं लाऊँगी कहाँ से जिनसे मैं इतने सारे कोट, कमीज और मफलर बना सकूँ।"

राजकुमार बोले — "वह हम तुमको बताते हैं।"

[32] Thistle is a flowering plant whose flower has lots of hair. See the picture above

कह कर वे उसको एक बहुत बड़े मैदान में ले गये जहॉ थिसिल की खेती हो रही थी और वहॉ लाखों की तादाद में थिसिल के फूल हवा में ऊपर नीचे हिल रहे थे। उनके बाल धूप में चमकते हुए हवा में इधर उधर उड़ रहे थे।

राजकुमारी ने इतने सारे थिसिल के फूलों के बाल अपनी ज़िन्दगी में पहले कभी नहीं देखे थे। वह तुरन्त ही उनको जितनी जल्दी हो सकता था समेटने में लग गयी। जब वह रात को घर लौटी तो उन फूलों के बालों को साफ करने और कातने के लिये बैठ गयी।

वह ऐसा बहुत दिनों तक करती रही और साथ में राजकुमारों के घर की देखभाल, जैसे उनका खाना बनाना, बिस्तर ठीक करना, घर साफ करना आदि भी करती रही।

उसके भाई दिन में बतख बन कर उड़ जाते पर हर रात को आदमी बन कर घर लौट आते। अगले दिन फिर वे बतख बन कर उड़ जाते और फिर सारा दिन बतख ही बने रहते।

फिर एक दिन ऐसा हुआ कि जब वह उस खेत पर से आखिरी बार थिसिल के फूलों के बाल इकट्ठा कर रही थी तो उस देश का नौजवान राजा शिकार के लिये निकला हुआ था।

शिकार खेलते खेलते वह उसी खेत की तरफ आ निकला। उसने राजकुमारी को देखा तो उसको वहॉ देख कर वह रुक गया

और सोचने लगा कि यह इतनी सुन्दर लड़की इस खेत पर थिसिल के फूलों के बाल इकट्ठा कर के क्या कर रही है।

उसने लड़की से उसका नाम पूछा पर उसको तो बोलना नहीं था सो उसने कोई जवाब नहीं दिया। यह देख कर उसको और भी ज़्यादा आश्चर्य हुआ।

अब वह उसको इतनी अच्छी लगने लगी थी कि उसके पास उसको घर ले जाने और उससे शादी करने के अलावा और कोई चारा नहीं रह गया था।

बस उसने अपने नौकरों को हुक्म दिया कि वे उसको उठा कर उसके घोड़े पर बिठा दें।

राजकुमारी ने अपने हाथों से उसको इशारा किया और उसको अपना थैला दिखाया जिसमें उसका काम रखा था तो राजा को लगा कि वह अपना थैला अपने साथ ले जाना चाहती थी तो उसने अपने नौकरों को उसका थैला भी साथ लाने के लिये कहा।

जब उन्होंने यह सब कर लिया तब राजकुमारी को धीरे धीरे होश आया क्योंकि राजा एक अक्लमन्द आदमी भी था और सुन्दर भी। इसके अलावा वह उसके साथ एक डाक्टर की तरह से बड़ी नर्मी और दया का बर्ताव कर रहा था।

राजा उसको ले कर अपने महल में पहुँचा। घर में राजा की सौतेली मॉ थी। उसने उस लड़की को देखा तो वह तो उसको देख कर बहुत जलने लगी क्योंकि राजकुमारी बहुत सुन्दर थी।

उसने राजा से कहा — "क्या तुमको दिखायी नहीं देता कि जिस लड़की को तुम घर ले कर आये हो और जिससे तुम शादी करना चाहते हो वह न बोल सकती है, न हॅस सकती है और न ही रो सकती है।"

पर राजा ने अपनी मॉ की एक न सुनी और उससे शादी कर ली। वे खुशी खुशी रहने लगे। पर वह लड़की अपने भाइयों के लिये कमीज, कोट और मफलर बनाना नहीं भूली।

एक साल बाद राजकुमारी ने एक बेटे को जन्म दिया। तब तो राजा की सौतेली मॉ को और ज़्यादा गुस्सा आया और वह उससे और भी ज़्यादा जलने लगी।

एक रात जब राजकुमारी सो रही थी तो राजा की मॉ उसके कमरे में घुसी और उसके बेटे को चुरा लिया और सॉपों से भरे एक गड्ढे में डाल दिया।

फिर उसने उस लड़की की छोटी उॅगली काटी और उसका खून उसी के मुॅह पर लगा दिया। फिर उसने अपने बेटे को बुला कर उसको यह दिखा कर उससे कहा — "देखो तुम कैसी लड़की ले कर आये हो जो अपने बच्चे को खुद ही मार कर खुद ही खा गयी है।"

राजा को यह देख कर बहुत बुरा लगा और वह यह सब देख कर बहुत ही आश्चर्य में पड़ गया कि ऐसा कैसे हो सकता था।

पर राजा ने सोचा — "यह सब सच हो सकता है क्योंकि यह तो मैं अपनी ऑखों से ही देख रहा हूँ। पर वह अगली बार ऐसा नहीं करेगी सो अबकी बार मैं उसको छोड़ देता हूँ।"

राजकुमारी अपने बचाव में न तो कुछ बोल ही सकी और न अपने बच्चे की मौत पर रो ही सकी।

एक साल बाद राजकुमारी ने एक और बेटे को जन्म दिया। राजा की सौतेली मॉ राजकुमारी से और ज़्यादा गुस्सा हो गयी और और भी ज़्यादा जलने लगी। उसने उस बच्चे के साथ भी ऐसा ही किया जैसा उसने उसके पहले बच्चे के साथ किया था।

एक रात जब राजकुमारी सो रही थी तो राजा की मॉ उसके कमरे में घुसी और उसके इस बेटे को भी उसने चुरा लिया और सॉपों से भरे एक गड्ढे में डाल दिया।

उसने फिर उस लड़की की छोटी उँगली काटी और उसका खून उसी के मुँह पर लगा दिया। फिर अपने बेटे को बुला कर उसको यह दिखा कर उससे कहा — "देखो तुम कैसी लड़की ले कर आये हो कि वह अपने बच्चे को खुद ही मार कर खुद ही खा गयी है।"

राजा को यह देख कर फिर बहुत बुरा लगा और वह यह सब देख कर फिर से बहुत आश्चर्य में पड़ गया।

पर राजा ने फिर सोचा — "यह सब सच हो सकता है क्योंकि यह तो मैं अपनी ऑखों से ही देख रहा हूँ। पर मुझे यकीन है कि

वह अगली बार ऐसा नहीं करेगी सो अबकी बार मैं उसे फिर से छोड़ देता हूँ।"

इस बार भी राजकुमारी अपने बचाव में न तो कुछ बोल ही सकी और न अपने बच्चे की मौत पर रो ही सकी।

अगले साल राजकुमारी ने एक बेटी को जन्म दिया। रानी ने पिछली बार की तरह से उसको भी सॉपों से भरे गड्ढे में फिंकवा दिया और राजकुमारी के मुँह पर खून लगा कर राजा को यह दिखा दिया कि उसने अपना बच्चा खुद ही मार कर खुद ही खा लिया है।

वह फिर राजा से बोली — "अब तुमने देखा कि मैं ठीक कह रही थी कि वह जादूगरनी है। उसने अपना तीसरा बच्चा भी खा लिया है।"

अबकी बार राजा बहुत दुखी हुआ और इतना दुखी हुआ कि इस बार वह उसको माफ नहीं कर सका और उसने उसको लकड़ी के ढेर पर जलाने का हुक्म दे दिया।

पर जैसे ही वे लकड़ियॉ तेज़ी से जलने लगीं और राजा के नौकर उसको उस आग के ऊपर रखने लगे तो उसने इशारों से उनसे कहा कि वे बारह तख्ते आग के चारों तरफ लगा दें।

उन तख्तों पर उसने अपने भाइयों के लिये बनाये हुए वे थिसिल के फूलों के बालों के बारह कोट, बारह कमीजें और बारह मफलर फैला दिये।

उसके सबसे छोटे भाई की कमीज में बॉयी बॉह तब तक नहीं लग पायी थी क्योंकि उसको लगाने का उसके पास समय ही नहीं था।

जैसे ही नौकरों ने वे कपड़े उन तख्तों पर फैलाये तो उसने हवा में पंखों के फड़फड़ाने की आवाज सुनी और बारह बतख नीचे उतरते देखे। उन्होंने अपनी चोंच में अपने अपने कपड़े उठाये और फिर आसमान में उड़ गये।

रानी फिर बोली — "अब देखा न तुमने? क्या मैं सच नहीं कह रही थी कि यह एक जादूगरनी है? जल्दी करो। इससे पहले कि आग ठंडी पड़ जाये इसको आग में फेंक दो।"

राजा बोला — "तुम चिन्ता न करो मॉ, हमारे पास बहुत सारी लकड़ी है। मैं अभी थोड़ा सा इन्तजार और करता हूॅ क्योंकि मैं यह जानना चाहता हूॅ कि इसका अन्त क्या होगा।"

जैसे ही उसने यह कहा तो उसने देखा कि बारह सुन्दर राजकुमार घोड़ों पर सवार उन्हीं लोगों की तरफ चले आ रहे हैं। पर उनमें से एक राजकुमार की बॉयी बॉह की तरफ बजाय उसकी बॉह के बतख का एक पंख लगा हुआ है।

राजकुमारों ने आते ही पूछा — "यह सब यहॉ क्या हो रहा है?"

राजा बोला — "मेरी रानी को जलाया जा रहा है क्योंकि यह एक जादूगरनी है। क्योंकि इसने अपने ही बच्चे खा लिये हैं।"

राजकुमार बोले — "इसने उनको बिल्कुल नहीं खाया है।"

फिर उन्होंने अपनी बहिन से कहा — "बहिन बोलो। अब तुम बोल सकती हो। तुमने हमें उस ज़िन्दगी से आजाद कर दिया है और हमें बचा लिया है। अब तुम अपने आपको बचाओ।"

तब उसने अपने पति को शुरू से ले कर आखीर तक सारी कहानी बतायी कि किस तरह से जब भी उसने किसी बच्चे को जन्म दिया तो रानी उसके कमरे में रात को चुपके से घुस आयी और उसका बच्चा चुरा कर ले गयी।

फिर किस तरह उसने उसकी छोटी उँगली काटी और उसका खून उसके मुँह पर लगा गयी।

इसके बाद बारहों राजकुमार राजा को उस साँपों भरे गड्ढे के पास ले गये जहाँ राजा की सौतेली माँ ने उनकी बहिन के बच्चों को फेंका था। वहाँ जा कर राजा ने देखा कि उसके तीनों बच्चे वहाँ साँपों और मेंढकों से खेल रहे थे।

उसकी कहानी सुन कर राजा को अपनी माँ पर बहुत गुस्सा आया। उसने अपने तीनों बच्चों को तुरन्त ही वहाँ से उठाया और उनको अपनी सौतेली माँ के पास ले कर गया

वहाँ जा कर उसने अपनी माँ से पूछा — "माँ, आप उस औरत को क्या सजा देंगी जिसके पास एक बेगुनाह रानी को इस तरह धोखा देने वाला दिल हो जिसके इतने प्यारे भोले से तीन बच्चे हों?"

रानी बोली — "उसको तो बारह खुले घोड़ों के सामने खम्भे से बॉध देना चाहिये ताकि वे सब उसको खा जायें।"

राजा बोला — "अफसोस आपने तो अपनी सजा अपने आप ही सुना दी है और आपको यह सजा अब तुरन्त ही मिलेगी।"

रानी को बारह घोड़ों के बीच एक खम्भे से कस कर बॉध दिया गया और वे घोड़े उसको खा गये। उधर राजा अपनी पत्नी और बच्चों को अपने घर ले गया।

बारहों राजकुमार अपने माता पिता के पास चले गये वहॉ जा कर उन्होंने अपनी कहानी उनको सुनायी तो उनके माता पिता बहुत खुश हुए।

सारे राज्य में बहुत खुशियॉ मनायीं गयीं क्योंकि राजकुमारी ने अपने भाइयों को बचा लिया था और राजकुमारों ने अपनी बहिन को बचा लिया था।

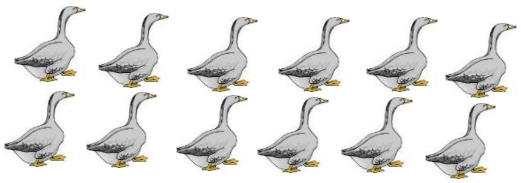

9 दो सौतेली बहिनें[33]

एक बार की बात है कि एक जगह एक पति पत्नी रहते थे। यह उन दोनों की दूसरी शादी थी पर उन दोनों की अपनी अपनी पहली शादी से एक एक लड़की भी थी।

स्त्री की बेटी बहुत ही सुस्त और आलसी थी और घर में कोई भी काम नहीं करती थी जबकि आदमी की बेटी बहुत चुस्त चालाक थी। पर किस्मत की बात कि उसका कोई भी काम उसकी सौतेली मॉ को पसन्द नहीं आता था।

इसलिये दोनों मॉ बेटी आदमी की बेटी को घर से बाहर निकालना चाहती थीं।

सो एक दिन ऐसा हुआ कि दोनों लड़कियॉ सूत कातने के लिये बाहर गयीं और एक कुॅए के पास बैठ कर सूत कातने लगीं। स्त्री की बेटी के पास तो कातने के लिये रुई थी पर आदमी की बेटी के पास कोई रुई नहीं थी। उसके पास बस कुछ कॉटे थे।

स्त्री की बेटी ने कहा – "पता नहीं ऐसा कैसे होता है कि तुम बहुत जल्दी ही अपना काम खत्म कर लेती हो पर मैं तुम्हारी बराबरी नहीं कर पाती।"

[33] The Two Stepsisters – A folktale from Norse countries, Europe. Translated from the Web Site : http://www.sacred-texts.com/neu/ptn/ptn27.htm

उसके बाद दोनों ने यह तय किया कि जिस किसी का सूत पहले टूटेगा वह कुँए में नीचे उतरेगा। सो उन्होंने अपना अपना सूत कातना शुरू कर दिया पर जब वे सूत कात रही थीं तो आदमी की बेटी का सूत टूट गया और उसको कुँए में नीचे उतरना पड़ा।

जब वह कुँए की तली में पहुँची तो उसने अपने चारों तरफ चमकीली हरे रंग की शराब[34] देखी। पर उससे उसको कोई चोट नहीं पहुँची।

वह उस पर थोड़ी ही दूर चली थी कि उसके सामने एक हैज[35] आयी जिसको उसे पार करना था। हैज बोली — "ओह मैं तुमसे प्रार्थना करती हूँ कि तुम मेरे ऊपर ज़ोर से मत चलना। मैं फिर कभी तुम्हारी सहायता करूँगी।"

सो वह उससे कुछ दूर हट कर चलने लगी और इतनी दूर हट कर चली कि उसने उसकी एक डंडी भी नहीं छुई। वह थोड़ी दूर और चली कि उसको एक गाय मिली जो अपने सींगों पर दूध निकालने वाली एक बालटी लिये इधर उधर घूम रही थी।

वह एक बहुत सुन्दर और बड़ी गाय थी और उसके थन दूध से भरे हुए थे। गाय बोली — "मैं तुमसे प्रार्थना करती हूँ कि तुम मेरा

[34] Translated for the word "Mead" – Mead is an alcoholic beverage created by fermenting honey with water, sometimes with various fruits, spices, grains, or hops etc.

[35] Hedge is normally a low wall, 3-6 feet tall, otherwise it can be high also – as high as 10-12 feet, made of very densely planted plants. It works as a boundary wall to protect the house from thieves and animals etc. See its picture above.

दूध दुह दो। मेरे थनों में बहुत दूध भरा है। तुम जितना चाहो उतना पी लो और बाकी बचा हुआ मेरे खुरों पर डाल दो। फिर देखना कि मैं किसी दिन तुम्हारी सहायता करती हूँ या नहीं।"

सो आदमी की बेटी ने वैसा ही किया जैसा कि गाय ने उससे करने के लिये कहा था। उसने बालटी गाय के सींगों से उतारी और उसका दूध दुहने बैठ गयी।

जैसे ही उसने गाय के थनों को हाथ लगाया गाय के थनों से दूध की धारा बह कर बालटी में गिरने लगी। पहले तो उसने खूब पेट भर कर गाय का दूध पिया फिर बाकी बचा हुआ दूध उसने उसके खुरों पर फेंक दिया और दूध दुहने वाली बालटी को उसके सींगों पर लटका दिया।

वह फिर आगे चल दी। आगे चल कर उसको एक भेड़ मिला। उसके ऊपर बहुत लम्बी लम्बी ऊन थी। वह नीचे तक लटक रही थी और उसके पीछे पीछे जमीन पर घिसट रही थी। उसके सींगों पर एक बड़ी सी कैंची रखी हुई थी।

भेड़ उस लड़की को देख कर बोला — "ओह ज़रा मेरी यह ऊन काट दो क्योंकि मैं इसको बहुत देर से घसीटते हुए ही इधर से उधर घूम रहा हूँ। यह ऊन जहाँ से भी इसको जो कुछ भी मिलता है वही पकड़ लेती है।

इसके अलावा यह इतनी गर्म है कि इसकी गर्मी से मेरा तो बस दम ही घुटा जा रहा है। जब तुम मेरी ऊन काट लो तो जितनी ऊन

तुम्हें चाहिये तुम ले लेना और बाकी बची हुई ऊन मेरी गर्दन के चारों तरफ लपेट देना। फिर देखना कि मैं तुम्हारी किसी दिन सहायता करता हूँ या नहीं।"

आदमी की लड़की तो इसकी सहायता करने को भी तुरन्त ही तैयार हो गयी। भेड़ उसकी गोद में चुपचाप लेट गया और उसने उसकी सारी ऊन इतनी सफाई से काट दी कि उसकी खाल पर एक भी खरोंच नहीं आयी।

फिर उसने जितनी उससे ली जा सकी उतनी ऊन ले ली और बाकी की ऊन उस भेड़ की गर्दन में लपेट दी। यह सब कर के वह फिर आगे चली।

आगे चल कर उसको एक सेब का पेड़ मिला। उस पेड़ की सारी शाखें फलों के बोझ से नीचे जमीन तक झुकी जा रही थीं और एक पतले से खम्भे से चिपकी हुई थीं।

वह चिल्लाया — "ओह मेहरबानी कर के मेरे सेब तोड़ दो ताकि मेरी शाखें थोड़ी सीधी हो सकें। क्योंकि इस तरह से बहुत देर तक टेढ़े खड़े होना बहुत ही मुश्किल काम है। पर जब तुम मेरी शाखें झुकाओ तो इनको बहुत ज़ोर से मत झुका देना।

फिर उसके बाद जितने सेब तुम खाना चाहो उतने तुम खा लेना और बाकी बचे हुए सेब मेरी जड़ के पास ही डाल देना। और फिर देखना कि मैं किसी दिन तुम्हारी सहायता करता हूँ या नहीं।"

सो इसने जितने सेब उसके हाथों से टूट सकते थे उतने सेब उसने उस पेड़ से अपने हाथों से तोड़ दिये। फिर उसने खम्भा उखाड़ लिया और उससे और सेब तोड़ लिये। उसने पेट भर कर सेब खाये और बाकी बचे हुए सेब उस पेड़ की जड़ में ही डाल दिये।

यह कर के अब वह फिर आगे चली। अबकी बार वह बहुत देर तक चलती रही। आखिर वह एक खेत पर बने घर में आ पहुँची। वहाँ ट्रौल का सरदार[36] अपनी बेटी के साथ रहता था।

वह उस घर के अन्दर चली गयी और अन्दर जा कर वहाँ रहने के लिये जगह माँगी। बूढ़ी जादूगरनी बोली — "ओह यहाँ कोशिश करने से कोई फायदा नहीं है क्योंकि हमारे पास कई नौकरानियाँ आयीं पर कोई भी ठीक नहीं थी।"

पर उस लड़की ने उनसे इतनी दया भरी प्रार्थना की कि उन्होंने उसको इस शर्त पर रख लिया कि वह पहले उसका काम देखेंगे फिर उसको पक्की नौकरी पर रखेंगे। सो आखिरकार उन्होंने उसको रख लिया।

[36] Chief of Trolls – a troll is a supernatural being in Norse mythology and Scandinavian folklore. In origin, troll may have been a negative being in Norse mythology. Beings described as trolls dwell in isolated rocks, mountains, or caves, live together in small family units, and are rarely helpful to human beings.

उन्होंने उसको एक चलनी दी और उसमें पानी भर कर लाने के लिये कहा। हालॉकि उसको यह बहुत अजीब लगा कि वह चलनी में पानी भर कर लाये फिर भी वह उसको ले कर उसमें पानी लाने के लिये चल दी।

जब वह कुँए के पास आयी तो वहॉ बैठी छोटी छोटी चिड़ियॉ गाने लगीं —

इसको मिट्टी में सानो फिर इसमें भूसा मिलाओ
इसको मिट्टी में सानो फिर इसमें भूसा मिलाओ

उस लड़की ने ऐसा ही किया। उसने देखा कि अब वह उसमें पानी भर सकती थी क्योंकि अब उस चलनी के छेद बन्द हो चुके थे। वह उस पानी को ले कर घर पहुँची तो बूढ़ी जादूगरनी ने उससे कहा — "यह पानी तुमने अपनी छाती से तो नहीं निकाला है?"

फिर उसने उससे गायों के बाड़े में जाने के लिये कहा कि वह वहॉ जाये और गायों का गोबर साफ करे और उनका दूध दुह कर ले कर आये।

पर जब वह वहॉ गयी तो उसको वहॉ एक भूसा उठाने वाला ही मिला जो इतना भारी था कि वह तो उसको हिला भी नहीं सकती थी उससे काम तो वह कैसे करती।

वह नहीं जानती थी कि वह क्या करे या उस भूसा उठाने वाले का भी वह क्या करे। पर छोटी छोटी चिड़ियों ने फिर गाया कि वह झाड़ू ले ले और उससे थोड़ा सा गोबर चारों तरफ उछाल दे तो बाकी बचा हुआ गोबर उसके पीछे पीछे अपने आप ही उछल कर बाहर चला जायेगा। सो उसने ऐसा ही किया।

जैसे ही उसने झाड़ू से ऐसा किया गायों का बाड़ा इतना साफ हो गया जैसे अभी अभी बुहारा गया हो और धोया गया हो।

अब उसको गायों का दूध निकालना था पर वे सब इतनी बेचैन थीं कि जैसे ही वह उनको छूती तो वे उसको लात मारतीं। वे तो उसको अपने पास भी नहीं आने दे रही थीं दूध दुहाना तो दूर।

चिड़ियों ने बाहर फिर गाया — "चिड़ियों के पीने के लिये एक छोटी सी बूँद दूध की एक छोटा सा खाना।" सो उसने वही किया।

किसी तरह से उसने एक गाय का एक बूँद दूध दुहा और उसे चिड़ियों को पिला दिया। चिड़ियों के दूध पीते ही सारी गायें सीधी खड़ी हो गयीं और उन्होंने उस लड़की को अपना दूध दुहने दिया। न तो उन्होंने उसको लात मारी और न ही वे बहुत ज़्यादा हिली डुलीं। यहाँ तक कि उन्होंने तो अपनी एक टाँग भी नहीं उठायी।

इसलिये जब जादूगरनी ने उसको दूध लाते आते देखा तो वह चिल्लायी — "यह दूध तुमने अपनी छाती से तो नहीं निकाला है?"

फिर उसने उसको कुछ काले रंग की ऊन दी और कहा कि वह उसको धो कर सफेद कर लाये।

अब उस लड़की को तो पता ही नहीं था कि वह उस काली ऊन को सफेद कैसे करे। फिर भी उसने कुछ कहा नहीं और वह ऊन उससे ले कर कुँए की तरफ चल दी।

वहाँ उन छोटी छोटी चिड़ियों ने फिर गाया और उससे कहा कि वह उस ऊन को पास के गड्ढे में डुबो दे। उस लड़की ने ऐसा ही किया। जैसे ही उसने उस ऊन को उस गड्ढे में डुबोया और बाहर निकाला तो वह ऊन तो बिल्कुल बर्फ की तरह सफेद थी।

वह उस ऊन को ले कर जादूगरनी के पास पहुँची। जैसे ही वह जादूगरनी के पास पहुँची तो जादूगरनी तो यह देख कर फिर चिल्ला पड़ी — "ओह तुमको तो रखना ठीक नहीं है। तुम तो सब कुछ कर सकती हो। और आखीर में तो तुम मेरी ज़िन्दगी का रोग ही बन जाओगी। अच्छा तो यही है कि तुम यहाँ से चली जाओ। लो यह अपनी मजदूरी लो और जाओ।"

फिर बूढ़ी जादूगरनी ने तीन सन्दूकची निकालीं – एक लाल एक हरी और एक नीली और उनको उस लड़की को दिखाते हुए बोली — "तुम अपनी मजदूरी के लिये इनमें से कोई सी भी एक सन्दूकची ले लो। जो भी तुम्हें अच्छी लगे।"

अब उस लड़की को तो पता नहीं था कि वह उनमें से कौन सी सन्दूकची चुने पर तभी छोटी छोटी चिड़ियों ने गाया —

"तुम लाल सन्दूकची मत लो और तुम हरी सन्दूकची भी मत लो। तुम नीली सन्दूकची ले लो जिसमें तुमको तीन क्रास एक लाइन

में रखे दिखायी देंगे। हमने उनके निशान उसमें देखे हैं इसलिये हमको यह मालूम है।"

सो जैसा कि चिड़ियों ने उससे अपने गाने में कहा था उसने नीले रंग की सन्दूकची जादूगरनी से ले ली। बूढ़ी जादूगरनी फिर चिल्लायी — "बुरा हो तेरा। अब देखना अगर मैं तुझको इसके लिये कोई सजा न दूँ तो।"

जैसे ही आदमी की बेटी अपनी नीली सन्दूकची ले कर चली बूढ़ी जादूगरनी ने उसके पीछे लोहे की एक जलती हुई सलाख फेंक कर मारी पर वह दरवाजे के पीछे की तरफ कूद गयी और वहाँ जा कर छिप गयी।

इससे वह सलाख उसको छू भी न सकी। क्योंकि उसकी दोस्तों यानी छोटी छोटी चिड़ियों ने उसे पहले ही बता दिया था कि उस सलाख से उसे कैसे बचना है।

इसके बाद वह वहाँ से जितनी तेज़ चल सकती थी चल दी। पर जब वह सेब के पेड़ के पास पहुँची तो उसने अपने पीछे सड़क पर आती हुई कट कट की एक बहुत ही भयानक आवाज सुनी। यह आवाज उस जादूगरनी की और उसकी बेटी के आने की आवाज थी।

यह देख कर वह लड़की तो इतनी घबरा गयी और डर गयी कि उसकी समझ में ही नहीं आया कि वह क्या करे।

कि तभी उसने सेब के पेड़ की आवाज सुनी — "तुम यहॉ मेरे पास आओ ओ लड़की, क्या तुम सुन रही हो? मैं तुम्हारी सहायता करूँगा। तुम मेरे साये में आ कर छिप कर खड़ी हो जाओ क्योंकि अगर उन्होंने तुमको देख लिया तो वे यह सन्दूकची तुमसे ले लेंगी और तुमको फाड़ कर मार डालेंगी।"

सो वह उस सेब के पेड़ के नीचे जा कर छिप गयी। जैसे ही वह वहॉ जा कर छिपी वैसे ही वह बूढ़ी जादूगरनी और उसकी बेटी वहॉ आ पहुँचीं।

बूढ़ी जादूगरनी ने सेब के पेड़ से पूछा — "ओ सेब के पेड़, क्या तुमने किसी लड़की को यहॉ से जाते हुए देखा है?"

सेब का पेड़ बोला — "हॉ हॉ मैंने देखा है। एक लड़की यहॉ से एक घंटा पहले भागती हुई गयी थी। पर अब तक तो वह इतनी दूर पहुँच गयी होगी कि वह तुम्हारी पहुँच से बाहर है।"

यह सुन कर वह बूढ़ी जादूगरनी वहॉ से लौट गयी और अपने घर चली गयी। उसके बाद वह लड़की सेब के पेड़ के नीचे से निकली और आगे चल दी।

वह जब तक भेड़ के पास पहुँची तो उसने फिर से अपने पीछे सड़क पर आती हुई कट कट की एक बहुत ही भयानक आवाज सुनी। वह तुरन्त ही समझ गयी कि वह आवाज उस जादूगरनी के आने की आवाज थी।

वह फिर से बहुत डर गयी। उसकी समझ में नहीं आया कि अब वह क्या करे।

कि तभी उसने भेड़ की आवाज सुनी — "इधर आजा ओ लड़की। मैं तेरी सहायता करूँगी। यहाँ आ कर तू मेरी ऊन के नीचे छिप जा। इस तरह से वह तुझे देख नहीं पायेगी। क्योंकि अगर उसने तुझे देख लिया तो वह यह सन्दूकची तुझसे छीन लेगी और तुझे फाड़ कर मार डालेगी।"

सो लड़की भेड़ की ऊन के नीचे जा कर छिप गयी। जैसे ही वह वहाँ जा कर छिपी वैसे ही वह बूढ़ी जादूगरनी वहाँ आ पहुँची।

बूढ़ी जादूगरनी भेड़ से बोली — "ओ भेड़ क्या तूने यहाँ से किसी लड़की को जाते देखा है?"

भेड़ बोली — "हाँ हाँ मैंने देखा है वह यहाँ से एक घंटा पहले ही गयी है। पर वह इतनी तेज़ भागी गयी है कि तुम उसे कभी नहीं पकड़ सकतीं।"

यह सुन कर जादूगरनी वापस अपने घर लौट गयी। उसके बाद वह लड़की भेड़ की ऊन के नीचे से निकली और आगे चल दी।

पर जब तक वह गाय के पास पहुँची तो उसने फिर से अपने पीछे सड़क पर आती हुई कट कट की एक बहुत ही भयानक आवाज सुनी। वह तुरन्त ही समझ गयी कि वह आवाज उस जादूगरनी के आने की आवाज थी। वह फिर से बहुत डर गयी। उसकी फिर समझ में नहीं आया कि वह अब क्या करे।

कि इतने में उसने गाय की आवाज सुनी — "इधर आजा ओ लड़की। मैं तेरी सहायता करूँगी। यहाँ आ कर तू मेरे थनों के नीचे छिप जा। इस तरह से वे तुझे नहीं देख पायेगी। क्योंकि अगर उसने तुझे देख लिया तो वह यह सन्दूकची तुझसे ले लेगी और तुझे फाड़ कर मार डालेगी।"

सो लड़की गाय के थनों के नीचे जा कर छिप गयी। बूढ़ी जादूगरनी ने गाय से पूछा — "ओ गाय, क्या तूने किसी लड़की को यहाँ से जाते हुए देखा है?"

गाय बोली — "हाँ हाँ मैंने देखा है। एक लड़की यहाँ से एक घंटा पहले भागती हुई गयी थी। पर अब तक तो वह इतनी दूर पहुँच गयी होगी कि वह तुम्हारी पहुँच से बाहर है।"

यह सुन कर वह बूढ़ी जादूगरनी वहाँ से लौट गयी और अपने घर चली गयी। उसके बाद वह लड़की गाय के थनों के नीचे से निकल आयी और आगे चल दी।

चलते चलते वह हैज के पास पहुँची तो उसने फिर से अपने पीछे सड़क पर आती हुई कट कट की एक बहुत ही भयानक आवाज सुनी।

वह समझ गयी किा यह उसी बूढ़ी जादूगरनी और उसकी बेटी के आने की आवाज है। अब वह क्या करे। अबकी बार तो बस उसकी जान ही निकलने वाली थी। पर वह करे क्या यह उसकी समझ में नहीं आया।

कि इतने में उसने हैज की आवाज सुनी — "इधर आजा ओ लड़की। मैं तेरी सहायता करूँगी। यहाँ आ कर तू मेरे पत्तों और टहनियों के नीचे छिप जा। इस तरह से वे तुझे नहीं देख पायेंगी। क्योंकि अगर उन्होंने तुझे देख लिया तो वे यह सन्दूकची तुझसे ले लेंगी और तुझे फाड़ कर मार डालेंगी।"

सो लड़की हैज के पत्तें और टहनियों के नीचे जा कर छिप गयी। बूढ़ी जादूगरनी ने हैज से पूछा — "ओ हैज, क्या तूने किसी लड़की को यहाँ से जाते हुए देखा है?"

हैज बोली — "नहीं मैंने तो किसी लड़की को यहाँ से जाते नहीं देखा।" और इस बीच उसने आपको इतना बड़ा और ऊँचा कर लिया कि उसको पार करने के लिये किसी को दस बार सोचना पड़ता।

यह सुन कर वह बूढ़ी जादूगरनी के पास अब कोई चारा नहीं रह गया था कि वह वहाँ से घर वापस लौट जाये सो वह वहाँ से वापस लौट गयी और अपने घर चली गयी।

उसके बाद वह लड़की हैज के पत्तों और टहनियों के नीचे से निकल आयी और अपने घर की तरफ चली गयी।

जब वह अपने घर पहुँची तो उसकी सौतेली माँ और बहिन उसको वहाँ ज़िन्दा देख कर बहुत आश्चर्य में पड़ गयीं और उससे और ज़्यादा नफरत करने लगीं। वहाँ से लौटने के बाद वह अब और ज़्यादा होशियार और चतुर हो गयी थी। वह अब देखने में भी

बहुत अच्छी लगने लगी थी। उसकी तरफ देखने में अब अच्छा लगता था।

पर फिर भी वह उनके साथ नहीं रह सकी। उन्होंने उसको सूअरों के रहने की जगह रहने को भेज दिया। अब वही उसका घर था सो उसने उसको खूब रगड़ रगड़ कर साफ किया और फिर वह नीली सन्दूकची खोली जो वह उस जादूगरनी के घर से अपनी मजदूरी के रूप में लायी थी।

वह यह देखना चाहती थी कि उसको उसकी मजदूरी के रूप में क्या मिला था। पर जैसे ही उसने उसका ताला खोला तो उसको तो उसके अन्दर इतना सारा सोना चॉदी और बहुत अच्छी अच्छी चीजें दिखायी दीं कि वे उसमें से बाहर निकलनी शुरू हो गयीं और उस सूअरों के घर की दीवारों पर लटकना शुरू हो गयीं। अब वह सूअर का घर तो किसी राजा के महल से भी शानदार लगने लगा।

जब उसकी सौतेली मॉ और बहिन उसे वहॉ देखने आयीं तो वे तो आश्चर्य के मारे उछल ही पड़ीं और पूछने लगीं कि यह सब उसने कैसे बनाया।

लड़की बोली — "ओह तुम देख नहीं रहीं कि यह तो मेरी अच्छी मजदूरी का फल है। ओह वह कितना अच्छा परिवार था और उस परिवार की मालकिन भी कितनी अच्छी थी जिसकी मैंने सेवा की। तुमको उनके जैसा कहीं भी कोई भी नहीं मिल सकता।"

सो स्त्री की बेटी ने तुरन्त ही यह सोच लिया कि वह भी वहॉ जायेगी और उस मालकिन की सेवा करेगी। तो उसको भी ऐसी ही सोने की एक सन्दूकची मिल जायेगी।

वे दोनों बहिनें फिर से वहीं सूत कातने बैठीं। पर इस बार स्त्री की बेटी कॉटे कातने बैठी और आदमी की बेटी रुई कातने बेठी। शर्त यह थी कि जिसका भी सूत पहले टूटा वह कुँए में जायेगा।

अब जैसा कि तुम सब समझ सकते हो कि स्त्री की बेटी का धागा पहले टूट गया। तो वह कुँए में चली गयी।

इस बार भी वैसा ही हुआ जैसे पहले हुआ था। वह कुँए की तली में गिर पड़ी पर उसको उस गिरने से कोई चोट नहीं आयी। वह तो वहॉ हरी हरी घास के मैदान में खड़ी थी।

वह कुछ दूर आगे चली तो वह एक हैज के पास आयी। हैज बोली — "ओ लड़की मेरे ऊपर बहुत जोर से मत चलना। बाद में मैं तुम्हारी सहायता करूँगी।"

स्त्री की बेटी ने सोचा "मैं इसकी परवाह क्यों करूँ।" सो वह उसके ऊपर से हो कर चली गयी जब तक कि वह सारी की सारी हैज कुचल नहीं गयी और कराहने नहीं लगी।

कुछ दूर और आगे जाने पर उसको एक गाय मिली। गाय उससे बोली — "मेहरबानी कर के मुझे दुहती जाओ। मेरे थन दूध के बोझ से फटे जा रहे हैं। मैं बाद में तुम्हारी सहायता करूँगी। तुम

जितना चाहे उसमें से उतना दूध पी लेना पर जितना बचे वह मेरे खुरों पर फेंक देना।"

उसने उस गाय को दुहा और तब तक उसका दूध पीती रही जब तक वह और दूध नहीं पी सकी। पर जब वह वहॉ से चली तो उसके पास गाय के खुरों पर डालने के लिये दूध बिल्कुल भी नहीं बचा था और जहॉ तक उस बालटी का सवाल था जिसमें उसने उसका दूध दुहा था वह उसने पहाड़ी के नीचे लुढ़का दी थी।

वह फिर से आगे चल दी। कुछ और दूर चलने के बाद उसको एक भेड़ मिला जो उसके साथ साथ अपने पीछे पीछे अपनी ऊन लटकाये चल रहा था।

भेड़ ने लड़की से कहा — "मेहरबानी कर के मेरी ऊन काट दो। बाद में मैं तुम्हारी सहायता करूॅगा। ऊन काट कर तुम उसमें से जितनी चाहे उतनी ऊन ले लेना पर बाकी बची हुई ऊन मेरी गरदन में लपेट देना।"

लड़की ने यह सब कर तो दिया पर उसने इसे इतनी लापरवाही से किया कि उसने बेचारे भेड़ के शरीर में से बड़े बड़े टुकड़े भी काट लिये और जहॉ तक ऊन का सवाल था वह तो उसकी सारी ऊन ले कर चली गयी। उसकी गर्दन में बॉधने के लिये ज़रा सी भी ऊन नहीं छोड़ी।

आगे कुछ दूर चलने के बाद उसको एक सेब का पेड़ मिला जो फलों से भरपूर था और उसी की वजह से टेढ़ा भी खड़ा था।

सेब का पेड़ बोला — "मेहरबानी कर के मेरे पेड़ के सेब तोड़ दो ताकि मेरी शाखाऐं सीधी बढ़ सकें क्योंकि इस तरह से टेढ़े खड़े रहना बहुत मुश्किल काम है।

पर ज़रा ध्यान रखना कि फल तोड़ते समय मुझे बहुर जोर से मत मारना। तुम चाहे जितने सेब खा लेना पर बाकी बचे हुए सेब मेरी जड़ के चारों तरफ डाल देना। मैं फिर तुम्हारी सहायता करूँगा।"

लड़की ने उस पेड़ के सेब तोड़े तो पर उसने वही सेब तोड़े जो उसके सबसे पास थे। बाकी दूर लगे सेब तोड़ने के लिये उसने डंडे से पेड़ को बहुत जोर से मारा। इससे उसके फल ही नहीं बल्कि कई शाखाऐं भी टूट गयीं।

फिर उसने खूब सारे सेब खाये जब तक उससे सेब और नहीं खाये गये। बाकी बचे हुए सेब उसने पेड़ के नीचे फेंक दिये और आगे चल दी।

काफी दूर जाने के बाद वह एक खेत के पास आ पहुँची जहाँ वह बूढ़ी जादूगरनी रहती थी। वहाँ आ कर उसने उससे ठहरने के लिये जगह माँगी तो उस जादूगरनी ने कहा कि उसको अब कोई नौकरानी नहीं चाहिये क्योंकि उनमें से कोई भी नौकरानी उसके किसी काम की नहीं थीं।

या तो वे उसके लिये बहुत होशियार थीं या फिर उन्होंने उसको उसकी चीज़ों के साथ धोखा दिया था।

पर स्त्री की बेटी कहॉ मानने वाली थी उसको तो उस जादूगरनी के घर में काम करना ही था। सो जादूगरनी को उसे रखना ही पड़ा। उसने उसको इस शर्त पर रख लिया कि वह उसका काम देखेगी फिर उसको अगर उसका काम अच्छा लगा तो वह उसको पक्की तरह से रख लेगी।

जादूगरनी ने पहला काम उसको यह दिया कि उसको चलनी में पानी भर कर ला कर दे। सो वह कुँए के पास गयी और चलनी में पानी भरने की कोशिश करने लगी। वह जैसे ही चलनी में पानी भरती वह उसके छेदों में से बाहर निकल जाता।

तभी छोटी छोटी चिड़ियों ने गाया —

इसको मिट्टी में सानो फिर इसमें भूसा मिलाओ
इसको मिट्टी में सानो फिर इसमें भूसा मिलाओ

पर उसने चिड़ियों के गाने की तरफ कोई ध्यान ही नहीं दिया बल्कि उनकी तरफ उसने इतनी मिट्टी फेंकी कि वे वहॉ से उड़ गयीं। इस तरह से वह उस चलनी में पानी नहीं भर सकी और उसको बिना पानी के ही घर जाना पड़ा।

इस तरह से बिना पानी लिये घर आने पर जादूगरनी ने उसको बहुत डॉटा।

फिर उसको गायों का घर साफ करने के लिये और उनका दूध दुहने के लिये भेजा गया। पर उसने तो ऐसे काम कभी किये नहीं थे

सो उसने सोचा कि वह तो ऐसे काम करने के लिये बहुत अच्छी थी। फिर भी वह गायों के घर तक गयी।

पर जब वह वहॉ पहुँची तो वहॉ उसको सिवाय एक भूसा उठाने वाले के और कुछ नहीं मिला जिससे वह वहॉ की सफाई कर सकती। और वह भी इतना भारी था कि वह तो उसको हिला भी नहीं सकी उससे काम तो वह कैसे करती।

चिड़ियों ने उससे भी वही कहा जो उन्होंने उसकी सौतेली बहिन से कहा था। उन्होंने उससे कहा कि वह झाड़ू ले कर केवल थोड़ा सा गोबर वहॉ से उठा दे और बाकी गोबर उसके पीछे पीछे उड़ जायेगा। पर उसने झाड़ू उठा कर चिड़ियों की तरफ फेंक दी।

फिर वह उनका दूध दुहने गयी। गायें बहुत ही बेचैन थीं कि जैसे ही वह उनको दुहने के लिये छूती तो वे उसको लात मारतीं और धक्का मारतीं। वह अपनी बालटी में उनका केवल बहुत थोड़ा सा ही दूध निकाल पाती।

कि तभी चिड़ियों ने फिर गाया – "चिड़ियों के पीने के लिये लिये एक छोटी सी बूँद दूध की एक छोटा सा खाना।"

पर उसने गायों को बहुत डॉटा और मारा। फिर उसके हाथ में जो कुछ आया उसने वही चिड़ियों की तरफ फेंक दिया। यह सब उसने कुछ इस तरह से किया कि देखने में वह सब बहुत खराब लग रहा था।

इसलिये वह इस बार भी गायों के घर को साफ करने और उनको दुहने के मामले में कुछ ज़्यादा अच्छा नहीं कर सकी। सो इस बार जब वह घर आयी तो उसको जादूगरनी की डॉट तो सहनी ही पड़ी साथ में उसको मार भी पड़ी।

बाद में उसको काले रंग की ऊन को सफेद करने के लिये भेजा गया पर उसमें भी वह कुछ ज़्यादा अच्छा नहीं कर सकी।

इसके बाद जादूगरनी अन्दर से तीन सन्दूकचियॉ निकाल कर लायी – एक लाल एक हरी और एक नीली और उससे बोली कि उसको उसकी सेवाओं की कोई जरूरत नहीं थी। पर उसने जो कुछ वहॉ काम किया था उसके बदले में वह उनमें से कोई भी सन्दूकची चुन सकती थी। जो भी उसको अच्छी लगे।

तभी छोटी चिड़ियों ने गाया – "न तो तुम लाल लो न तुम हरी लो। पर तुम नीली लो जिसमें तीन छोटे क्रास हैं। हमने क्योंकि उनके निशान देखे हैं इसलिये हमें मालूम हैं।"

उसने चिड़ियों के गाने की तरफ कोई ध्यान नहीं दिया और उसने लाल वाली सन्दूकची चुन ली क्योंकि वह उसकी ऑखों को बहुत सुन्दर लग रही थी।

लाल सन्दूकची ले कर वह अपने घर चल दी। वह बहुत शान्ति से और आराम से घर चली गयी क्योंकि उसका पीछा करने वाला कोई नहीं था।

जब वह अपने घर पहुँची तो उसकी माँ तो खुशी के मारे कूद कर उसके पास पहुँच गयी। दोनों ने मिल कर उस सन्दूकची को

एक आतिशदान[37] पर रख दिया क्योंकि उन्होंने तो इसके बारे में कुछ और सोचा ही नहीं था कि उसमें सोने चाँदी के अलावा भी और कुछ हो सकता है।

वे तो बस यह सपना देख रहीं थीं कि उस सोने की सन्दूकची से अपना घर उस सूअर के घर जैसा सजा लेंगी। वहाँ जा कर उन्होंने उस सन्दूकची को खोला। लो जब उन्होंने उसको खोला तो उसमें से क्या निकला?

उसमें से तो मेंढक साँप निकल पड़े। और उससे भी बुरी बात यह कि जब भी वे मुँह खोलतीं उनके मुँह से या तो कोई मेंढक कूद कर बाहर आ जाता या फिर कोई साँप बाहर रेंग जाता। या फिर कई तरह के कीड़े बाहर निकल पड़ते। इस वजह से अब कोई उनके साथ ही नहीं रह पा रहा था।

तो यह इनाम मिला उस लड़की को उस जादूगरनी के साथ काम करने का।

[37] Translated for the word “Fireplace”. In cold places people used to light fire to keep their houses warm. This was called fireplace. There used to be a flat stone sheet over this place which could be used to keep something. It is called Mantelpiece. See its picture above.

10 मास्टर चोर[38]

एक बार की बात है कि एक बहुत ही गरीब आदमी था। उसके तीन बेटे थे। जब वह मर जाता तो उसके पास उनके लिये छोड़ने के लिये कुछ भी नहीं था। उसके पास कोई पैसा भी नहीं था जिससे वे कोई काम धन्धा या व्यापार कर लेते।

ऐसी हालत में उसको यही समझ में नहीं आ रहा था कि वह बेचारा उनको क्या कहे या उनके लिये क्या करे।

आखिर उसने यह सोचा कि वह उनको उनकी इच्छा अनुसार ही कोई चीज़ देगा जो वे चाहें और उनको वहीं जाने देगा जहॉ वे जाना चाहें। अगर वे बाहर गये तो वह उनके साथ थोड़ी दूर तक उनको छोड़ने जायेगा और फिर उसने ऐसा ही किया।

उसने उनसे कहा कि उसके पास तो उन लोगों को देने के लिये कुछ है नहीं सो वे खुद ही बाहर जा कर जैसे चाहें अपनी कमाई करें। सो उसके तीनों बेटे बाहर जाने के लिये तैयार हो गये।

अपने वायदे के अनुसार वह उनके साथ थोड़ी दूर तक गया तो वे सब एक चौराहे पर आ गये। वहॉ आ कर हर एक ने अपने

---

[38] The Master Thief – a folktale from Norway, Norse Countries, Europe.
Translated from the Web Site : http://www.sacred-texts.com/neu/ptn/ptn45.htm
Taken from "Popular Tales from the Norse". By George Webbe Dasent. 1904. It is freely available on the above Web Site. This book's language is a bit difficult to understand, maybe because of some local expressions. Something was added and something was to be removed to keep the understandability and maintain the flow of the story. My apologies for that.

अपने लिये एक एक सड़क चुन ली और चले गये। वहॉ से उनके पिता ने उनको गुड बाई कहा और अपने घर आ गया।

मैंने दो बड़े भाइयों के बारे में तो कभी कुछ सुना नहीं पर उनका तीसरा और सबसे छोटा भाई अपनी चुनी हुई सड़क पर बहुत देर तक चलता रहा और बहुत दूर तक चलता चला गया।

अब हुआ यह कि एक दिन रात को वह एक जंगल में से गुजर रहा था कि मौसम बहुत खराब हो गया। हवा इतनी तेज़ बहने लगी कि वह बड़ी मुश्किल से अपनी ऑखें खोल पा रहा था।

और कुछ ही देर में कि वह यह जान पाता कि क्या हो रहा था कि वह उस जंगल में भटक गया और वह न तो सड़क ही देख पाया और न रास्ता ही देख पाया।

पर फिर भी उसको कहीं न कहीं तो जाना ही था सो वह चलता रहा। आगे चलने पर उसको दूर कहीं एक रोशनी चमकती दिखायी दी। उसने सोचा कि वह वहॉ तक पहुॅच कर ठहरने की जगह देखेगा सो वह आगे बढ़ता गया। कुछ दूर चलने के बाद वह वहॉ पहुॅच गया।

वहॉ तो एक बहुत बड़ा घर था और उसमें बहुत तेज़ आग जल रही थी जिससे बहुत तेज़ रोशनी हो रही थी। इससे ऐसा लग रहा था कि वहॉ रहने वाले लोग अभी सोने नहीं गये थे सो वह अन्दर चला गया।

उसने देखा कि उस घर में एक बुढ़िया चारों तरफ घूम रही थी और घर की देखभाल कर रही थी।

लड़का बोला — "गुड ईवनिंग।"

बुढ़िया बोली — "गुड ईवनिंग।"

लड़का फिर बोला — "ओह आज बाहर कितना खराब मौसम हो रहा है।"

"हॉ वह तो है।"

लड़का बोला — "क्या मुझे आज की रात यहॉ ठहरने के लिये एक बिस्तर मिल सकता है?"

बुढ़िया बोली — "यहॉ सो कर तुम्हारा कोई भला नहीं होगा। क्योंकि यहॉ रहने वाले लोग जब यहॉ आयेंगे और तुमको देखेंगे तो वे तुमको और मुझे दोनों को मार देंगे।"

लड़के ने पूछा — "ऐसे वे किस तरह के लोग हैं जो यहॉ रहते हैं।"

"वे डाकू हैं और इनमें से कई तो बहुत बुरे हैं। उन्होंने तो मुझे भी चुरा लिया था जब मैं छोटी थी और तभी से मुझे उन्होंने अपने घर की देखभाल के लिये रखा हुआ है।"

लड़का बोला — "फिर भी मुझे लगता है कि मैं बस जल्दी से सोने चला जाता हूॅ। और फिर बाद में जो भी होगा उसे भुगतूॅगा। मैं इस मौसम में बाहर नहीं जा सकता।"

"ठीक है जैसी तुम्हारी मर्जी। पर अगर तुम यहॉ ठहर गये तो यह तुम्हारे लिये और भी बुरा होगा।"

"देखूॅगा।" कह कर वह लड़का वहीं पास में पड़े एक बिस्तर पर सोने के लिये लेट गया। वह उस बिस्तर में घुस तो गया पर उसकी सोने की हिम्मत नहीं हुई।

थोड़ी ही देर में ही डाकू आ गये। बुढ़िया ने उनको बताया कि किस तरह से एक अजनबी उनके घर में घुस आया था जिसे वह बाहर नहीं निकाल सकी।

डाकुओं ने पूछा — "क्या तुमने देखा कि उसके पास कुछ पैसा था?"

"ऐसे आदमी के पास क्या पैसा होता। वह तो कोई खानाबदोश[39] लगता है। उसकी पीठ पर तो बस उसके कपड़ों की एक गठरी थी।"

यह सुन कर डाकुओं ने आपस में बात करना शुरू किया कि वे उसका क्या करें। वे अभी उसको मार दें या फिर उसके साथ वे क्या करें।

इस बीच वह लड़का उठ गया और उसने भी उन डाकुओं से बात करना शुरू कर दिया। उसने उन डाकुओं से पूछा कि क्या उनको किसी नौकर की जरूरत थी। अगर वे उसको कुछ काम दे देंगे तो वह उनकी नौकरी कर के बहुत खुश होगा।

[39] Translated for the word "Vagabond"

वे बोले — "अगर तुम हमारा धन्धा सीखना चाहते हो जो हम करते हैं तो तुम खुशी से यहॉ रह सकते हो।"

लड़का बोला — "मुझे इस बात से कोई मतलब नहीं कि मैं क्या धन्धा करता हूॅ। क्योंकि जब मैंने घर छोड़ा था तो मेरे पिता ने मुझे पूरी आजादी दी थी कि मैं जो चाहे करूॅ।"

डाकुओं ने उससे पूछा — "क्या तुम चोरी कर सकते हो?"

लड़का बोला — "हॉ हॉ कुछ भी।" क्योंकि उसने सोचा कि चोरी करना सीखने में भी उसको देर नहीं लगेगी।

अब वहॉ पास में ही एक आदमी रहता था जिसके पास तीन बैल थे। उस आदमी को उनमें से एक बैल शहर ले जा कर बेचना था। डाकुओं ने यह पता लगा लिया था कि वह क्या करने वाला है।

सो उन्होंने उस लड़के से कहा कि अगर जब वह आदमी अपने बैल को ले कर शहर जा रहा हो तो वह रास्ते में से उस आदमी का बैल चुरा ले। उस आदमी को पता भी न चले और न उसको कोई नुकसान पहुॅचे तो वे उसको नौकरी दे देंगे।

सो वह लड़का उस आदमी का बैल चुराने चल दिया। साथ में उसने एक बहुत सुन्दर सा स्त्रियों के पहनने वाला जूता ले लिया जिस पर चॉदी का बक्सुआ[40] लगा हुआ था।

[40] Translated for the word "Buckle"

उसने वह जूता उस सड़क के बीच में रख दिया जिधर से वह आदमी अपने बैल को ले कर जाने वाला था। यह कर के वह वहीं पास में जंगल में चला गया और एक झाड़ी के पीछे छिप गया।

जब वह आदमी उस सड़क पर आया तो उसने सड़क के बीचोबीच वह जूता पड़ा देखा। वह बोला "अरे यह तो बड़ा अच्छा जूता है। पर यह तो एक ही जूता है इस एक जूते का मैं क्या करूँ। काश मुझे इसका दूसरा जूता भी मिल जाता तो मैं इसको अपने साथ घर ले जाता और अपनी पत्नी को खुश कर देता।"

असल में उसकी पत्नी एक बुढ़िया थी और बहुत ही झगड़ालू थी। वह अक्सर उसके कान मरोड़ती रहती थी।

पर फिर बाद में उसने सोचा कि वह उस अकेले जूते का करेगा भी क्या जब तक कि उसके साथ का जूता न हो। सो उसने उस जूते को वहीं सड़क पर छोड़ दिया और आगे शहर की तरफ चला गया।

उसके वहाँ से जाते ही वह लड़का जल्दी से झाड़ी के पीछे से निकला, उसने वह जूता सड़क पर से उठाया और जितनी जल्दी भाग कर जा सकता था उतनी जल्दी जंगल के छोटे रास्ते से भाग कर आदमी से आगे निकल गया। उसने वही जूता फिर से उसी सड़क पर रख दिया।

आदमी भी सड़क पर चलता रहा तो आगे चल कर उसको एक वैसा ही जूता फिर दिखायी दिया। उस दूसरे जूते को देख कर वह उसको अपनी बेवकूफी पर बहुत गुस्सा आया।

उसने सोचा कि उसने यह कितनी बड़ी बेवकूफी की कि वह उस जूते को वहीं सड़क पर ही छोड़ आया। अगर दूसरा जूता वहॉ नहीं भी था तो भी अगर वह उसको वहॉ से उठा लाता तो वह एक जूता तो कम से कम उसके पास रहता। अब यह दूसरा जूता उसको यहॉ मिल गया है तो वह इसका भी क्या करे।

उसने सोचा कि "मैं वापस जा कर उस पहले वाले जूते को वहॉ से ले आता हूँ तब अपनी पत्नी के लिये मेरे पास दोनों जूते हो जायेंगे। उसके बाद शायद मेरी पत्नी मुझसे कुछ अच्छा बरताव करना शुरू कर दे।"

सो उसने सड़क पर पड़ा वह जूता उठाया, अपने बैल को वहीं पास में लगी एक बाड़ से बॉधा और वह पहला वाला जूता लाने चल दिया। जब वह उस जगह पहुँचा जहॉ उसने वह पहला वाला जूता छोड़ा था तो वह तो वहॉ उसे कहीं भी दिखायी नहीं दिया।

उसने उसे ढूँढने की काफी कोशिश की पर वह उसको कहीं नहीं मिला सो वह अपना दूसरा जूता हाथ में उठाये ही वापस आ गया।

पर इस बीच जैसे ही वह आदमी दूसरे जूते को ढूँढने के लिये वहॉ से गया लड़के ने बैल खोला और उसको हॉक कर वहॉ से ले

गया। सो जब तक वह आदमी वापस आया तब तक तो उसका बैल भी चला गया था।

यह देख कर तो वह आदमी बेचारा रो पड़ा और ज़ोर ज़ोर से चिल्लाने लगा। उसको लगा कि जैसे ही उसकी पत्नी को यह पता चलेगा कि उसने बैल खो दिया है तो वह तो उसे मार ही डालेगी।

पर तभी उसके दिमाग में आया कि "मैं घर वापस जाऊँ और दूसरा बैल ले कर उसको शहर ले जा कर बेच आऊँ इससे मेरी पत्नी को इस सबका पता भी नहीं चलेगा।"

बस वह तुरन्त ही वापस अपने घर गया, बिना अपनी पत्नी को बताये हुए अपना दूसरा बैल उठाया और उसको बेचने के लिये फिर से शहर की तरफ चल दिया।

पर डाकुओं को भी यह सब पता चल गया सो उन्होंने लड़के से कहा — "अगर तुम इस आदमी के इस बैल को भी उसकी बिना जानकारी के और उसको बिना कोई नुकसान पहुँचाये ला दो तो तुम भी हम में से एक हो जाओगे।"

लड़का बोला — "अगर तुम्हारे गिरोह में मिलने के लिये मुझे यही करना है तो यह तो कोई मुश्किल काम नहीं है।"

इस बार उसने घर में से एक रस्सी उठायी और अपने काम पर चल दिया। जिस रास्ते से उस आदमी को अपने बैल को बेचने के लिये जाना था उसी रास्ते पर उसने अपनी दोनों बगलों में रस्सी को

लपेट कर एक पेड़ से लटका लिया जैसे किसी ने खुदकुशी कर ली हो।

जब वह आदमी अपना बैल ले कर वहॉ तक आया जहॉ वह लड़का पेड़ से लटका हुआ था तो वह तो ऐसा भयानक दृश्य देख कर डर गया।

वह बोला — "तुम कितने भी दुखी क्यों न हो पर जिस दुख ने तुमको इस पेड़ से लटकने पर मजबूर किया है उसको तो दूर नहीं किया जा सकता।

मैं क्या करूॅ अगर तुमने अपने आपको इस तरह से लटका लिया तो। मैं तुम्हारे अन्दर अब ज़िन्दगी तो नहीं फूॅक सकता न।"

यह कहता हुआ वह अपने बैल के साथ आगे बढ़ गया। उसके जाते ही वह लड़का पेड़ से फिसल कर नीचे गिर पड़ा और फुटपाथ से हो कर तेज़ी से भाग गया।

उसने उस आदमी से आगे निकल कर फिर से अपने आपको रस्सी से उसी तरह बॉध कर उसके शहर जाने के रास्ते में एक पेड़ से लटका लिया।

वह आदमी भी चलते चलते वहीं आ पहुॅचा जहॉ वह लड़का पेड़ से लटका हुआ था।

उसने एक आदमी को फिर से पेड़ से लटके देखा तो बोला — "हे भगवान। क्या तुम भी इतने दुखी थे कि तुमने अपने आपको पेड़ से लटका लिया। या फिर यह सब एक जादूगरी का खेल है कि

मैं तुमको देख रहा हूँ। ए ए तुम पेड़ से लटके रहो मैं तुम्हारी चिन्ता नहीं करता। तुम चाहे कोई भूत हो या फिर कुछ और।"

कहता हुआ वह वहाँ से भी अपने बैल के साथ आगे चला गया।

उस लड़के ने फिर वैसा ही किया जैसा कि वह दो बार कर चुका था। उस आदमी के जाते ही वह फिर पेड़ पर से उतरा और फिर से उसके रास्ते में एक दूसरे पेड़ से लटक गया।

चलते आदमी ने एक बार फिर एक आदमी को पेड़ से लटके देखा तो उसने सोचा "यह तो बहुत ही बुरा धन्धा है। क्या ये सब इतने दुखी थे कि इन सबने फाँसी लगा ली – यानी कि इन तीनों ने।

मैं तो इसके अलावा यह सोच ही नहीं सकता कि जो कुछ मैं देख रहा हूँ यह जादूगरी का मामला है सच नहीं। पर अब मैं यह निश्चित रूप से जान जाऊँगा कि यह सब क्या है, सच या जादूगरी।

क्योंकि अगर मुझे वे पहले वाले दोनों आदमी अभी भी वहाँ उन्हीं पेड़ों से लटके मिल जायेंगे तो यह सच है पर अगर नहीं मिले तो यह सचमुच जादूगरी का ही मामला है।

सो उसने फिर से एक बार अपने बैल को वहाँ बाँधा और पीछे यह देखने के लिये दौड़ गया कि वे दोनों आदमी जो उसने पहले वहाँ देखे थे अभी भी वहीं पेड़ से लटक रहे थे नहीं।

आदमी के वहॉ से जाते ही वह लड़का फिर पेड़ से कूदा उसका बैल खोला और ले कर भाग लिया। अब जब वह आदमी वहॉ आया तो उसने देखा कि उसका यह बैल भी जा चुका था।

कहने की जरूरत नहीं कि यह देख कर तो वह और ज़ोर से रो पड़ा। उधर उसको वे दोनों आदमी भी लटके हुए दिखायी नहीं दिये और इधर उसका बैल भी चला गया। यह उसका दूसरा बैल था जो इस तरीके से चला गया था।

कुछ देर तक तो वह बेचारा रोता रहा पर फिर उसने अपने मन को सॅभाला और सोचा "अब मेरे पास और कोई चारा नहीं है कि मैं फिर से घर जाऊॅ और अपनी पत्नी को बताये बिना ही अपना तीसरा वाला बैल ले कर आऊॅ और उससे ही कुछ अच्छे पैसे बनाने की कोशिश करूॅ।"

सो वह फिर अपने घर की तरफ चल दिया। चुपके से अपना तीसरा बैल लिया और उसको ले कर फिर बाजार की तरफ चल दिया।

उसकी पत्नी को तो इन सब बातों की कोई खबर नहीं थी पर डाकुओं को इन सब बातों का पता था।

उन्होंने उस लड़के से कहा "अगर तुम उसका यह तीसरा बैल भी उसकी बिना जानकारी के और उसको बिना कोई नुकसान पहुॅचाये चुरा लाओ तो तुम हम सबके सरदार हो जाओगे।"

लड़का बोला — "अगर आप सबका सरदार बनने के लिये मुझे यही करना है तो यह तो कोई मुश्किल काम नहीं है।" सो वह लड़का एक बार फिर उस आदमी का बैल चुराने के लिये चल दिया। वह वहॉ से चल कर जंगल में चला गया।

जब वह आदमी अपने बैल के साथ वहॉ आया तो उस लड़के ने वहॉ से बहुत ज़ोर से बैल की आवाज की तरह की आवाज निकाली। बैल की आवाज सुन कर तो वह आदमी बहुत खुश हो गया।

उसको लगा कि उसने अपने बैल की आवाज पहचान ली है और अब वह अपने उन दोनों बैलों को पा लेगा जिनको वह खो चुका है सो उसने अपना बैल बॉधा और अपने पहले वाले बैलों को ढूँढने के लिये सड़क से जंगल की तरफ दौड़ गया।

इस बीच वह लड़का जंगल में से निकल आया और उसका बैल खोल कर चम्पत हो गया।

उस आदमी को जंगल में कोई बैल दिखायी नहीं दिया तो वह दुखी सा वापस आया तो यह देख कर और बहुत दुखी हो गया कि उसका तीसरा बैल भी चला गया था।

अब तो वह दुख से बिल्कुल ही पागल हो गया। उसके दुख का कोई वारापार नहीं था। एक ही दिन में उसके तीन बैल चोरी हो गये थे। वह छाती पीट पीट कर रोने ओर चिल्लाने लगा।

उसकी तो घर जाने की भी हिम्मत नहीं पड़ी क्योंकि उसको डर था कि उसकी बूढ़ी पत्नी कहीं उसको देखते ही मार ही न दे। वह बेचारा तो कई दिनों बाद ही घर जा पाया।

X X X X X X X

इधर डाकू भी उस लड़के की होशियारी से काई खास खुश नहीं थे क्योंकि वह तो उनके वायदे के अनुसार अब उनके गिरोह का नेता बन गया था और यह उनको स्वीकार नहीं था।

एक दिन उन लोगों ने सोचा कि वह कोई ऐसा काम करें जो वह लड़का न कर सके। सो उन्होंने उस लड़के को तो घर पर छोड़ा और वे सब एक साथ मिल कर वहॉ से चल दिये। उनमें से हर डाकू अधकचरा डाकू था।

जब वे सब घर से चले गये तब सबसे पहले उस लड़के ने क्या किया कि घर में जो वह बैल चुरा कर लाया था वह उनको सड़क पर ले गया ताकि वे उस आदमी के पास वापस जा सकें जिससे वह उनको चुरा कर लाया था।

और जैसा कि तुम सोच सकते हो कि वह आदमी उनको देख कर कितना खुश हुआ होगा।

फिर उसने उन डाकुओं के सारे घोड़े लिये और उन पर डाकुओं के पास जितना भी अच्छा सामान था वह सब उन पर लादा – सोना, चॉदी, कपड़े और भी बहुत सारी अच्छी अच्छी चीज़ें।

फिर उसने वहॉ की बुढ़िया नौकरानी को जब डाकू लोग वापस आयें तो उन डाकुओं से गुड बाई कहने और उनको धन्यवाद देने के लिये कहा। साथ में उसने उससे उनसे यह भी कहने के लिये कहा कि वह अपनी आगे की यात्रा पर जा रहा है। वे अब उसके लिये इससे ज़्यादा मुश्किल काम नहीं ढूँढ पायेंगे।

यह कह कर वह वहॉ से चल दिया। जिस सड़क पर वह जा रहा था उस सड़क पर काफी दूर चलने के बाद वह अपने घर के पास पहुँचा तो उसको कुछ डाकू मिल गये। वहीं से उसको अपने पिता का घर भी दिखायी दे गया।

उसको डाकुओं के घर से लाये हुए कपड़ों में एक यूनीफौर्म मिल गयी उस समय उसने वही पहन ली। वह एक फौजी जनरल के से कपड़े लग रहे थे। उन कपड़ों को पहन कर वह एक बड़ा आदमी लग रहा था और इस तरह वह अपने घर के दरवाजे तक पहुँच गया।

वहॉ पहुँच कर उसने पूछा कि क्या उसको वहॉ ठहरने की जगह मिल सकती थी।

उसका पिता बोला — "चाहे मुझे कभी कुछ अच्छा कपड़ा पहनने या लेटने के लिये मिला हो या न मिला हो फिर भी मुझे इस अच्छे भले आदमी के ठहरने लिये कुछ न कुछ तो इन्तजाम करना ही चाहिये। मेरा क्या मैं तो हमेशा फटे चिथड़ों में ही रहा।"

लड़का बोला — "तुम तो हमेशा ही बहुत ही कंजूस रहे हो और तुम आज भी वही हो अगर तुम अपने बेटे को अन्दर नहीं बुलाते।"

आदमी बोला — "अरे क्या कहा तुमने? तुम मेरे बेटे?"

लड़का फिर बोला — "जी पिता जी। क्या आप अपने बेटे को नहीं पहचाने?"

खैर बाद में उसने उसे पहचान लिया। फिर बोला — "पर तुम क्या करते रहे जो तुम इतनी जल्दी इतने अमीर हो गये?"

लड़का बोला — "मैं जल्दी ही आपको सब बताऊँगा। पिता जी आपको याद है न कि आपने हमसे कहा था कि हम कुछ भी कर सकते हैं सो मैंने चोरों के एक गिरोह के साथ काम किया। अब उनके साथ मेरा समय खत्म हो गया और अब मैं एक मास्टर चोर हो गया हूँ।"

उसके पिता के मकान के पास ही एक जमींदार[41] रहता था। उसका बहुत बड़ा मकान था और उसके पास इतना सारा पैसा था कि वह खुद भी नहीं बता सकता था कि उसके पास कितना पैसा था।

उसके एक बेटी थी जो बहुत सुन्दर और होशियार थी। मास्टर चोर को उसकी वह बेटी बहुत पसन्द आ गयी। उसने उसको अपनी

[41] A man of high social standing who owns and lives on an estate in a rural area, especially as the chief landowner in such an area.

पत्नी बनाने की ठानी। उसने अपने पिता से कहा कि वह उस जमींदार के पास जायें और अपने बेटे के लिये उसका हाथ मॉगें। और अगर वह यह पूछे कि मैं अपना पेट कैसे भरता हूॅ तो कहियेगा कि मैं मास्टर चोर हूॅ।

उसका पिता बोला — "मुझे लगता है कि तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है। क्योंकि जब तुम ऐसी बात सोचते भी हो तब भी मुझे लगता है कि तुम्हारा दिमाग ठीक नहीं है।"

नहीं नहीं उसका दिमाग खराब नहीं हुआ है। उसके पिता को उस जमींदार के पास जा कर उसकी बेटी का हाथ तो मॉगना ही पड़ेगा।

आदमी बोला — "नहीं नहीं यह मैं नहीं कर सकता। मैं तुमसे कहे दे रहा हूॅ कि मैं तो उसके पास जाने की हिम्मत भी नहीं कर सकता जो इतना अमीर है और जिसके पास इतना पैसा है।"

मास्टर चोर बोला — "पर इसके सिवा और कोई रास्ता नहीं है पिता जी।"

चाहे वह जाना चाहे या नहीं पर उसको जाना पड़ेगा। और अगर वह ठीक तरीके से नहीं गया तो उसका बेटा उसको किसी छल से भेजेगा।

पर वह आदमी अभी भी वहॉ जाने को तैयार नहीं था। सो उसके बेटा उसके पीछे गया और उसको बिर्च के पेड़ की एक छोटी

सी डंडी से मारता हुआ उस जमींदार के घर तक ले गया जब तक कि वह सिसकियॉ भर भर कर वहॉ चीखने नहीं लगा।

जमींदार ने उसे अपने घर के दरवाजे पर देखा तो उससे पूछा — "अरे भाई तुम्हें क्या परेशानी है। तुम क्यों रोते हो?"

सो उस बेचारे ने उसको सारी कहानी बता दी कि कैसे उसके तीन बेटे थे जो उसकी इजाज़त ले कर घर से बाहर चले गये कि वे कहीं भी जा सकते थे और अपना पेट पालने के लिये कुछ भी कर सकते थे।

अब उसका सबसे छोटा बेटा घर वापस आ गया था। उसने उसको आपके घर आने पर मजबूर किया और जब उसने आने के लिये मना किया तो उसने उसे इतना मारा।

उसने आगे कहा — "उसने मुझसे कहा कि मैं उसके लिये आपकी बेटी का हाथ मॉगूँ। और इसके अलावा मैं आपसे यह भी कहूँ कि वह एक मास्टर चोर है।"

इतना कह कर वह फिर रोने ओर सुबकने लगा। जमींदार हॅसते हुए बोला — "तुम चिन्ता न करो। तुम घर वापस जाओ और उससे जा कर कहो कि पहले वह अपने काम में अपनी होशियारी साबित करे तभी कुछ हो सकता है।

इसको साबित करने के लिये मेरे घर के सारे लोगों की ऑखों के सामने से अगर वह मेरे रसोईघर से रविवार को भुना हुआ मॉस

चुरा ले तो मैं अपनी बेटी उसको दे दूँगा। जाओ तुम उसको यही बोल देना।"

पिता बेचारा रोता हुआ चला गया और जा कर उसने यह सब अपने बेटे से कह दिया। बेटे ने सोचा "यह क्या मुश्किल काम है।"

रविवार की सुबह उसने फटे चिथड़े कपड़े पहने, रास्ते में से तीन ज़िन्दा बड़े खरगोश[42] पकड़े और उनको थैले में डाल कर वह जमींदार के घर की तरफ चल दिया। उस समय उसने अपनी हालत कुछ ऐसी बना रखी थी कि उसको उस हालत में देख कर किसी का भी दिल रो पड़ता।

जमींदार के घर पहुँच कर वह उसके घर के पीछे वाले दरवाजे से चोरी से उसके घर में घुस गया। उसके कन्धे पर उसका थैला पड़ा हुआ था जैसे कि दूसरे भीख मॉगने वालों के कन्धे पर पड़ा रहता है।

उधर जमींदार खुद और उसके सारे घर वाले रसोईघर में बैठे अपने भुने हुए मॉस की रखवाली कर रहे थे। लड़के ने अपना थैला खोला और उसमें से एक बड़ा खरगोश बाहर निकाल दिया। वह घर के बाहर निकल कर घर के सामने चक्कर काटने लगा।

[42] Translated for the word "Hare". Hare is a rabbit like animal but it is a bit bigger than it. See its picture above.

रसोईघर में से एक आदमी बोला — "अरे देखो तो वह बड़ा खरगोश देखो।"

बड़े खरगोश को देखते ही रसोईघर में बैठे सभी लोग उस बड़े खरगोश को पकड़ने के लिये दौड़ना चाहते थे। जमींदार ने भी उस बड़े खरगोश को अपने घर के सामने घूमते देखा तो बोला — "उँह घूमने दो उसे। एक बड़े खरगोश को पकड़ने के बारे में सोचने से कोई फायदा नहीं।"

कुछ पल बाद लड़के ने अपने थैले में से एक दूसरा बड़ा खरगोश बाहर निकाला और उसको भी छोड़ दिया तो वह जमींदार के रसोईघर में आ गया।

उनको लगा कि यह तो वही पहले वाला ही खरगोश है जो उन्होंने अपने घर के बाहर घूमता हुआ देखा था और अब उनके रसोईघर में आ गया है।

वे उसके पीछे भागने को और उसको पकड़ने को भी तैयार थे पर जमींदार फिर बोला कि उसको पकड़ने का कोई फायदा नहीं है। फिर वह बड़ा खरगोश रसोईघर से बाहर चला गया।

अभी उसको रसोईघर में से बाहर गये हुए कुछ ही देर हुई थी कि उस लड़के ने अपने थैले से तीसरा बड़ा खरगोश निकाला और उसको भी छोड़ दिया। वह भी घर के बाहर निकल गया और घर के बाहर चक्कर काटने लगा।

सबने रसोईघर में से देखा कि एक खरगोश घर के बाहर घूम रहा है सो उन्होंने सोचा कि शायद यह भी वही खरगोश होगा जिसको उन्होंने पहले देखा था। वे सब फिर से उसको पकड़ने के लिये बहुत इच्छुक थे।

जमींदार ने भी उसे देखा तो इस बार वह यह कहे बिना न रह सका — "यह तो बहुत ही बढ़िया बड़ा खरगोश है। चलो देखते हैं कि हम लोग उसको पकड़ सकते हैं या नहीं।"

कह कर वह उस बड़े खरगोश को पकड़ने दौड़ गया और उसके पीछे पीछे दौड़ गये और सब लोग भी। लोगों को आते देख कर वह बड़ा खरगोश भी वहॉ से भागा। अब बड़ा खरगोश आगे आगे और जमींदार का परिवार पीछे पीछे।

अब ऐसा तमाशा तो कभी कभी देखने को मिलता है। पर यही मौका था जब लड़के को उसका भुना हुआ मॉस चुराना था सो वह तुरन्त ही रसोईघर में घुसा और उसका भुना हुआ मॉस उठा कर भाग गया।

अब हमको यह तो पता नहीं कि उस दिन जमींदार के परिवार को भुना हुआ मॉस खाने को मिला या नहीं। हॉ यह बात जरूर पता है कि उसको भुना हुआ बड़ा खरगोश नहीं मिला हालॉकि उसने उसका इतनी देर तक पीछा किया जब तक कि वह थक नहीं गया और उसको पसीना नहीं आ गया।

इत्तफाक से उस दिन एक पादरी को जमींदार के घर खाना खाने के लिये आना था। तो जब वह जमींदार के घर खाना खाने आया तो जमींदार ने उसको उस मास्टर चोर की चाल बतायी कि किस तरह से उसने जमींदार के साथ चाल खेली थी तो उसको यह सब सुन कर इतना मजा आया कि वह बहुत देर तक हॅसता रहा।

पादरी बोला — "अगर तुम मेरी सुनो तो मैं तो सोच भी नहीं सकता कि मेरे साथ ऐसा कभी हो सकता है कि उस जैसा आदमी मुझको बेवकूफ बना जाये।"

जमींदार बोला — "ज़रा ध्यान रखना। यह भी हो सकता है कि इससे पहले तुम यह जान पाओ कि वह कहॉ है वह तुम्हारे घर भी आ जाये।"

पर पादरी ने जो कुछ कहा था वह अपने उसी कहे पर अड़ा रहा और जमींदार की हॅसी उड़ाता रहा।

शाम को वह लड़का जमींदार के घर आया और उससे उसकी बेटी का हाथ मॉगा जैसा कि उसने उससे वायदा किया था।

पर जमींदार ने उससे बात करना शुरू किया — "तुम तो अपने हुनर में बहुत होशियार हो पर तुमको एक बार और अपने आपको साबित करना पड़ेगा। क्योंकि आज जो कुछ तुमने किया वह कोई बहुत बड़ा काम नहीं था।

क्या तुम पादरी के साथ कोई चाल नहीं खेल सकते जो वहॉ अन्दर बैठा हुआ है और तुम जैसे आदमी से धोखा खाने के लिये मेरा मजाक बना रहा है?"

लड़का बोला — "यह तो कोई बड़ी बात नहीं है।"

कह कर वह एक चिड़िया की तरह से तैयार हुआ। उसने एक सफेद चादर अपने शरीर पर डाली, एक बतख के पंख लिये और उनको अपनी पीठ पर बॉध पादरी के बागीचे में लगे एक मैपिल[43] के पेड़ पर जा कर बैठ गया।

शाम को जब पादरी घर आया तो वह वहीं से चिल्लाया — "फादर लौरेन्स[44] फादर लौरेन्स।"

पादरी ने इधर उधर देखा और कोई न दिखायी न देने पर बोला — "यह कौन पुकार रहा है मुझे।"

मास्टर चोर बोला — "यह मैं हूॅ भगवान का भेजा हुआ देवदूत[45]। उसने मुझे तुमसे यहॉ यह कहने के लिये भेजा है कि क्योंकि तुम इतने पवित्र और पुन्य आत्मा हो इसलिये तुमको ज़िन्दा ही स्वर्ग ले जाया जायेगा।

[43] Maple tree is a special tree native to Asia, Europe, Northern Africa and North America. It has approximately 128 species. Only one species extends to the Europe. See its picture above.
[44] Father Lawrence was the name of the Priest.
[45] Translated for the word "Angel".

अगले सोमवार को तुम स्वर्ग जाने के लिये तैयार रहना। मैं तुमको, तुम्हारे सोने और चॉदी को और और जो कुछ भी तुम्हारे पास इस दुनियॉ में है उस सबको स्वर्ग ले जाने के लिये एक थैला ले कर आऊॅगा। तुम अपने खाने के कमरे में इन सबका ढेर लगा कर रखना।"

यह सुनते ही फादर लौरेन्स उस देवदूत के सामने घुटनों के बल बैठ गया और उसको बहुत बहुत धन्यवाद दिया।

अगले दिन उसने अपना विदाई वाला आखिरी भाषण[46] दिया। उसने उसमें यह भी बताया कि कैसे उसके बागीचे में एक देवदूत मैपिल के पेड़ पर आ कर बैठा था और फिर कैसे उसने उससे कहा कि वह उसको उसकी पवित्रता और उसके पुन्य आत्मा होने की वजह से ज़िन्दा ही स्वर्ग ले जायेगा।

वह भाषण देता रहा और उसने उस दिन इतना भावुक भाषण दिया कि वहॉ बैठे बच्चे बूढ़े जवान सभी रो पड़े।

अगले सोमवार की रात को मास्टर चोर देवदूत की शक्ल में आया तो पादरी ने थैले में रखे जाने से पहले उसको उसके पैरों पर गिर कर बहुत बहुत धन्यवाद दिया और फिर थैले में अन्दर घुस कर बैठ गया।

जैसे ही वह थैले में ठीक से अन्दर घुस गया मास्टर चोर ने उस थैले को कस कर बॉध दिया और पत्थरों पर घसीट कर उसे खींचने

[46] Translated for the word "Sermon".

लगा। और वह तब तक उसको घसीटता रहा जब तक कि पादरी के शरीर की हड्डी हड्डी नहीं टूट गयी।

बेचारा पादरी थैले के अन्दर से "आउ आउ। हम लोग कहॉ जा रहे हैं।" चिल्लाता रहा।

मास्टर चोर बोला — "स्वर्ग जाने का यह रास्ता ज़रा तंग है।" और वह उस थैले को तब तक घसीटता रहा जब तक कि पादरी के शरीर का चूरा चूरा नहीं हो गया।

वह उसको घसीटते घसीटते जमींदार की बतखों के घर में ले गया जहॉ उसकी बतखों ने उसको चोंच मार मार कर उसको नोचना शुरू कर दिया और घायल कर दिया। इससे तो वह ज़िन्दा कम और मरा सा ज़्यादा हो गया।

मास्टर चोर बोला — "अब तुम परगेटरी[47] में हो जहॉ तुमको अमर बनाने के लिये तुम्हारी सफाई की जायेगी और तुमको पवित्र किया जायेगा।"

इसके बाद वह पादरी को वहीं छोड़ कर उसके खाने के कमरे से उसका सोना चॉदी उठा कर अपने घर चला गया।

अगली सुबह जब बतखों की देखभाल करने वाली लड़की बतखों को बाहर निकालने आयी तो उसने सुना कि कोई थैले में बॅधा पड़ा था और आह आह कर रहा था।

[4747] According to Catholic Church doctrine, Purgatory is an intermediate state after physical death in which those destined for heaven "undergo purification, so as to achieve the holiness necessary to enter the joy of heaven.

लड़की ने उसकी आहें सुन कर पूछा — "भगवान के लिये बोलो इस थैले में कौन है और उसे क्या तकलीफ है।"

पादरी बोला — "ओह अगर तुम स्वर्ग के देवदूत हो तो मेहरबानी कर के मुझे बाहर निकालो और मुझे धरती पर वापस जाने दो। क्योंकि यह जगह तो नरक से भी ज़्यादा खराब है। ये मेरे छोटे छोटे दोस्त तो मुझे चिमटे[48] से पकड़ कर नोचे डाल रहे हैं।"

लड़की बोली — "हे भगवान हमारी सहायता करो। मैं देवदूत नहीं हूँ।" कहते हुए लड़की ने पादरी को थैले में से बाहर निकाला। "मैं तो केवल जमींदार की बतखों की देखभाल करने वाली हूँ। ये बतखें ही वे तुम्हारे छोटे दोस्त हैं जिन्होंने तुमको नोचा है।"

पादरी कराहता हुआ बोला — "ओह तो यह उस मास्टर चोर का काम है। मेरा सोना, मेरी चाँदी, मेरे सारे अच्छे कपड़े। उफ़।"

वह अपनी छाती पीटता हुआ इतनी तेज़ी से घर भागा कि उस लड़की को लगा कि उसकी तो सारी अक्ल बिल्कुल ही चली गयी।

जब जमींदार को पता चला कि पादरी के साथ क्या हुआ और कैसे वह स्वर्ग जाने के तंग रास्ते से गुजरा और परगेटरी में पहुँचा तो वह बहुत हँसा ओर इतना हँसा कि हँसते हँसते उसकी तो पसलियाँ तक दुखने लगीं।

[48] Translated for the word "Tongs". See its picture above.

जब मास्टर चोर फिर से उसकी बेटी का हाथ मॉगने आया तो उसने उससे कहा — "पहले तुमको इससे भी अच्छा एक और काम करना पड़ेगा ताकि मुझे पता चल जाये कि तुम किस लायक हो।

देखो मेरे अस्तबल में बारह घोड़े हैं। मैं उन घोड़ों पर बारह घुड़सवार बैठा दूँगा। अगर तुम इतने अच्छे चोर हो जो उन बारह घोड़ों को उन घुड़सवारों के नीचे से चुरा कर ले आओगे तब मैं देखूँगा कि मैं तुम्हारे लिये मैं क्या कर सकता हूँ।"

मास्टर चोर बोला — "यह क्या मुश्किल काम है। मै इसे कर सकता हूँ। पर अगर मैंने आपका यह काम कर दिया तो क्या मैं सचमुच ही आपकी बेटी से शादी कर सकता हूँ?"

जमींदार बोला — "अगर तुम यह कर सकते हो तो मैं भी अपनी भरपूर कोशिश करूँगा।"

मास्टर चोर एक दूकान पर गया और वहॉ से उसने दो बोतल ब्रैन्डी[49] खरीदी। उनमें से एक बोतल में उसने सोने वाली दवा मिला दी और दूसरी ऐसे ही छोड़ दी।

फिर उसने ग्यारह आदमी किराये पर लिये और उनको जमींदार के अस्तबल के पीछे लिटा दिया। उसके बाद उसने मीठा बोल कर और काफी पैसे दे कर एक स्त्री से फटे कपड़े का एक गाउन और एक शाल[50] उधार लिया।

[49] Brandy is a kind of liquor.

[50] Translated for the word "Cloak" – a fashionable rich or plain cloth worn over the dress to cover or to keep oneself warm. It may be short up to the waist or long up to the ankle. See its picture above.

शाम होने पर उसने ये कपड़े पहने, अपने एक हाथ में एक डंडा लिया और पीठ पर एक गठरी लटका कर लॅगड़ाता हुआ जमींदार के अस्तबल की तरफ चल दिया।

जब वह वहॉ पहुॅचा तो वे लोग रात के लिये घोड़ों को पानी पिला रहे थे और वहॉ का काम कर रहे थे।

जब उन्होंने एक बुढ़िया को वहॉ आते देखा तो उन्होंने उससे पूछा — "ओ शैतान तुझे क्या चाहिये?"

बुढ़िया बने मास्टर चोर ने कॉपते हुए और बुरा सा मुॅह बनाते हुए जवाब दिया — "ओह आज बाहर बड़ी ठंड है। इतनी ज़्यादा ठंड है कि अगर बेचारा कोई गरीब हो तो वह तो बस मर ही जाये।" और यह कह कर वह फिर से कॉपने लगी।

कॉपते कॉपते वह फिर बोली — "भगवान के लिये क्या मुझे आज रात को इस अस्तबल के अन्दर सोने के लिये यहॉ थोड़ी सी जगह मिल सकती है?"

एक बोला — "चल शैतान के लिये तू यहॉ भाग क्योंकि अगर जमींदार ने तुझे यहॉ देख लिया तो वह तो हम सबको नचा ही देगा।"

एक दूसरे आदमी को उस पर दया आ गयी तो वह बोला — "ओ पुरानी हड्डियों की गठरी। चल अन्दर आ कर बैठ जा। यह हमारा क्या बिगाड़ सकती है।"

बाकी बचे हुए लोगों में से कुछ ने कहा कि इसको अन्दर मत आने दो जबकि कुछ ने कहा कि उसको अन्दर आने दो।

जब वे आपस में इस बात पर लड़ रहे थे कि उसको अन्दर आने दिया जाये या नहीं और साथ में घोड़ों की भी देखभाल कर रहे थे वह बुढ़िया उस अस्तबल में और आगे तक चलती चली गयी और दरवाजे के पीछे जा कर बैठ गयी।

जब वह इतनी दूर पहुँच गयी तो किसी का ध्यान भी उस पर नहीं गया।

जैसे जैसे रात बढ़ती गयी उन आदमियों को उतनी ठंड में उन घोड़ों के ऊपर शान्ति से बैठना बहुत मुश्किल हो गया। एक ने अपनी बाँहें अपने सीने के दोनों तरफ कीं और बोला — "ओह आज कितना ठंडा है।"

दूसरा बोला — "वह तो है। मैं तो जमा जा रहा हूँ जिससे मेरे तो दाँत ही किटकिटाये जा रहे हैं।"

तीसरा बोला — "काश यहाँ पर पीने के लिये शराब होती।"

एक आदमी वहाँ ऐसा था जिसके पास थोड़ी सी शराब थी सो उन लोगों ने उसी को आपस में बाँट लिया। अब वह ज़्यादा तो थी नही सो बहुत जल्दी ही वे लोग फिर से अपनी पुरानी हालत में आ गये। वे फिर से काँपने लगे थे।

बुढ़िया ने भी कहा "उफ़।" और काँपने लगी। उसका हर दाँत एक दूसरे से टकरा कर बज रहा था। फिर उसने अपनी वह

वाली बोतल निकाली जिसमें शराब थी। उसमें से उसने इतना बड़ा घूँट पिया कि उसको पीने से उसके गले में से बहुत ज़ोर की आवाज हुई।

एक घुड़सवार ने वह आवाज सुन कर उससे पूछा — "ओ बुढ़िया तेरी इस बोतल में क्या है।"

मास्टर चोर बोला — "कुछ खास नहीं बस थोड़ी सी ब्रैन्डी है।"

बारहों घुड़सवार चिल्लाये — "ब्रैन्डी? मैं तो ब्रैन्डी कभी नहीं पीता। पर फिर भी इस समय इसमें से थोड़ी सी मुझे भी दे।"

बुढ़िया बोली — "ओह यह तो बहुत ही थोड़ी सी है। इससे तो तुम लोगों का मुँह भी गीला नहीं होगा।"

पर उनको तो चाहिये थी और उन्होंने उससे वह ले कर रही क्योंकि इसके अलावा और कोई रास्ता नहीं था। बुढ़िया ने अपनी दूसरी वाली बोतल निकाली जिसमें सोने वाली दवा पड़ी थी और पहले आदमी के होठों से लगा दी।

उसके बाद बुढ़िया का तो कॉपना बन्द हो गया और उसने वह बोतल और दूसरे लोगों के मुँह से लगानी शुरू कर दी ताकि वे अपनी मनचाही पी सकें।

बारहवें ने जब तक पीनी शुरू की तब तक पहला आदमी तो सो भी गया था। वह तो अब बैठे बैठे खर्राटे मार रहा था।

बस मास्टर चोर ने अपना गाउन और शाल उतारा और उन बारहों घुड़सवारों को एक के बाद एक बहुत ही सावधानी से घोड़ों की पीठ से उतारा और उनको वहीं पास में बिठा दिया।

फिर उसने अपने ग्यारह आदमी बाहर से बुलाये और जमींदार के बारहों घोड़े ले कर चलता बना।

सुबह को जब जमींदार सो कर उठा और अपने घुड़सवारों को देखने के लिये गया तो वे भी तभी जाग रहे थे। बल्कि उनमें से कुछ तो तभी भी गिरे गिरे से हो रहे थे। कुछ उनमें से अभी भी बेवकूफ से भी लग रहे थे।

जमींदार ज़ोर से हॅसा — "हो हो हो हो। मैं सब समझ गया कि यहॉ कौन आया था। पर जहॉ तक तुम लोगों का सवाल है तुम लोग तो इतने सिरफिरे हो कि तुम यहॉ बैठे रहे और उस मास्टर चोर को अपनी ऑखों के सामने से उन घोड़ों को ले जाने दिया।"

क्योंकि उन्होंने उन घोड़ों की ठीक से देखभाल नहीं की थी सो उनकी खूब पिटायी हुई।

अगले दिन मास्टर चोर जमींदार के पास फिर आया और उसको बताया कि यह सब उसने कैसे किया और उसकी बेटी का हाथ मॉगा जैसा कि उसने उससे वायदा किया था।

पर जमींदार ने उसको इस बार सौ डालर दिये और कहा कि अबकी बार उसको इससे भी अच्छा कुछ करना चाहिये तभी वह इसके बारे में सोचेगा — "तुमने ये घोड़े इन लापरवाह घुड़सवारों के

नीचे से तो चुरा लिये पर तुम क्या सोचते हो कि क्या तुम मेरे नीचे से मेरे घोड़े को भी चुरा सकते हो जबकि मैं उसके ऊपर बैठा हुआ हूँ।"

मास्टर चोर बोला — "बिल्कुल। मैं दावे के साथ कह सकता हू कि हॉ मैं ऐसा कर सकता हूँ। मैं आपके नीचे से आप ही का घोड़ा चुरा सकता हूँ अगर मुझे आपकी बेटी से शादी करनी है तो।"

यह धमकी सुन कर जमींदार ने सोचा "देखता हूँ कि मैं क्या कर सकता हूँ।"

सो उसने मास्टर चोर से कहा कि वह फलॉ फलॉ दिन एक खुले मैदान में घूमने जायेगा जहॉ मिलिटरी को लोगों की ड्रिल होती थी।

बस मास्टर चोर ने समझ लिया कि उसको क्या करना है। उसने एक पुरानी घोड़ी ली और अपने काम पर लग गया। उसने झाड़ू की सींकों और पेड़ों की डंडियों के कालर बनाये और एक भिखारियों वाली गाड़ी खरीदी। उसने एक इतना बड़ा डिब्बा भी खरीदा जिसमें एक आदमी बैठ सके।

यह सब करने के बाद उसने एक बुढ़िया भिखारिन से कहा कि वह उसको दस डालर देगा अगर वह उस डिब्बे के अन्दर घुस जाये और अपना मुँह उसके छेद के ऊपर खोल कर रखे जिसके अन्दर बाद में वह अपनी उँगली अटका देगा।

इससे उसको कोई नुकसान नहीं पहुँचेगा। वह बस थोड़ी ही दूर तक ले जायी जायेगी। और अगर उसके मुँह में से वह अपनी

उँगली एक बार से ज़्यादा निकालेगा वह उसको दस डालर और देगा। बुढ़िया राजी हो गयी और उस डिब्बे में बैठ गयी।

उधर कोई उसे पहचाने नहीं इसलिये उसने थोड़े से फटे कपड़े पहने, अपने सिर पर एक विग[51] लगायी और बकरे के लम्बे बालों की एक लम्बी दाढ़ी लगायी और उस खुले मैदान की तरफ चल दिया जहाँ वह जमींदार पहले से ही अपने घोड़े की सवारी कर रहा था।

जब वह वहाँ पहुँचा तो वह वहाँ इतनी धीमे से गया कि वह वहाँ एक एक इंच कर के खिसक रहा था। थोड़ा और आगे जा कर वह खड़ा हो गया। वह फिर थोड़ा चला और फिर जा कर रुक गया। इससे जमींदार को एक बार भी यह सपने में भी नहीं आया कि यह मास्टर चोर हो सकता है।

एक आदमी को अपनी तरफ आता देख कर आखिर जमींदार उसकी तरफ को आया और उससे पूछा कि क्या उसने किसी को जंगल में घूमते देखा है।

मास्टर चोर बोला — "नहीं मैंने तो नहीं देखा।"

"अगर तुम जंगल की तरफ जा रहे हो और इधर उधर देखो और अगर तुमको कोई वहाँ घूमता हुआ दिखायी दे जाये तो तुम

[51] Wig – wig is a cap like thing with artificial hair which is worn to change the look of the face or to cover the baldness.

मेरा घोड़ा ले सकते हो और अपनी तकलीफों के लिये एक शिलिंग[52] भी ताकि तुम मेरी तन्दुरुस्ती के लिये पी सको।"

मास्टर चोर बोला — "मालूम नहीं मैं वहॉ कैसे जा सकता हूँ क्योंकि मैं तो इस शराब को ले कर एक शादी में जा रहा हूँ।

इस डिब्बे को लाने के लिये मैं शहर गया था। पर किसी तरीके से इसकी टोंटी गिर पड़ी है। सो अब मुझे इसकी टोंटी के छेद में अपनी उँगली लगाये लगाये ही वहॉ तक जाना पड़ेगा।"

"कोई बात नहीं। तुम इस घोड़े पर से नीचे उतरो और तब तक मैं तुम्हारे घोड़े और तुम्हारे इस डिब्बे की देखभाल करूँगा।"

इस शर्त पर मास्टर चोर जाने के लिये तैयार हो गया। पर उसने जमींदार से कहा कि जब मैं उस डिब्बे के छेद में से अपनी उँगली निकालूँ तो वह खुद जल्दी से जल्दी ही पीपे के उस छेद में अपनी उँगली घुसा दे और उसका ख्याल रखे कि वह उसको वहीं रखे रहे जब तक वह वापस आता है।

ऐसा कर के वह वहॉ से चला गया।

जमींदार उसके पीपे के छेद में अपनी उँगली फँसाये खड़ा रहा। पर इस तरह वह कब तक खड़ा रहता आखिर वह इस तरह से खड़े खड़े थक गया तो उसने उसमें से अपनी उँगली निकाल ली।

[52] Shilling is now an old currency used in European countries. They were Pound, Shilling and Pence.

उसके उँगली निकालते ही पीपे के अन्दर बैठी बुढ़िया बोली — "आहा अब मुझे दस डालर और मिलेंगे।"

यह सुन कर जमींदार तुरन्त अपने घर की तरफ चल दिया पर वह अभी कुछ ही दूर गया होगा कि उसको एक नया घोड़ा मिला क्योंकि मास्टर चोर तो तब तक उसके घर पहुँच चुका था और उनसे उसने एक और घोड़ा भेजने के लिये कह दिया था।

तीसरे दिन मास्टर चोर फिर जमींदार के घर गया और उसकी बेटी का हाथ माँगा जैसा कि उसने उससे वायदा किया था पर जमींदार ने उसको फिर से मीठे शब्द कह कर फिर से टरका दिया।

उसने अबकी बार उसको दो सौ डालर दिये और कहा कि अबकी बार उसको अपना सबसे अच्छा कारनामा दिखाना चाहिये। अगर वह वह कर सका तभी वह उसकी बेटी को पा सकेगा।

मास्टर चोर ने कहा कि वह उसका वह काम कर देगा अगर उसको यह पता हो तो कि उसको करना क्या है।

जमींदार बोला — "क्या तुम हमारे नीचे से हमारे बिस्तर की चादर निकाल सकते हो? और क्या तुम मेरी पत्नी की पीठ पर से उसकी रात को सोने वाली कमीज निकाल सकते हो? तुम क्या सोचते हो कि क्या तुम यह काम कर सकते हो?"

मास्टर चोर बोला — "हो जायेगा। पर बस मेरी यही इच्छा है कि इसके बाद मुझे आपकी बेटी मिल जानी चाहिये। मैं अब और इन्तजार नहीं कर सकता।"

सो जब रात होने लगी तो मास्टर चोर बाहर गया और एक चोर को जो फॉसी पर चढ़ा हुआ था अपने कन्धे पर लाद कर ले आया। फिर उसने एक लम्बी सी सीढ़ी ली और उसे जमींदार के सोने के कमरे की खिड़की के सहारे खड़ा कर दिया।

फिर वह उस लाश को ले कर उस सीढ़ी पर चढ़ गया और उस चोर की लाश के सिर को नीचे की तरफ लटका कर ऊपर नीचे हिलाने लगा। इससे ऐसा लग रहा था जैसे कि उस चोर की लाश जमींदार के सोने के कमरे में झॉक रही हो।

जमींदार जाग रहा था। उसने यह देखा तो पहले तो डर गया पर फिर उसको मास्टर चोर को दिये हुए अपने काम का ध्यान आया तो उसने सोचा कि हो न हो यह जरूर ही मास्टर चोर होगा।

जमींदार बोला — "लगता है कि यह तो वह मास्टर चोर है। आज मैं इसका खात्मा कर के ही रहूँगा।" कह कर उसने अपनी पत्नी को एक हल्का सा धक्का दिया और बोला — "देखना अब अगर मैंने इसको गोली नहीं मारी तो।"

कह कर उसने अपने बिस्तर के पास रखी अपनी राइफल उठायी। पत्नी तुरन्त ही बोली — "अरे नहीं नहीं। तुम उसको मत मारो। वह आ कर फिर कोशिश करेगा।"

"तुम मुझसे बात मत करो। मुझे तो उसे गोली मारनी है और मैं उसको गोली मारूँगा।"

वह वहीं बिस्तर पर पड़ा पड़ा अपनी राइफल से उस लाश की तरफ निशाना साधता रहा पर जब भी उस लाश का सिर खिड़की के ऊपर आता तो वह उसको बहुत थोड़ा सा ही दिखायी देता और फिर जल्दी ही नीचे चला जाता।

एक बार उसको लगा कि अब उसका निशाना ठीक से सध गया है बस उसने गोली चला दी। एक धमाके के साथ वह लाश नीचे जमीन पर गिर पड़ी। मास्टर चोर भी तुरन्त ही ऊपर से नीचे उतर आया।

जमींदार बोला — "यह तो ठीक है कि मैं यहॉ की जगह का बड़ा मजिस्ट्रेट हूँ पर लोग तो बात करना पसन्द करते हैं वे कुछ न कुछ तो बात करेंगे ही। अगर कोई यहॉ आ कर यह लाश देखेगा तब तो मेरी बड़ी बदनामी हो जायेगी इसलिये मुझे इस लाश को दफ़ना देना चाहिये।"

उसकी पत्नी बोली — "जैसा तुमको ठीक लगे तुम वैसा ही करो।"

सो जमींदार अपने बिस्तर में से निकला और सीढ़ियों से नीचे गया। उसने अपना पैर मुश्किल से घर के दरवाजे के बाहर रखा था कि मास्टर चोर उसके घर के अन्दर घुस गया और सीधा उसकी पत्नी के पास गया।

पत्नी को लगा कि उसका पति वापस आ गया। वह बोली — "अरे तुम इतनी जल्दी वापस आ गये।"

मास्टर चोर बोला — "हॉ अभी तो मैंने उसको एक गड्ढे में डाल कर उसके ऊपर थोड़ी सी मिट्टी डाल दी है। इस समय वह वहॉ किसी को दिखायी नहीं दे रहा है बस इतना ही काफी है क्योंकि आज की रात बाहर मौसम बहुत खराब है। धीरे धीरे मैं सब ठीक कर दूँगा।

पर मुझे ज़रा बिस्तर की चादर तो दो जिससे मैं अपने ऊपर लगे खून के धब्बे पोंछ सकूँ। उसके शरीर से बहुत खून निकल रहा था और उसको गडढे में डालने से मैं बहुत गन्दा हो गया।"

और इस तरह से उसने जमींदार के बिस्तर की चादर निकाल ली।

कुछ पल बाद ही वह फिर बोला — "तुम्हें मालूम है कि तुमको मुझे अपनी रात को सोने की कमीज भी दे देनी चाहिये क्योंकि मैं देख रहा हूँ कि खाली बिस्तर की चादर से काम नहीं चलने का। मैं कुछ ज़रा ज़्यादा ही गन्दा हो गया हूँ।"

सो उसकी पत्नी ने अपनी कमीज भी उसको दे दी। कमीज ले कर उसने उसकी पत्नी से कहा कि लगता है वापस आते समय वह घर का दरवाजा बन्द करना तो भूल ही गया। इसलिये वह यह देखने के लिये नीचे जा रहा है कि उसने दरवाजा बन्द किया कि नहीं।

और बस वह चादर और कमीज ले कर वहॉ से चला गया।

कुछ देर बाद ही असली जमींदार आ गया। उसकी पत्नी ने पूछा — "प्रिये तुमको दरवाजा बन्द करने में इतनी देर क्यों लग गयी। और तुमने चादर और कमीज का क्या किया।"

जमींदार ने पूछा — "क्या कहा तुमने?"

"मैं पूछ रही हूँ कि तुमने चादर और मेरी कमीज का क्या किया जिनसे तुमने खून साफ किया था।"

जमींदार चिल्लाया — "उफ, क्या इसने मुझे इस बार भी हरा दिया?"

अगले दिन मास्टर चोर जमींदार के घर आया। उसने उसको उसके बिस्तर की चादर और उसकी पत्नी की कमीज दी और उससे उसकी बेटी का हाथ माँगा जैसा कि उसने उससे वायदा किया था।

अबकी बार वह उसको ना नहीं कर सका। उसको अपनी बेटी उसको देनी ही पड़ी। साथ में काफी सारा पैसा भी।

क्योंकि सच तो यह है कि वह अब मास्टर चोर का कोई भी इम्तिहान लेने से डर रहा था कि कहीं ऐसा न हो कि वह उसके सिर से उसकी आँखें ही न निकाल ले। साथ में यह भी कि अगर उसने अपना वायदा तोड़ा तो लोग उसके बारे में अपमानजनक बातें न करने लगें।

शादी के बाद मास्टर चोर अपनी पत्नी के साथ खुशी खुशी रहने लगा।

अब यह तो हमें पता नहीं कि शादी के बाद उसने फिर कोई चोरी की या नहीं। पर अगर उसने कोई चोरी की भी होगी तो हमें यकीन है कि वह उसने केवल आनन्द के लिये ही की होगी।

11 समुद्र खारा क्यों[53]

एक बार की बात है कि बहुत बहुत बहुत दिन पहले दो भाई रहा करते थे। उनमें से बड़ा भाई अमीर था और छोटा भाई गरीब था।

एक बार एक किसमस की शाम[54] को गरीब भाई के पास खाने के लिये कुछ ज़्यादा नहीं था। न तो मॉस ही था और न ही रोटी थी सो वह अपने अमीर भाई के पास गया और भगवान के नाम पर खाने के लिये उससे कुछ मॉगा ताकि वह किसमस मना सके।

अब यह कोई पहला मौका तो था नहीं जब उसका भाई उसकी सहायता करने पर मजबूर हुआ था पर तुम यह भी सोच सकते हो कि वह उसको देख कर खुश नहीं हुआ।

फिर भी वह बोला — "अगर जो कुछ मैं कहूँ तुम वही करोगे तो मैं तुमको काफी सारा सूअर का मॉस[55] दे दूँगा।"

सो वह गरीब भाई बेचारा बोला कि वह उसके लिये वह सब कुछ करने के लिये तैयार था जो भी वह कहेगा और इस बात के लिये उसने उसको बहुत धन्यवाद भी दिया।

अमीर भाई बोला — "तो लो यह लो सूअर का मॉस और बस अब तुम नरक चले जाओ।"

---

[53] Why the Sea is Salt – a folktale from Norway Countries, Europe. Translated from the Web Site : http://www.sacred-texts.com/neu/ptn/ptn12.htm
Taken from "Popular Tales from the Norse". By George Webbe Dasent. 1904.

[54] Translated for the words "Christmas Eve" – it is the evening of 24th December.

[55] Translated for the word "Bacon"

गरीब भाई कुछ दुखी हो कर बोला — "अब क्योंकि मैंने वही करने का वायदा किया है कि जो तुम कहोगे इसलिये मैं वही करूँगा जो तुमने मुझसे करने के लिये कहा है।"

उसने अपना सूअर का मॉस उठाया और वहॉ से चल दिया। वह सारे दिन चलता रहा। शाम को वह एक ऐसी जगह आ गया जहॉ बहुत तेज़ रोशनी हो रही थी। उसने सोचा शायद यही वह जगह होगी जहॉ मेरा भाई चाहता है कि मैं जाऊँ सो वह उधर ही की तरफ चल दिया।

सबसे पहले उसको एक बूढ़ा मिला जिसकी बहुत लम्बी सफेद दाढ़ी थी। वह एक छोटे से घर[56] में खड़ा हुआ था और किसमस के मौके पर आग जलाने के लिये कुल्हाड़ी से लकड़ी काट रहा था।

गरीब भाई बोला — "गुड ईवनिंग।"

बूढ़ा बोला — "तुमको भी गुड ईवनिंग। पर इतनी देर से तुम इधर कहॉ जा रहे हो?"

"ओह मैं? मैं इधर से नरक जा रहा हूँ। काश मुझे वहॉ जाने का ठीक रास्ता पता होता।"

बूढ़ा बोला — "तुम कोई ज़्यादा गलत रास्ते पर नहीं हो। यह नरक ही है। जब तुम इसके अन्दर जाओगे तो सब लोग वहॉ पर

[56] Translated for the word "Outhouse"

तुम्हारा यह सूअर का मॉस खरीदने के लिये खड़े होंगे क्योंकि नरक में मॉस बड़ी मुश्किल से मिलता है।

पर ध्यान रखना कि तुम अपना यह मॉस उनको उस समय तक मत बेचना जब तक वे तुमको अपनी हाथ से चलाने वाली चक्की न बेच दें। वह चक्की वहीं दरवाजे के पीछे रखी है।

जब तुम उसको ले कर बाहर आ जाओगे तब मैं तुम्हें बता दूँगा कि उसको कैसे इस्तेमाल करना है। क्योंकि वह किसी भी चीज़ को पीस सकती है।"

सो उस गरीब भाई ने उस बूढ़े को उसकी इस अच्छी सलाह के लिये धन्यवाद दिया और शैतान[57] के घर के दरवाजे को बहुत ज़ोर से खटखटाया।

दरवाजा खुला और वह छोटा भाई अन्दर गया तो जैसा उस बूढ़े ने उससे कहा था वैसा ही हुआ। वहॉ सारे छोटे बड़े शैतान चींटियों की तरह से उसके चारों तरफ इकट्ठा हो गये। उनमें से हर एक उसके मॉस के लिये ज़्यादा से ज़्यादा पैसे देने को तैयार था।

आदमी बोला — "हालॉकि इस मॉस पर मेरा और मेरी पत्नी का तुम सब लोगों से ज़्यादा अधिकार है पर क्योंकि तुम लोगों को यह बहुत ज़्यादा पसन्द आ गया है तो मैं इसे तुमको दे देता हूँ।

[57] Translated for the word "Devil"

पर अगर मैं इसे तुम्हें बेचता हूँ तो मुझे इसके बदले में हाथ की चक्की चाहिये जो तुम्हारे दरवाजे के पीछे रखी है।"

पहले तो शैतान ने इस तरह के सौदे को सुना ही नहीं और केवल उससे मॉस देने के लिये ही कहता रहा पर वह आदमी भी अपनी बात पर अड़ा ही रहा। सो आखिर उस शैतान को उस आदमी के मॉस के बदले में अपनी चक्की उसको देनी ही पड़ी।

उस आदमी ने शैतान को मॉस दिया, अपनी चक्की उठायी और घर के बाहर आ गया। बाहर आ कर उसने उस बूढ़े से उस चक्की को इस्तेमाल करना सीखा और जब उसने वह उससे सीख लिया तो वह जितनी जल्दी से वहॉ से आ सकता था उतनी जल्दी से अपने घर आ गया।

फिर भी उसके आने से पहले ही घड़ी ने रात के बारह बजा दिये थे। उसकी पत्नी पूछा — "अरे तुम कहॉ रह गये थे यहॉ मैं तुम्हारा घंटों से लकड़ी की ये दो डंडियॉ लिये क्रिसमस की आग जलाने के लिये इन्तजार कर रही हूँ।"

आदमी बोला — "मुझे बहुत अफसोस है कि मैं इससे पहले आ ही नहीं सका क्योंकि मुझे पहले एक चीज़ के लिये एक तरफ जाना पड़ा और फिर दूसरी चीज़ के लिये दूसरी तरफ। पर अब तुम देखो कि मैं तुम्हें क्या दिखाता हूँ।"

कह कर उसने अपनी चक्की निकाली और उसे एक मेज पर रख दी। सबसे पहले उसने रोशनी पिसवायी, फिर मेजपोश

पिसवाया, फिर मॉस पिसवाया और फिर शराब पिसवायी। उसके बाद वह तब तक चीज़ें पिसवाता रहा जब तक उसके पास क्रिसमस मनाने के लिये उसकी जरूरत का सब सामान नहीं हो गया।

उसको बस एक शब्द बोलने की जरूरत थी और चक्की उसके लिये वह सब पीस देती थी जो वह कहता था।

उसकी पत्नी तो बस अपने सितारों की तारीफ करती ही खड़ी रह गयी। वह तो बस बार बार यही पूछती रही कि यह चक्की उसके पास आयी कहॉ से। पर उसने उसको बता कर नहीं दिया कि वह उसके पास कहॉ से आयी।

"बस यही तो एक चीज़ है जो मैंने पायी है। तुम देख रही हो न कि यह कितनी अच्छी है। इसके अलावा इसके पीसने की धार कभी जमती नहीं है।"

सो उसने मॉस, शराब और बहुत सारी चीज़ें उस चक्की से पीसीं जो उसके लिये बारह दिन तक चलती रहतीं।

तीसरे दिन उसने अपने दोस्तों और रिश्तेदारों को एक बहुत बढ़िया दावत खाने के लिये अपने घर बुलाया। इस दावत में उसका भाई भी था।

जब उसके भाई ने मेज पर इतना सारा सामान देखा और साथ में उसके भंडार में उससे भी ज़्यादा सामान देखा तो वह बहुत परेशान हो गया। क्योंकि वह तो यह बात सह ही नहीं सका कि उसके भाई के पास थोड़ा सा भी कुछ हो।

उसने लोगों से कहा — "यह अभी क्रिसमस की शाम की ही तो बात है कि यह बहुत दुखी था और मुझसे भगवान के नाम पर एक कौर खाने का मॉग रहा था। और आज तो यह इतनी शानदार दावत दे रहा है जैसे यह कोई काउन्ट[58] या राजा हो।"

फिर वह अपने भाई की तरफ पलटा और उससे कहा — "नरक के नाम पर तुमको यह इतनी सारा खजाना कहॉ से मिल गया?"

चक्की के मालिक ने कहा — "दरवाजे के पीछे से।" क्योंकि उसने इस बात की बिल्कुल चिन्ता नहीं की कि वह अपनी चक्की का भेद खोल रहा है।

बाद में शाम को जब उसने कुछ ज़्यादा ही पी ली तो वह इस भेद को बिल्कुल ही नहीं छिपा सका। वह अन्दर से अपनी चक्की निकाल लाया और बोला — "देखो क्या चीज़ मेरे लिये यह खजाना ले कर आयी है।" और यह कह कर उसने उस चक्की से बहुत तरीके की चीज़ें बनाना शुरू कर दिया।

जब उसके भाई ने यह देखा तो उसका दिल उसको लेने पर आ गया और काफी पीछे पड़ने के बाद उसने उससे वह चक्की ले ली। पर इसके बाद उसको उसे तीन सौ डालर देने पड़े।

[58] Count (male) or countess (female) is a title in European countries for a noble of varying status, but historically deemed to convey an approximate rank intermediate between the highest and lowest titles of nobility.

गरीब भाई ने चक्की के लिये यह सौदा किया कि वह उसको केवल अपनी फसल काटने तक रखेगा फिर उसको दे देगा।

क्योंकि गरीब भाई ने सोचा कि अगर मैंने इसको तब तक रख लिया तो तब तक तो मैं इससे काफी मॉस और शराब बना लूँगा जो मेरे लिये सालों तक चलेगा। इस तरह से चक्की को भी बिना काम के जंग नहीं लगेगा।

सो जब फसल काटने का समय आया तो अमीर भाई ने उसको अपने गरीब भाई से ले लिया। गरीब भाई ने जान बूझ कर अपने अमीर भाई को उस चक्की को पूरी तरह से इस्तेमाल करना नहीं सिखाया।

शाम के समय बड़ा भाई उस चक्की को ले कर घर आ गया। अगले दिन सुबह सुबह उसने अपनी पत्नी को अनाज फटकने के लिये खेत भेज दिया और घास काटने वालों ने घास काटनी शुरू कर दी। वह घर में खाना बनाने के लिये घर रह गया।

जब खाना खाने का समय आया तो उसने उस चक्की को मेज पर रखा और उससे कहा — "तुम मछली और सूप बनाओ और देखो उनको बहुत ही अच्छा और जल्दी बनाना।"

यह सुन कर चक्की ने मछली और सूप बनाना शुरू कर दिया। अब सबसे पहले तो खाना रखने वाले बर्तन भरे, फिर बाद में बड़े बड़े टब भरे। लेकिन जब उसको रोका नहीं गया तो वह सूप आदि

उन टबों में से निकल कर बाहर निकल कर रसोईघर के फर्श पर बिखरने लगा।

यह देख कर बड़ा भाई बेचैन हो उठा। वह उसको कैसे रोके उसकी समझ में ही नहीं आ रहा था।

वह उसके सामने कभी इधर को मुड़ रहा था तो कभी उधर को। कभी वह उसके इधर को उँगली दिखा रहा था तो कभी उधर को। पर इससे तो कुछ भी नहीं हो रहा था। वह चक्की रुक ही नहीं रही थी।

सूप इतना ज़्यादा बिखरता जा रहा था कि अब वह बड़ा भाई भी उसमें डूबने वाला हो रहा था। डर के मारे उसने रसोईघर का दरवाजा खोला और बाहर की तरफ भागा।

पर यह तो काफी नहीं था। इतनी देर में चक्की ने सूप को बना कर बाहर तक फैला दिया था। किसी तरह से अपनी जान बचा कर उस सूप में से हो कर वह अपने घर के बाहर का दरवाजा खोल सका।

उसने अपने घर का दरवाजा खोला और घर के बाहर भागा और उसके पीछे पीछे भागे मछली और सूप के समुद्र। ऐसा लग रहा था जैसे सारे खेत पर कोई बहुत बड़ा झरना गिर रहा हो।

इधर उसकी पत्नी को जो खेत में अनाज फटक रही थी लगा कि अब तो खाने के समय को भी काफी देर हो गयी है सो उसने घास काटने वाले मजदूरों से कहा — "हालॉकि मालिक ने अभी

हमको खाना खाने के लिये नहीं बुलाया है फिर भी अब हम घर जा सकते हैं।

हो सकता है कि उनको सूप बनाने में देर लग रही हो और अगर मैं उसको सूप बनाने में उनकी सहायता करूँ तो शायद उनको अच्छा लगे।"

भूख तो उनको भी लगी थी सो वे सब घर जाने के लिये तैयार हो गये। पर वे जैसे ही पहाड़ी के ऊपर चढ़ने लगे तो उन्होंने क्या देखा कि ऊपर से मछलियों, सूप और रोटी की नदी सी बहती चली आ रही है। और मालिक उन सबके आगे अपनी जान बचाने के ल्यि भागता आ रहा है।

वह चिल्लाता आ रहा था — "भागो अपनी जान बचा कर भागो। तुम लोग इस सूप में डूब मत जाना।"

वह सीधा अपने भाई के घर भागा गया क्योंकि उसको लग रहा था कि वह बुरी मशीन बस उसके पीछे ही थी और जा कर उससे बोला — "तुम इसको तुरन्त ही वापस ले लो। अगर इसने एक घंटा और यह सब बनाया तो ये मछलियॉ और सूप इस सारे गॉव को डुबो देंगीं।"

पर उसका गरीब भाई तो उसकी इस बात को सुन ही नहीं रहा था। वह उसको तब तक वापस लेने को तैयार नहीं था जब तक वह उसको तीन सौ डालर और नहीं दे देता।

अमीर भाई बेचारा मरता क्या न करता। उसने अपने गरीब भाई को तीन सौ डालर दिये तब कहीं जा कर उसके गरीब भाई ने अपने अमीर भाई से वह चक्की वापस ली।

यह सब लेने के बाद छोटे भाई ने अपने खेत पर एक बहुत ही शानदार मकान बनवाया – अपने भाई के मकान से भी ज़्यादा शानदार। फिर उसने उस चक्की से इतना सारा सोना बनवाया कि उस सोने से उसने अपना सारा मकान ढक लिया।

क्योंकि उसका खेत समुद्र के पास था तो उसका मकान भी समुद्र से खूब चमकता था। जो लोग उस समुद्र से हो कर जाते थे वे उस अमीर आदमी का घर और उसकी वह आश्चर्यजनक चक्की भी देखने आते थे।

इस सबसे वह चक्की अब दूर दूर तक मशहूर हो गयी थी। अब दुनियॉ में कोई ऐसा नहीं था जिसने उस चक्की के बारे में न सुना हो। लोग दूर दूर से उसे देखने के लिये आते थे।

एक दिन एक जहाज़ का कैप्टेन उधर आ निकला। वह भी उस चक्की को देखना चाहता था सो वह चक्की के मालिक के पास आया और उसने चक्की के मालिक से पूछा कि क्या उसकी चक्की नमक बना सकती थी।

चक्की का मालिक बोला — "हॉ हॉ क्यों नहीं। मुझे लगता है कि यह नमक जरूर बना सकती है। यह कुछ भी बना सकती है।"

कैप्टेन ने जब यह सुना तो वह तो बहुत खुश हो गया। वह सोचने लगा कि यह चक्की तो उसको किसी भी कीमत पर इस आदमी से ले लेनी चाहिये क्योंकि इससे उसकी नमक लाने के लिये जो वह इतनी लम्बी लम्बी समुद्र यात्राऐं करता है वह इन यात्राओं से बच जायेगा।

पहले तो वह आदमी उस चक्की को अपने से अलग नहीं करना चाहता था पर उस कैप्टेन ने उससे उस चक्की को उसे देने के लिये इतनी मिन्नतें कीं कि फिर उसको उसे चक्की देने के लिये राजी होना ही पड़ा। उसने उस चक्की के कई हजार डालर माँगे।

पैसे दे कर और चक्की अपनी कमर पर लाद कर वह कैप्टेन तुरन्त ही अपने जहाज़ पर आ गया ताकि कहीं वह आदमी अपना दिमाग न बदल ले और अपने जहाज़ पर आ कर उसने अपना जहाज़ खे दिया।। इस जल्दी में वह उससे यह भी नहीं पूछ सका कि उस चक्की को चलाते कैसे हैं।

जब वह कुछ दूर आ गया तब वह चक्की निकाल कर लाया ओर उसको जहाज़ के डैक पर रख दिया — "नमक बना, जल्दी और अच्छा।"

कैप्टेन के यह कहते ही चक्की ने नमक बनाना शुरू कर दिया। उसमें से थोड़ा सा नमक पानी में भी गिर पड़ा। जब कैप्टेन की जहाज़ नमक से भर गया तो कैप्टेन ने उसको रोकना चाहा।

रोकने के लिये उसने उसे कई तरह से घुमाया और भी कई तरकीबें इस्तेमाल कीं पर कुछ काम नहीं किया। वह उस चक्की को नमक बनाने से नहीं रोक सका।

नमक का ढेर ऊँचे से ऊँचा होता चला गया और उसके बोझ से उसका जहाज़ समुद्र में डूब गया। जहाज़ के साथ साथ वह चक्की भी समुद्र के पानी में डूब गयी और समुद्र की तली में जा कर बैठ गयी पर उसका नमक बनाना नहीं रुका।

वह वहाँ समुद्र की तली में पड़ी पड़ी आज भी नमक बना रही है। पर अब वह कैसे रुके, कोई उसको रोकने वाला ही नहीं है। जो था वह तो कभी का मर चुका और दूसरे लोग उसको रोकना जानते नहीं। इसी लिये आज समुद्र खारा है।

12 जंगली दुलहिन[59]

एक समय की बात है कि एक जगह एक आदमी रहता था। उसकी पत्नी मर गयी थी। उसके एक बेटा था और एक बेटी थी। उसके दोनों बच्चे बहुत ही अच्छे बच्चे थे और आपस में एक दूसरे को बहुत प्यार करते थे।

कुछ दिनों बाद आदमी ने एक विधवा से शादी कर ली। वह विधवा अपने साथ अपने पहले पति की एक बेटी साथ ले कर आयी थी जो बहुत बदसूरत थी और साथ में बुरी भी बहुत थी। जिस दिन से आदमी के घर यह नयी पत्नी आयी थी उसके घर में उसके अपने बच्चों के लिये कोई शान्ति नहीं थी।

लड़के ने सोचा कि वह दुनियॉ में बाहर निकले और अपनी रोटी अपने आप कमाये। सो वह घर से चला गया। जब वह कुछ समय इधर उधर घूम लिया तो वह एक राजा के महल के पास आ गया। वहॉ उसको एक कोचमैन के नीचे काम मिल गया।

वह चीज़ों को जानने और सीखने में बहुत होशियार था। जिन घोड़ों की देखभाल वह करता था वे घोड़े तो अब खूब चमकने लगे

---

[59] Bushy Bride – a folktale from Norway, Europe.
Taken from the Web Site : http://oaks.nvg.org/ntales4.html#badbride
Here bushy means who is covered by bush – in this story a pine bush grows on the forehead of the stepsister.
[My Note: this story is either the condensed form of some bigger story, or ill-written, because it lacks coherency.]

थे। पर लड़की जो घर में रह गयी थी उसके साथ तो बुरे से भी ज़्यादा बुरा व्यवहार होता था।

उसकी सौतेली मॉ और बहिन दोनों ही उसके पीछे पड़ी रहती थीं। जो कुछ भी वह करती या जहॉ कहीं भी वह जाती वे उसे उसके ऊपर डॉटतीं और बुरा भला कहतीं। सो उस लड़की को एक घंटे के लिये भी कहीं शान्ति नहीं थी।

घर का सारा मेहनत वाला काम उसी को करना पड़ता। और चाहे सुबह हो या शाम उसको क्या मिलता – बुरे शब्द और बहुत ही थोड़ा सा खाना।

एक दिन उन्होंने लड़की को पानी भरने के लिये भेजा। तुम क्या सोचते हो कि वहॉ क्या हुआ होगा। तालाब में से एक बदसूरत सा सिर निकला और बोला — "ओ लड़की । ज़रा मुझे साफ कर।"

लड़की बोली — "हॉ मैं अभी करती हूँ।" कह कर उसने उस सिर को मलना और धोना शुरू कर दिया। पर सच तो यह था कि वह उसको एक बहुत ही गन्दा काम समझ रही थी।

जैसे ही उसने यह सिर साफ किया तो पानी में से एक दूसरा सिर निकल आया। यह सिर पहले वाले सिर से ज़्यादा बदसूरत था। यह सिर बोला — "मेरे बालों में कंघी कर ओ लड़की।"

लड़की बोली — "हॉ मैं अभी तुम्हारी कंघी करती हूँ।"

कह कर उसने उसके उलझे हुए बाल अपने हाथ में लिये तो तुम सोच सकते हो कि उसके लिये यह काम भी कोई आनन्ददायक काम नहीं था।

अभी वह यह काम खत्म कर के चुकी थी कि अगर एक तीसरा सिर तालाब में से ऊपर नहीं झॉकता तो उस दिन के लिये उसके लिये इतना गन्दा काम काफी था।

तीसरा सिर ऊपर उठ कर बोला — "मुझे चूम ओ लड़की।"

उफ़ यह सिर तो पिछले दोनों सिरों की बदसूरतियों को मिला कर उनसे भी ज़्यादा भद्दा था। लड़की बोली — "हॉ मैं अभी चूमती हूँ।" और उसने ऐसा किया। वह सोचती थी कि शायद इतना गन्दा काम उसने अपनी ज़िन्दगी में पहले कभी नहीं किया।

इसके बाद वे तीनों सिर आपस में बात करने लगे। वे बात कर रहे थे कि वे उस लड़की को उसकी इन मेहरबानियों के बदले में क्या दे सकते थे।

पहला सिर बोला — "कि यह लड़की दुनियॉ भर में सबसे सुन्दर लड़की बन जाये – इतनी उजली इतनी चमकीली जैसे खिला हुआ दिन।"

दूसरा सिर बोला — "कि जब भी यह कंघी करे तो इसके सिर से सोना टपके।"

तीसरा सिर बोला — "कि जब भी यह बोले तो इसके मुँह से सोना गिरे।"

और फिर ऐसा ही हुआ। जब लड़की पानी ले कर घर आयी तो वह तो बहुत सुन्दर लग रही थी। वह तो इतनी चमक रही थी जैसे दिन खुद।

उसको देख कर तो उसकी सौतेली मॉ और बहिन दोनों ही उससे बहुत जलने लगे। उनका इस लड़की के साथ व्यवहार और भी खराब हो गया जब उन्होंने देखा कि जब भी वह बोलती है तो उसके मुॅह से सोना गिरता है।

जहॉ तक सौतेली मॉ का सवाल था वह तो यह देख कर इतनी पागल हो गयी कि उसने लड़की को सूअरों के रहने के घर में भेज दिया। उसने सोचा कि ऐसी लड़की के लिये वही जगह ठीक रहेगी। पर उसके घर के अन्दर आने के बारे में वह कुछ सुनना नहीं चाहती थी।

उसकी जलन ने सौतेली मॉ को यह सोचने पर मजबूर कर दिया कि वह भी अपनी बेटी को उस तालाब पर पानी भरने के लिये भेजे ताकि वह भी उसकी सौतेली बेटी जैसी हो जाये।

सो अगले दिन उसने अपनी बेटी को उसी तालाब पर पानी भरने भेजा। जब वह तालाब पर पानी भरने गयी तो पानी में से एक सिर निकला और बोला — "मुझे साफ करो ओ लड़की।"

लड़की बोली — "तुम्हें तो शैतान साफ करेगा।"

तभी दूसरा सिर ऊपर आया और बोला — "मेरे सिर में कंघी करो ओ लड़की।"

लड़की ने फिर वही कहा — "तुम्हारी कंघी तो शैतान करेगा।" यह सुन कर वह सिर तालाब की तली में चला गया।

तभी तीसरा सिर पानी के ऊपर आया और बोला — "मुझे चूम लो ओ लड़की।"

लड़की बोली — "तुम्हें तो शैतान चूमेगा ओ सूअर के मुँह।"

तब तीनों सिरों ने मिल कर आपस में बात की कि इस लड़की को इसके इस व्यवहार के लिये हम इसे क्या सजा दें।

सो सब सिर इस बात पर राजी हो गये "कि इसकी नाक चार ऐल[60] लम्बी होनी चाहिये। और इसका मुँह तीन ऐल लम्बा होना चाहिये। और इसके माथे के बीच पाइन की एक झाड़ी होनी चाहिये। और जब भी यह बोले तो इसके मुँह से राख गिरनी चाहिये।"

लड़की जब अपनी पानी की बालटियॉ ले कर घर पहुँची तो चिल्ला कर बोली — "दरवाजा खोलो।"

मॉ बोली — "अपने आप खोल लो।"

बेटी बोली — "मॉ मैं अपनी नाक की वजह से दरवाजा अपने आप नहीं खोल सकती।"

सो उसकी मॉ उसके लिये दरवाजा खोलने के लिये आयी तो उसने देखा कि उसकी बेटी की हालत क्या हो गयी है। वह कितना

[60] Ell is a measure to measure length. 1 Ell = 18", so 3 Ells = 54", 4 Ells = 72"

चिल्लायी कितना रोयी। वह उसकी नाक सूअर का सा मुँह और पाइन की झाड़ी ही देखती ही रही।

अब हम इस लड़की के भाई के पास चलते हैं। जैसा कि तुमको याद होगा कि उसको राजा की घुड़साल में काम मिल गया था। वह अपने साथ अपनी बहिन की एक छोटी सी तस्वीर भी साथ ले गया था।

वह रोज उसके सामने सुबह शाम घुटने टेक कर बैठ जाता और भगवान से अपनी बहिन के अच्छे के लिये प्रार्थना करता रहता जिसको कि वह इतना प्यार करता था।

दूसरे नौजवानों ने उसको प्रार्थना करते सुना तो उन्होंने दरवाजे की चाभी के छेद से अन्दर झाँक कर देखने की कोशिश की तो उन्होंने देखा कि वह एक तस्वीर के सामने बैठा प्रार्थना कर रहा है।

तो उन्होंने सब जगह जा कर यह कह दिया कि वह लड़का एक मूर्ति की पूजा करता है। आखिर यह बात उन्होंने राजा से भी कही कि वह एक बार उस चाभी के छेद से झाँक कर देख लें।

पहले तो हिज़ मैजेस्टी को विश्वास नहीं हुआ पर जब वे वहाँ आये तो उन्होंने भी वही देखा जो उन्हें बताया गया था – नौजवान एक तस्वीर के सामने घुटनों के बल बैठा प्रार्थना कर रहा था।

राजा ने आवाज लगायी "दरवाजा खोलो।" पर नौजवान ने सुना ही नहीं। राजा ने फिर से पर और ज़्यादा ज़ोर से आवाज

लगायी पर फिर भी नौजवान अपनी पूजा में इतन मग्न था कि उसकी आवाज ही नहीं सुन सका।

तब राजा बहुत ज़ोर से चीख कर बोला — "दरवाजा खोलो। यह मैं हूँ जो अन्दर आना चाहता हूँ।"

यह सुनते ही लड़का तुरन्त ही उठा और दरवाजे की तरफ भागा और दरवाजा खोला। इस जल्दबाजी में वह अपनी बहिन की तस्वीर छिपाना भूल गया।

सो जब राजा अन्दर आया और उसने देखा तो वह तो वहीं का वहीं खड़ा रह गया। वह तो अपनी जगह से हिल भी नहीं सका। वह कितनी सुन्दर तस्वीर थी।

नौजवान बोला — "यह मेरी बहिन की तस्वीर है।"

राजा बोला — "अगर यह इतनी सुन्दर है तो मैं इसे अपनी रानी बनाना चाहूँगा।"

उसने तुरन्त ही लड़के को हुक्म दिया कि वह घर जाये और अपनी बहिन को ले कर आये। लड़का भी वहाँ से अपने घर के लिये तुरन्त ही चल दिया।

जब वह अपनी बहिन को लेने के लिये घर आया तो उसकी सौतेली माँ और सौतेली बहिन दोनों ने कहा कि वे भी उसके साथ ही चलेंगी। सो वे सब एक साथ राजा के महल चल दिये।

उसकी बहिन के पास एक सन्दूकची थी जिसमें उसका सोना रखा हुआ था। उसके पास एक छोटा सा कुत्ता भी था जिसका नाम

था "लिटिल फ्लो"। केवल ये ही दो चीज़ें थीं जो उसकी मॉ उसके लिये छोड़ गयी थी।

कुछ देर चलने के बाद एक बहुत बड़ी झील पड़ी जिसको उन्हें पार कर के जाना था। सो भाई तो नाव के किनारे पर बैठ गया और मॉ और दोनों बहिनें नाव के कोने पर बैठ गयीं। वे लोग काफी दूर तक नाव खेते रहे। आखिर उन्हें जमीन का किनारा दिखायी दे ही गया।

भाई ने एक तरफ को इशारा कर के कहा — "देखो तुम लोग वह देख रहो हो न। वही राजा का महल है।"

लड़की ने पूछा — "यह मेरा भाई क्या कह रहा है।"

सौतेली मॉ बोली – "यह कह रहा है कि अब तुम अपना यह छोता कुत्ता पानी में फेंक दो।"

यह सुन कर लड़की बहुत रोयी क्योंकि लिटिल फ्लो से उसे दुनियॉ में सबसे ज़्यादा प्यार था। पर क्योंकि उसका भाई उसे फेंकने के लिये कह रहा था सो उसने उसे पानी में फेंक दिया। उसे फैंकते हुए वह बोली "मैं अपने भाई के कहने से यह कर रही हूॅ नहीं तो मैं ही जानती हूॅ कि मुझे तुम्हें फेंकते हुए कितना दुख हो रहा है।"

उसके बाद वे कुछ दूर और अपनी नाव खेते रहे। तब भाई ने कहा — "देखो वह हमारे राजा हमसे मिलने आ रहे हैं।"

लड़की ने फिर पूछा — "यह मेरा भाई क्या कह रहा है।"

सौतेली मॉ बोली — "वह यह कह रहा है कि जल्दी करो और तुम अपने आपको भी पानी में फेंक दो।"

यह सुन कर लड़की बहुत रोयी पर जब उसके भाई ने उससे यह करने के लिये कहा था उसने सोचा कि यह तो उसको करना ही चाहिये सो वह झील में कूद गयी।

जब वे लोग महल आये और राजा ने उस भयानक लड़की को देखा जिसकी नाक चार ऐल लम्बी थी और उसका मुँह तीन ऐल लम्बा था और पाइन की एक झाड़ी उसके माथे के बीचोबीच उगी हुई थी वह तो उसे देख कर बहुत डर गया।

पर शादी की तैयारियॉ तो ज़ोर शोर पर थीं। शादी के लिये बहुत सारे मेहमान जुड़े हुए थे। राजा कुछ नहीं कर सका और उसे अपने अच्छे या बुरे के लिये उसी से शादी करनी पड़ी। मगर वह नाराज बहुत था। इस समय वह किसी को भी माफ नहीं कर सकता था। राजा ने लड़के को सॉपों से भरे हुए एक गड्ढे में फिंकवा दिया।[61]

शादी के बाद के गुरूवार की शाम को आधी रात के समय खेतों पर बने उस मकान में एक बहुत सुन्दर लड़की आयी और

[61] [My Note: It is very strange here that the brother did not know where his sister was, or did not ask his stepmother that where his sister was. There is no mention of his sister for whom he went home here. This seems so illogical – or maybe this is a short version of the original story so the author has missed that part.]

उसके रसोईघर में काम करने वाली एक नौकरानी से जो वहीं सो रही थी एक कंघी माँगी।

नौकरानी ने उसको एक कंघी दे दी। जैसे ही उसने अपने बालों में कंघी की तो सोने के कुछ टुकड़े उसके बालों में से नीचे गिर गये। एक छोटा कुत्ता उसके पैरों के पास था सो उसने कुत्ते से कहा — "ओ लिटिल फ्लो। जा जल्दी से भाग और देख कि सुबह होने में कितनी देर है।"

यह उसने उससे तीन बार कहा और तीसरी बार उसने कुत्ते को बाहर भेज दिया तभी सुबह हो गयी। तभी उसको जाना था पर जब वह वहाँ से गयी तो उसने गाया —

ओ बदसूरत जंगली दुलहिन तू तो राजा के बाँयी तरफ आराम से लेटी है
जबकि मैं रेत और कंकडों पर सोती हूँ मेरे भाई के ऊपर साँप रेंगते है
और यह सब बिना एक आँसू बहाये हुए

फिर वह बोली — "अब मैं यहाँ दो बार और आऊँगी फिर नहीं आऊँगी।

सो अगले दिन रसोईघर की नौकरानी ने जो कुछ देखा था और जो कुछ सुना था वह राजा को बताया तो राजा ने कहा कि वह उसे खुद देखना चाहेगा कि वह सब सच था या नहीं।

सो अगले गुरुवार को आधी रात के समय वह रसोईघर में गया पर उसे तो नींद इतनी आ रही थी कि वह सिवाय आँखें मलने के

और कुछ कर ही नहीं सका। क्योंकि उस जंगली दुलहिन ने एक गीत गाया जिससे वह जल्दी ही सो गया।

सो जब वह सुन्दर लड़की वहॉ आयी तो वह तो वहॉ खर्राटे मार कर सो रहा था।

पहले की तरह से उस लड़की ने फिर से उस नौकरानी से कंघी मॉगी और अपने बालों में कंघी की तो उसमें से फिर से सोना गिर पड़ा। उसने फिर से तीन बार अपने कुत्ते से वही कहा जो पहले कहा था।

जैसे ही सुबह का धुँधलका छॅटा तो वह लड़की वहॉ से चली गयी और जाते जाते कह गयी कि वह बस अब एक बार और आयेगी फिर कभी नहीं आयेगी।

तीसरे गुरुवार को राजा फिर आया। अबकी बार उसने दो आदमी अपने आपको पकड़े रखने के लिये लगा रखे थे। उसकी दोनों बॉहों के नीचे एक एक आदमी था ताकि वह जब भी सोने लगे तो वे उसे जगा दें। और दो आदमी उसने अपनी जंगली पत्नी के ऊपर तैनात कर रखे थे।

पर जब रात हो गयी तो जंगली दुलहिन ने फिर से गाना शुरू कर दिया इससे उसकी ऑखें फिर से झपकने लगीं। उसका सिर उसके कन्धों पर गिरने लगा। कि तभी वह सुन्दर लड़की फिर से वहॉ आयी उसने फिर से कंघी मॉगी और अपने बालों में कंघी की जब तक उनमें से सोना नहीं गिरने लगा।

उसके बाद उसने अपने कुत्ते लिटिल फ्लो को यह देखने के लिये भेजा कि बाहर दिन निकल आया या नहीं। ऐसा उसने तीन बार किया। तीसरी बार पूर्व में थोड़ा धुँधलका हटा तो उसने गाया —

ओ बदसूरत जंगली दुलहिन तू यहाँ से जा तू जो राजा के पास आराम से लेटी है
जबकि मैं रेत और कंकडों पर सोती हूँ मेरे भाई के ऊपर साँप रेंगते है
और यह सब बिना एक आँसू बहाये हुए

उसके बाद वह बोली "अब मैं यहाँ कभी नहीं आऊँगी।"

यह कह कर वह दरवाजे की तरफ बढ़ी पर उन दो आदमियों ने जो राजा को सँभाले हुए खड़े थे राजा के हाथ में चाकू पकड़ा दिया और किसी तरह उससे उस स्त्री की छोटी उँगली में चुभो दिया जिससे खून निकल आया। इससे असली दुलहिन आजाद हो गयी। राजा जाग गया।

तब लड़की ने जो राजा के यहाँ काम करने वाले नौजवान की बहिन थी राजा को अपनी सारी कहानी बतायी और बताया कि किस तरह उसकी सौतेली माँ और बहिन ने उसे धोखा दिया।

राजा ने तुरन्त ही नौजवान को साँपों वाले गड्ढे में से निकलवा लिया। खुशकिस्मती से साँपों ने उसको किसी तरह का कोई नुकसान नहीं पहुँचाया था। इसके बाद सौतेली माँ और सौतेली बहिन को उसी गड्ढे में डलवा दिया गया।

अब राजा इतना खुश था कि बस कुछ कहने की बात नहीं कि उसने किस तरह से उस जंगली दुलहिन से छुटकारा पा लिया था और उसे अब कितनी सुन्दर दुलहिन मिल गयी थी।

उसके बाद राजा की शादी उस सुन्दर लड़की से हो गयी। इस शादी का चर्चा सातों राज्यों में बहुत दिनों तक होती रही। राजा अपनी गाड़ी में चर्च गया। साथ में लिटिल फ्लो भी उनके साथ गया। शादी की रस्म के बाद वे अपने घर चले गये और फिर उनके बारे में कभी कहीं नहीं सुना गया।

13 भेड़ा और सूअर...[62]

एक बार की बात है एक भेड़ा था जिसे मारने के लिये बहुत मोटा किया जा रहा था। क्योंकि उसके पास खाने के लिये बहुत मॉस था जिसको खा कर उसके ऊपर बहुत सारा मॉस चढ़ जाता।

एक दिन एक दूध वाली आयी तो उसने उसे और खाना दिया और बोली — "ओ भेड़े यह सब तो तुम्हें आज खाना ही पड़ेगा। तुम यहॉ बहुत समय तक नहीं रहोगे क्योंकि कल हम तुम्हें काटने जा रहे हैं।"

भेड़े ने अपने मन में सोचा "यह एक पुरानी कहावत है कि किसी बुढ़िया की सलाह का मजाक नहीं बनाना चाहिये। और वह सलाह सिवाय मौत के किसी भी चीज़ के लिये हो सकती है। पर हो सकता है कि आज मैं इससे बच कर भाग सकता हूँ।"

ऐसा सोचते हुए उसने उसे खाना शुरू कर दिया। उसने तब तक खाया जब तक उसका पेट बहुत नहीं भर गया। जब उसका पेट बहुत भर गया तब उसने अपने सींग दरवाजे में मारे दरवाजा खोला और पड़ोस के खेत की तरफ भाग गया।

---

[62] The Ram and the Pig Who Went into the Woods to Live by Themselves. By Peter Chr Asbjørnsen. From His Book "Fairy Tales from the Far North". 1897. From the Web Site : https://archive.org/details/fairytalesfromfa00asbj/page/n10/mode/1up
Ram is the male sheep.

वहॉ जा कर वह सूअरों के घर की तरफ भाग गया जहॉ उसने एक सूअर से दोस्ती कर रखी थी। वे लोग काफी दिनों से दोस्त थे और उनकी खूब बनती भी थी।

भेड़ा वहॉ पहुँच कर बोला — "सूअर भाई धन्यवाद। जबसे हम पहले मिले थे।"

सूअर बोला — "तुमको भी धन्यवाद भेंसे भाई।"

भेड़ा बोला — "क्या तुम्हें मालूम है कि वे तुम्हें इतने आराम से क्यों रखते हैं।"

नहीं मुझे तो नहीं मालूम।"

"क्योंकि इस खेत पर खाने वाले कई हैं तो वे तुम्हें मारने वाले हैं और खाने वाले हैं।"

सूअर ने पूछा — "क्या वे ऐसा ही करेंगे? भगवान उनका भला करे।"

भेड़ा बोला — "अगर तुम वही सोच रहे हो जो मैं सोच रहा हूँ तो चलो जंगल भाग चलते हैं वहीं जा कर अपना एक घर बनायेंगे और वहॉ अकेले रहेंगे। अपने बनाये घर से ज़्यादा अच्छा कुछ नहीं।"

सूअर ने हॉ कर दी दोनों राजी हो गये। सूअर बोला — "अच्छे साथ में रहना तो बहुत ही अच्छा है।" और वे वहॉ से चल दिये।

वे आगे बढ़े तो उन्हें एक बतख मिली। बतख बोली — "गुड डे साथियो। और पिछली बार जब हम मिले थे तबकी मेहरबानियों के लिये बहुत बहुत धन्यवाद।"

भेड़ा बोला — "गुड डे और तुमको भी धन्यवाद। हम लोग अपनी जगह पर कुछ ज़रा ज़्यादा ही आराम से थे सो अब हम लोग जंगल में अकेले रहने जा रहे हैं। यह तो तुम्हें मालूम ही है कि अपने घर में आदमी अपना मालिक खुद ही होता है।"

बतख बोली — "मैं तो आजकल जहॉ रह रही हूॅ बड़े आराम से रह रही हूॅ। पर फिर भी मैं तुम्हारे साथ क्यों न चलूॅ। साथ अच्छा हो तो दिन जल्दी बीत जाता है।"

सूअर बोला — "पर खाली उड़ने और क्वैक क्वैक बोलने से न ही घर बनता है न ही झोंपड़ी। तुम क्या सोचती हो कि तुम क्या कर सकती हो।"

"अच्छी सलाह और होशियारी भी उतना ही काम करती है जितना कि कोई राक्षस काम करता है। मैं मौस घास तोड़ कर उसे झिरियों में ठूॅस सकती हूॅ।"

सूअर ने सोचा तब तो यह बतख हमारे साथ चल सकती है क्योंकि उसको गर्म घर पसन्द था। बतख उनके साथ साथ नहीं चल पा रही थी। वह थोड़ा धीमे चल रही थी।

जब वे कुछ दूर चल लिये तो कहीं से बड़ा खरगोश धम धम करता वहॉ आ पहुॅचा।

वह बोला — "गुड डे लोगों। तुम लोगों की मेहरबानियों के लिये धन्यवाद जब हम आखिरी बार मिले थे। तुम लोग आज कितनी दूर तक जा रहे हो।"

भेड़ा बोला — "तुमको भी गुड डे और धन्यवाद। हम लोग अपनी अपनी जगह बहुत आराम से रह रहे थे पर अब हम जंगल में अपना एक घर बनाने और उसमें अकेले रहने जा रहे हैं। जब तुमने दुनियॉ देख ली हो तो तुमको पता चलेगा कि अपना घर तो अपना घर ही होता है और वही सबसे अच्छा होता है।"

बड़ा खरगोश बोला — "हालॉकि हर झाड़ी मेरा घर है पर जाड़ों में मैंने अक्सर सोचा है कि अगर मैं गर्मियों तक ज़िन्दा रहा तो मैं अपना घर जरूर बनाऊॅगा। सो मैं तुम लोगों के साथ चलूॅगा और एक घर बनाऊॅगा।"

सूअर बोला — "अगर हमारे साथ कुछ बुरा हुआ तो हम तुहें कुत्तों को डराने के लिये काम में तो ला ही सकते हैं। यह हमें मालूम है कि तुम हमारी घर बनाने में तो कोई सहायता कर नहीं सकते।"

बड़ा खरगोश बोला — "जिनको काम करने की इच्छा होती है उनके लिये इस दुनियॉ में कुछ न कुछ करने के लिये जरूर होता है।

मेरे दॉत इतने तेज़ है कि मैं तुम लोगों के लिये लकड़ी के डंडे काट सकता हूॅ। दीवार पर मारने के लिये मेरे पंजे बहुत अच्छे हैं। मैं बढ़ईगीरी का काम अच्छी तरह कर सकता हूॅ। जैसा कि आदमी

लोग जब वे अपनी घोड़ी की खाल साफ करते हैं तो कहते हैं कि अच्छे औजार अच्छा काम करते हैं।"

सूअर ने सोचा "यह हमारे साथ आ सकता है और हमारा घर बनाने में हमारी सहायता कर सकता है। इसमें कोई नुकसान नहीं है।"

इसके बाद वे सब थोड़ा और आगे चले तो उनको एक मुर्गा मिला। मुर्गा बोला — "गुड डे लोगों। तुम लोगों की मेहरबानियों को लिये धन्यवाद जब हम आखिरी बार मिले थे। तुम सब लोग आज कहॉ जा रहे हो।"

भेड़ा बोला — "तुमको भी गुड डे और धन्यवाद। हम लोग अपनी अपनी जगह बहुत आराम से रह रहे थे पर अब हम जंगल में अपना एक घर बनाने और उसमें अकेले रहने जा रहे हैं। क्योंकि अगर तुम घर में खाना न बनाओ तो आग और केक दोनों ही खो देते हो।"

मुर्गा बोला — "मैं अपनी जगह जहॉ भी मैं इस समय हूॅ वहॉ बहुत अच्छे से रह रहा हूॅ पर दूसरे के घर में रहने से तो अपने घर में रहना बहुत अच्छा है। और फिर मुझे तुम जैसों का साथ मिल जाये तब तो बहुत ही अच्छा है। मैं भी तुम लोगों के साथ जंगल जा कर घर बनाना चाहूॅगा।"

सूअर बोला — "पंख फड़फड़ाना और बॉग देना शोर मचाने के लिये तो ठीक है पर इससे छत के तख्ते तो नहीं कट सकते न। तुम मकान बनाने में हमारी कोई सहायता नहीं कर सकते।"

इस पर मुर्गा बोला — "ऐसे घर में रहना ठीक नहीं है जिसमें न तो कोई कुत्ता हो और न कोई मुर्गा। मैं जल्दी उठता हूँ और जल्दी ही बॉग देता हूँ।"

क्योंकि सूअर तो हमेशा से ही बहुत सोने वाला था। सूअर बोला — "जल्दी उठना किसी को भी तन्दुरुस्त अमीर और अक्लमन्द बनाता है सो तुम हमारे साथ आ सकते हो। सोना तो बहुत बड़ा चोर है। वह किसी की भी ज़िन्दगी का आधा हिस्सा चुरा लेता है।"

सो वे सब जंगल की तरफ चल दिये और वहॉ जा कर घर बनाया। सूअर ने पेड़ गिराये और भेड़ा घसीट घसीट कर उनको घर बनाने की जगह तक ले कर आया। बड़े खरगोश ने बढ़ई का काम किया। उसने खूँटियॉ काटीं और उनको दीवार में लगाया।

बतख मौस की घास ले कर आयी और उसे लट्ठों के बीच की झिरियों में भरा। और मुर्गा जब तब बॉग दे दे कर सबको जगाये रखता था ताकि कोई ज़्यादा न सो जाये।

जब मकान बन गया तो बिर्च के पेड़ की छाल से उस पर छत डाल दी गयी और घास फूस से उसे ढक दिया गया। अब वे लोग वहॉ अपने आपसे रह सकते थे। सब उसमें खुश और सन्तुष्ट थे।

भेड़ा बोला — "यह तो सच है कि पूर्व घूम आओ या पश्चिम घूम आओ पर जो आराम अपने घर में है वह कहीं नहीं है।"

उसी जंगल में कुछ दूरी पर दो भेड़िये रहते थे। उन्होंने जब यह देखा कि उनके पड़ोस में एक नया घर बना है तो उनके दिल में यह इच्छा पैदा हुई कि वे यह जानें कि उनके पड़ोसी किस तरह के लोग थे।

उनका सोचना था कि एक अच्छा पड़ोसी दूर रहते हुए भाई से ज़्यादा अच्छा होता है। इसके अलावा एक अच्छे पड़ोसी के साथ रहना ज़्यादा अच्छा है बजाय दूर तक अपना नाम फैलाने के।

सो उनमें से एक ने सोचा कि वह उनसे अपने पाइप के लिये आग माँग कर उनसे जान पहचान बढ़ायेगा।

जैसे ही वह घर के दरवाजे से अन्दर घुसा तो भेड़ा उसके ऊपर दौड़ा और अपने सींगों से एक ऐसा धक्का मारा कि भेड़िया अँगीठी में जा कर गिरा। सूअर ने उसको मारा और काटा। बतख ने भी उसको अपनी चोंच मारी। मुर्गा ऊपर चढ़ कर बैठ गया और ज़ोर ज़ोर से बोलने लगा।

पर खरगोश तो उसे देख कर इतना डर गया कि वह तो इधर उधर कूदने लगा। कभी वह ऊँचा कूद जाता तो कभी नीचा। एक कोने से दूसरे कोने में छिपने लगा।

किसी तरह से भेड़िया उनके घर से बाहर निकलने में सफल हुआ। भेड़िया जो घर के बाहर खड़ा दूसरे भेड़िये का इन्तजार कर रहा था बोला — "अपने पड़ोसी को जानना तो अपनी अक्लमन्दी बढ़ाना है। मुझे लगता है कि तुम्हारा वहॉ खासा शानदार स्वागत हुआ है क्योंकि तुम तो वहॉ काफी देर रुक कर आ रहे हो। पर आग का क्या हुआ। मुझे तो न तुम्हारा पाइप दिखायी दे रहा है और न कोई धुऑ ही।"

दूसरा भेड़िया बोला — "मुझे तो वहॉ बहुत अच्छी आग मिली और वे लोग भी कितने अच्छे थे। मैंने इससे पहले ऐसा स्वागत कभी नहीं देखा। जब तुम अपना बिस्तर बिछाते हो तो तुम्हें उस पर लेटना ही चाहिये और जो अचानक आने वाला मेहमान होता है उसको उसी से सन्तुष्ट होना चाहिये जो उसे मिल जाये।

जैसे ही मैं अन्दर पहुॅचा जूता बनाने वाले ने मेरे ऊपर अपना आखिरी जूता फेंका और मैं एक भट्टी में जा कर पड़ा। वहॉ दो लोहार बैठे थे जो आग जलाने के लिये धौंकनी चला रहे थे और साथ में चिमटे से मेरा मॉस भी नोचते जा रहे थे।

एक शिकारी अपनी बन्दूक ढूॅढने के लिये इधर उधर घूम रहा था पर मेरी खुशकिस्मती से वह उसे मिली नहीं। और ऊपर छत पर कोई बैठा बैठा हाथ मल रहा था और चिल्ला रहा था "इसे पकड़ लो। इसे पकड़ लो। इसे ऊपर टॉग दो इसे ऊपर टॉग दो।

अगर कहीं उसने मुझे पकड़ लिया होता तो मैं तो कभी वहॉ से वापस आ ही नहीं पाता।"

List of Stories of “Folktales of Norway”

1. Katie Woodencloak
2. How Bear Lost Hs Tail
3. The Boy and the North Wind
4. Gertrude Bird
5. Gertrude's Bird
6. The Goats in the Garden
7. Three Billy Goats Gruff
8. Twelve Wild Ducks
9. The Two Stepsisters
10. The Master Thief
11. Why the Sea is Salt
12. Bushy Bride
13. The Ram and the Pig…

List of Stories of "Folktales of Norse"

1. Katie Woodencloak
2. How Bear Lost Hs Tail
3. The Boy and the North Wind
4. Gertrude Bird
5. Gertrude's Bird
6. The Goats in the Garden
7. Three Billy Goats Gruff
8. Twelve Wild Ducks
9. The Two Stepsisters
10. The Master Thief
11. Why the Sea is Salt
12. Bushy Bride
13. The Ram and the Pig…

Some More Books on Norse Folktales and Mythology in Hindi by Sushma Gupta

1. Norse – Myths
2. Folktales of Denmark
3. Folktales of Sweden

Norwegian Tales in English Translation

1874 **Tales from the Fjeld: A Second Series of Popular Tales.**
By Asbjørnsen. Peter Chr. Tr. Sir George Dasent.
London: Chapman and Hall. 1874.

1893 **Folk and Fairy Tales**. By Asbjørnsen, Peter Chr. Tr. Hans Lien Brækstad.
7th ed. New York: A. C. Armstrong & Son. 1893.

1897 **Fairy Tales from the Far North.** By Asbjørnsen, Peter Chr.
Tr. Hans Lien Brækstad. New York: A. L. Burt Company. 1897.

1903 **Popular Tales from the Norse. New ed.**
By Asbjørnsen, Peter Chr., and Jørgen Moe.
Tr. Dasent, Sir George Webbe. Edinburgh and London: David Douglas.
1903.

1912 **Popular Tales From The Norse.**
By Peter Chr., and Jørgen Moe. Tr. Sir George Webbe Dasent. New ed.
Edinburgh: David Douglas. 1912.

1921 **East o' the Sun and West o' the Moon.**
By Asbjørnsen, Peter Chr., and Jørgen Engebretsen Moe.
Tr. Sir George Webbe Dasent.Philadelphia: David McKay. 1921.

1922 **The Norwegian Fairy Book.** Ed: Stroebe, Klara. Tr. Frederick H. Martens.
New York: Frederick A. Stokes. 1922.

1968 **Folktales of Norway.** By Christiansen, Reidar Th.,
ed. Tr. Pat Shaw Iversen. Foreword by Richard M. Dorson.
London: The University of Chicago Press. 1968.

1982 **Norwegian Folk Tales: From the Collection of Peter Christen Asbjørnsen and Jørgen Moe (The Pantheon Fairy Tale and Folklore Library).**
Asbjørnsen, Peter Chr., and Jørgen Moe. 1982. Paperback ed.
Tr. Pat Shaw Iversen and Carl Norman. New York: Pantheon Books.
Here are 35 folk tales - around one third of Asbjørnsen and Moe's fairy tales.

1988 **Scandinavian Folk Belief and Legend.** Eds: Reimund, and Henning K. Sehmsdorf. Minneapolis: University of Minnesota Press. 1988.

See this page for more Norwegian sources of Norwegian folktales
http://oaks.nvg.org/norwegian-tales-intro.html

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस कड़ी में 100 से भी अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं। पुस्तक सूची की पूरी जानकारी के लिये लिखें — hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। उसके बाद **1976** में भारत से नाइजीरिया पहुँच कर यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस कर के एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया। उसके बाद इथियोपिया की एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो की नेशनल यूनिवर्सिटी में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला।

तत्पश्चात **1995** में यू ऐस ए से फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स कर के **4** साल एक ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में सेवा निवृत्ति के पश्चात अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
2022